बी.टी. इंस्टीटयूट ऑफ एक्सीलेन्स,सागर म.प्र.

वर्ष 2024
वार्षिक पत्रिका

स्पंदन

BTIE Courses

B.A. B.Ed., B.Ed.

B.Sc. / B.C.A. /

B.A. / B.Com./

M.A./ M.Com.

- Forensic Science
- Biotechnology
- Microbiology
- Chemistry
- Zoology Botany
- Computer Application
- Physics, Mathematics
- Criminology
- Political Science
- Sociology
- History
- Economics
- Geography
- Hindi Literature
- Psychology
- Computer Application
- Economics

बी.टी. इंस्टीटयूट ऑफ एक्सीलेन्स,सागर म.प्र.

वर्ष 2024
वार्षिक पत्रिका

स्पंदन

परामर्शदाता
डॉ. राजू टण्डन, प्राचार्य

संपादक
डॉ. आकृति कनोजिया

संपादक मण्डल
डॉ. सुरेश कोरी, अंजली दुबे
फरहीन खान, वैभव नामदेव

मुख पृष्ठ
असरार भाई 'रंग के साथी' समूह
सागर

***

पत्रिका में लेख, आलेख एवं कवितायें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा रचित अथवा संकलित की गई हैं जिनकी मौलिकता हेतु वे स्वतः जिम्मेंदार हैं।
संपादक मण्डल एवं महाविद्यालय परिवार इस हेतु जिम्मेवार नहीं है। कृपया सहर्ष अपनायें।

***

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
01.	सागर के तीनबत्ती पर................	01
02.	महात्मा गांधी के विचारों.............	09
03.	सरदार वल्लभ भाई पटेल............	11
04.	शहीद भगत सिंह.....................	13
05.	विज्ञान के शिखर	15
06.	युवाओं में बढ़ता मानसिक तनाव....	17
07.	श्वेत पोश अपराध....................	22
08.	नई शिक्षा नीति.......................	25
09.	संशय/दुविधा लक्ष्य..................	27
10.	पृथ्वी की हरियाली....................	28
11.	रूक जाना नहीं.......................	29
12.	ग्रामीण बालिकाओं की................	29
13.	बदलता सामाजिक परिदृश्य.........	30
14.	नई पीढ़ी में लुप्त होता धैर्य.........	31
15.	श्रम का फल..........................	32
16.	निकोटीन, कैफीन....................	33
17.	भौतिकी का समाज..................	34
18.	ठोकर अच्छी है.......................	35
19.	समय का प्रबंधन......................	36
20.	बापू....................................	37
21.	समंदर.................................	37
22.	बेटियाँ..................................	38
23.	हम लड़कियाँ..........................	39
24.	भीड़ नहीं बनना है मुझे..............	39
25.	जीवन एक संघर्ष......................	39
26.	क्या कहता है हमारा.................	40
27.	रोशनी के लिए.......................	41
28.	महत्व..................................	41
29.	मित्रता..................................	41
30.	दोहरे गणित...........................	41
31.	अलगाव................................	41
32.	आत्मकथा.............................	42
33.	कोई अर्थ नहीं.........................	42
34.	एक लड़की विपदा नाम की.........	43
35.	कविता.................................	44
36.	सुविचार................................	44
37.	सुविचार................................	45
38.	हम भारत की शान....................	45
39.	माँ......................................	46
40.	समय..................................	46
41.	वातावरण..............................	46
42.	जिंदगी.................................	47
43.	लक्ष्य तक..............................	47
44.	भ्रष्टाचार...............................	48
45.	आजादी................................	48
46.	मेरा भारत महान......................	48
47.	तिरंगा.................................	48
48.	विद्यार्थी तू सब्र तो कर...............	49
49.	भाग्यशाली.............................	50
50.	मुस्कान................................	50
51.	वह भाषा अपनी हिन्दी है............	51
52.	हमारा महाविद्यालय..................	52
53.	भारत की संस्कृति...................	52
54.	बेटियाँ.................................	53
55.	जीवन के ग्यारह मूल्य................	53
56.	मेरा गांव...............................	53
57.	वो है माँ...............................	54
58.	मेरा भारत महान......................	54
59.	ये कॉलेज का दौर लौट के..........	55
60.	जिंदगी................................	55
61.	इंकलाब...............................	56
62.	बचपन.................................	56
63.	पेशावर डायरी........................	57
64.	Humanism.........................	58
65.	Forensic Science................	59
66.	The Power of Biotech.........	60
67.	The Power of Positive Thinking.......	62
68.	Personal Calling................	63
69.	Life : A true meaning..........	64
70.	Goal Setting.......................	64
71.	College Life.......................	65
72.	Your Best..........................	65
73.	Even Non..........................	66
75.	Man's Nature.....................	67
76.	Are you clear about............	67
77.	Do you really want to..........	67
78.	Strange World....................	68
79.	Life Matrix.........................	69
80.	The Lady of the..................	71

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M. P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय / A Central University)
(नैक द्वारा A+ प्रत्यायित / A+ NAAC Accredited)

प्रो. नीलिमा गुप्ता
Prof. Neelima Gupta
कुलपति / Vice-Chancellor

Ex Vice-Chancellor
CSJM University, Kanpur
Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur
Munger University, Munger (Addl. Charge)

:: संदेश ::

B.T. Institute of Excellence, Makronia, Sagar की वार्षिक पत्रिका **"स्पंदन 2024"** के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ !

महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों, शैक्षणिक उन्नयन, छात्र–छात्राओं की रचनात्मक एवं सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को मूर्त रूप प्रदान करने के साथ–साथ अपनी रचनात्मकता से सहपाठियों को अवगत कराने के लिए महाविद्यालय की पत्रिका एक आधार स्तम्भ होती है। विद्यालयीन पत्रिका, विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करती है, इसलिए पत्रिका में व्यवहारिक विषयों के साथ–साथ प्रेरक विषयों–लेखो, जागरूकता संदेशो, रोजगारोन्मुखी जानकारियों द्वारा छात्र लाभांवित होते हैं।

मैं महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका **"स्पंदन 2024"** के संपादक मण्डल को बधाई प्रेषित करती हूँ एवं इसके सफल प्रकाशन की मंगल कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित !

(प्रो. नीलिमा गुप्ता)

सागर,
दिनांक : 12–01–2024

गोविन्द सिंह राजपूत
मंत्री
खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं
उपभोक्ता संरक्षण विभाग,
मध्यप्रदेश शासन

निवास : सी–2, (74 बंगले), स्वामी दयानंद नगर, भोपाल
मंत्रालय : 0755–2708082
निवास कार्या. : 0755–2554145
: 0755–2554154
ई–मेल : govindsr755@gmail.com

अर्द्ध शास. पत्र क्रमांक . . . .
भोपाल, दिनांक . . . .

:: शुभकामना संदेश ::

यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि बी.टी. इंस्टीट्यूड ऑफ एक्सीलेंस कॉलेज द्वारा वार्षिक पत्रिका "स्पंदन 2024" का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका उपयोगी बने एवं अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सार्थक हो।

बी.टी. इंस्टीट्यूड ऑफ एक्सीलेंस कॉलेज द्वारा वार्षिक पत्रिका "स्पंदन 2024" के प्रकाशन हेतु, मेरी ओर से महाविद्यालय के संस्थापक एवं समूह के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

शुभकामनाओं सहित

(गोविंद सिंह राजपूत)

राजबहादुर सिंह

"सांसद"

लोकसभा – सागर (मध्यप्रदेश)

● सदस्य-केन्द्रीय स्थायी समिति-परिवहन, पर्यटन एवं संस्कृति
● सदस्य-केन्द्रीय सलाहकार समिति-सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग
● सदस्य-हिंदी सलाहकार समिति-पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय
● सदस्य-साधारण सभा, शासकीय इंदिरा गांधी इंजीनियरिंग महाविद्यालय सागर (म.प्र. शासन द्वारा मनोनीत)

सत्यमेव जयते

निवास :
10, रिछावर कोठी, बंगाली काली तिगड्डा
वृन्दावन बाग वार्ड, सागर, मध्यप्रदेश
फोन : 07582-220888
मोबा. : 09300846438
ई-मेल-rrajbahadur29@gmail.com

पत्र क्रमांक : S4SGR/2024/708-C

दिनांक : 11.01.2024

(शुभकामना संदेश)

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि बाबूलाल ताराभाई इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस,मकरोनियां, सागर (मध्यप्रदेश) इस वर्ष स्पंदन पत्रिका 2024 का प्रकाशन करने जा रही है ।

संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में एक सशक्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगी ।

मैं संस्थान द्वारा किये जा रहे रचनात्मक कार्यों की प्रशंसा करते हुए इस सुअवसर पर भावनात्मक शुभकामनाऐं अभिव्यक्त करता हूं ।

आपका

(राजबहादुर सिंह)

RAJBAHADUR SINGH
Member of Parliament
Constituence No.5 Sagar (M.P.)

शैलेन्द्र कुमार जैन
विधायक
विधानसभा क्षेत्र क्र. 41, सागर (म.प्र.)

निवास/कार्यालय
376/9 ए, धर्मश्री अम्बेडकर वार्ड,
सागर (म.प्र.) 470 002
मो. 97525 00511, 94251 70511

क्रमांक / 95 / सागर वि.स. / 2024 सागर, दिनांक 24.01.2024

–: शुभकामना संदेश :–

अत्यंत हर्ष का विषय है कि बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस मकरोनिया, सागर की संस्था द्वारा वार्षिक पत्रिका **"स्पंदन"** का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन किसी भी शैक्षणिक संस्थान की गरिमा और परंपराओं की जीवंतता का साक्षी होता है। निश्चित रूप से पत्रिका के प्रकाशन से संस्था अपने विकास में वृद्धि व विद्यार्थियों और पाठकों को नया संदेश देने में सफल होगी।

इस अवसर पर समस्त बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस मकरोनिया, सागर परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

पुनः हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

भवदीय,

(शैलेन्द्र कुमार जैन)

प्रति,

श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस
मकरोनिया, सागर (म.प्र.)

Email : jainshailendra.sagar@gmail.com

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)

(A CENTRAL UNIVERSITY)

निदेशक
Director
महाविद्यालयीन विकास परिषद
College Development Council

E-mail- dcdcsu@gmail.com

:: संदेश ::

बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलैंस, सागर (म.प्र.) वार्षिक पत्रिका 'स्पंदन' पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन का सुखद समाचार प्राप्त हुआ, संस्थान द्वारा पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में साहित्य धर्म की स्थापना है। पत्रिका विद्यार्थियों को लेखन प्रवृत्ति और सृजनात्मक प्रतिभा को बढावा देने के साथ–साथ सामाजिक दायित्व बोध विकसित करने में महाविद्यालय में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करेगी ।

बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलैंस, सागर निश्चित रूप से बधाई का पात्र है, जहॉ पर स्पंदन पत्रिका के माध्यम से साहित्य की सेवा का पुनीत कार्य किया जा रहा है स्पंदन का यह प्रकाशन विद्यार्थियों के अंदर नयी प्रकरण और स्फूर्ति का संचार करने में सफल होगी, ऐसी मेरी सद्बभावना है।

'स्पंदन' पत्रिका के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं शुभकामनायें ।

(प्रो. बी.आई. गुरू)

इंजी. प्रदीप लारिया

विधायक : नरयावली विधानसभा क्षेत्र क्र. 40
सभापति : म.प्र. विधानसभा अनु.जाति तथा अनु. जनजाति
पूर्व उपाध्यक्ष : भारतीय जनता पार्टी, म.प्र.
पूर्व महापौर : नगर पालिक निगम, सागर (म.प्र.)

निवास– पंचदेव मंदिर के पास
रजाखेड़ी, सागर (म.प्र.)
कार्या. : 07582–230399
E-mail : naryavali40@rediffmail.com
नया पारिवारिक खण्ड क्र.– 1
कमरा नं. –5, भोपाल (म.प्र.)
मोबा. : 98262 26835

क्रमांक 546 दिनांक 06/01/24

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शिक्षण संस्थान बी.टी. इनस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस द्वारा वार्षिक पत्रिका ''स्पंदन–2024'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं वार्षिक पत्रिका ''स्पंदन–2024'' शिक्षण संस्थान बी.टी. इनस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस को शुभकामनायें देता हूं।

''उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं''

आपका

(इंजी. प्रदीप लारिया)

विधायक नरयावली

सन्तोष कुमार जैन

चेयरमेन - बी.टी. ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस

1/108, पुरानी गल्ला मंडी रोड
कटरा बाजार, सागर - 470 002

शुभकामनाएं...

शिक्षा हमारे व्यक्तित्व में वांछनीय परिवर्तन लाने एवं समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण है। हम शिक्षा को सीखने की एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखते हैं, जिसके लिये आवश्यक है पाठ्यक्रम और पुस्तकीय ज्ञान से आगे बढ़कर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचियों और प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें आगे बढ़ने का हर अवसर प्रदान करना। यह मेरे लिये अत्यंत गर्व का विषय है कि **''बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस''** इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'स्पंदन' का प्रकाशन प्रारम्भ करने जा रहा है। इस अवसर पर मैं महाविद्यालय के सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को शुभकामनायें देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा और क्षमताओं को सही दिशा देने में सफल होगी। मैं आशा करता हूँ कि **''स्पंदन''** की यह बौद्धिक यात्रा आगामी वर्षों में भी जारी रहेगी।

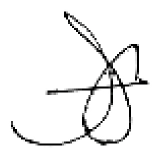

सन्तोष कुमार जैन

BT Institute of Excellence

B.T. Institute of Excellence

Dr. Hari Singh Gour Nagar (Pt. Deen Dayal Nagar) **MAKRONIA, SAGAR 470 004 (M.P.)**
Tel.: 07582-262061; Mob. 8435208040, 8435208060
www.btie.in / email : btie_sagar@rediffmail.com
(Approved by Govt. of M.P. and NCTE, New Delhi)
Affiliated to Dr. Hari Singh Gour Central University, Sagar

Ref. No. Date : 15-04-2024

प्राचार्य की कलम से ...

विद्यार्थियों की रचनात्मकता को सही दिशा देने की दृष्टि से महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''स्पंदन'' का प्रथम अंक प्रस्तुत है। इस संस्था के विद्यार्थी विगत कई वर्षों से शिक्षा, समाज, खेल जगत, पुलिस विभाग, राजनीति तथा अन्य क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करते हुए, विश्वविद्यालय, राज्य स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर की सभी छात्रोपयोगी गतिविधियों का आयोजन तथा उनमें भागीदारी करते हुए, निरंतर अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पुरस्कार अर्जित करते रहे हैं।

वार्षिक पत्रिका ''स्पंदन'' विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को उभारने का, निखारने का तथा उन्हें एक स्पष्ट दिशा देने का माध्यम है। इस पत्रिका में साहित्यिक रचनाओं के साथ ही चित्रकला, फोटोग्राफी तथा अन्य कलात्मक विधाओं को भी उपयुक्त स्थान देकर विद्यार्थियों की कलात्मक रुचि और प्रतिभा को परिष्कृत करने का प्रयास किया गया है। में पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक तथा मंडल के सभी सदस्यों तथा विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए ''स्पंदन'' का प्रथम अंक आपके अवलोकन हेतु प्रस्तुत है।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. आर.टंडन

संपादक की कलम से........

प्रिय पाठक गण,

बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस की पत्रिका 'स्पंदन' का प्रथम अंक आपके अवलोकन हेतु प्रस्तुत है।

वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन महाविद्यालय की जीवंत ऊर्जा, सृजनात्मकता एवं बौद्धिक जिज्ञासा का प्रतीक है। इसके प्रथम अंक का संपादन करते हुये मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

इस अंक में महाविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा रचित/संकलित लेख, कवितायें, कहानियां एवं कलाकृतियां प्रस्तुत हैं। पत्रिका के माध्यम से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करना इसके प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है।

मैं पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों, महाविद्यालय प्रबंधन, परामर्शदाताओं, योगदानकर्ताओं का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। नयनाभिराम मुख्य पृष्ठ तैयार करने के लिए मैं असरार भाई 'रंग के साथी' का आभार मानती हूँ। सभी का उत्साह वर्धन 'स्पंदन' की जीवन रेखा है। यही भावना भविष्य में इसके प्रकाशन को जीवंत बनाये रखेगी। हमें आशा है यह अंक आपको आनंदित करेगा। इसे और बेहतर बनाने के लिये आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

डॉ. आकृति कनोजिया
सम्पादक

सम्पादक मण्डल

डॉ. राजू टण्डन, प्राचार्य
(परामर्शदाता)

डॉ. आकृति कनोजिया
(संपादक)

डॉ. सुरेश कोरी
(संपादक मण्डल)

अंजली दुबे
(संपादक मण्डल)

फरहीन खान
(संपादक मण्डल)

वैभव नामदेव
(संपादक मण्डल)

BTIE
11 MP Bn (Boys)
Orientation Programme
उन्मुखीकरण कार्यक्रम

BTIE

37TH INTER-UNIVERSITY NATIONAL YOUTH FESTIVAL

BTIE
बी.टी.इन्स्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस
WELCOME
Excel
BT Institute of Excellence

मकरोनिया, सागर

LSSMS
BTIRT

BTIE
Youth Festival | Orientation Programme

BTIE YOUTH FESTIVAL, 2019
3rd - 5th October, 2019
Welcome

प्रशिक्षण कार्यशाला तथा उन्मुखीकरण कार्यक्रम
दिनांक: 26 फरवरी 2022

गुरुवार, 24 अगस्त

आनंदाश्रम

WORLD BLOOD DONOR DAY

BTIE

हिन्दी अनुभाग

सागर के तीनबत्ती पर गौरमूर्ति की स्थापनाः

चतुर्भुज सिंह राजपूत, वरिष्ठ अधिवक्ता
पूर्व अध्यक्ष सागर वि.वि. छात्रसंघ व डॉ. हरीसिंह गौर प्रतिमा स्थापना समिति, सागर

सन 1962 में सागर नगरपालिका परिषद ने नगर के हृदय स्थल तीनबत्ती पर डॉ. हरीसिंह गौर की प्रतिमा लगाने का संकल्प लिया था। परिषद का कार्यकाल पूरा होते ही, परिषद भंग हो गई—संकल्प विलुप्त हो गया। 1962 तक विश्वविद्यालय या नगर में कहीं भी गौर जयंती नहीं मनायी जाती थी।

सन् 1962 के किसी माह के दिन शुक्रवार को स्थानीय स्कूलों के मॉनीटर—केप्टिन ने एक स्थान पर एकत्रित होकर सागर विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष को आमंत्रित करके संकल्प लिया कि डॉ. हरीसिंह गौर की स्मृति को चिर—स्थायी बनाने के लिए उनकी अष्टधातु की आदमकद प्रतिमा, नगर के हृदय स्थल तीनबत्ती पर स्थापित करेंगे। और तब ''हरीसिंह गौर प्रतिमा स्थापना समिति'' बनाई गई। स्कूली छात्रों से दस पैसा, चार आना, कॉलेज—विश्वविद्यालय के छात्रों से आठ आना, एक रुपया, नागरिकों से उनकी श्रद्धा तथा हैसियत के अनुसार चंदा एकत्रित होने लगा। छात्र छोटी—छोटी चद्दर की पेटियाँ (जो श्री सरावगी जी द्वारा मुफ्त में मिली थी) लेकर सिनेमा हॉल, दुकानदार, रेलवे प्लेटफॉर्म, मोटर स्टेंड, कचहरी—चलती ट्रेन में चंदा प्राप्त करते। कुछ छात्र बूट पॉलिश करके मेहनताना पेटी में डालते।

एक दिन पत्राचार से प्रभावित होकर मुंबई स्थित तुलसीबाड़ी के मूर्तिकार—शिल्पकार श्री नागेश यावलकर सागर आये। विश्वविद्यालय घूमें, छात्रों के उत्साह को देखकर उन्होंने बताया कि वह भी मध्यप्रदेश के मंदसौर से हैं। अपने जन्म स्थान में ललित कला अकादमी खोलने का सपना देखते हैं, वह डॉ. गौर की मूर्ति बनाने का मेहनताना नहीं लेंगे, केवल कबाड़खाने से अष्टधातु खरीदने की कीमत लेंगे।

श्री यावलकर ने सागर के समृद्धशाली जैन धर्म के अनुयायियों के ऑर्डर पर महान संत श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी की पाल्थी मारे, ध्यान—मुद्रा वाली प्रतिमा बनाई थी। मुंबई के तुलसीबाड़ी स्टूडियो से चूँकि उसी ट्रक में श्री वर्णीजी के श्री चरणों से लगकर डॉ. गौर की आदमकद प्रतिमा लेटे हुये आई थी, सो छात्रों को ट्रक भाड़ा नहीं देना पड़ा। श्री वर्णी जी की भव्य मूर्ति पाकर जैन समाज ने मुक्त हस्त से मूर्तिकार को मेहनताना के अलावा अलहदा से भी धनराशि दी थी।

सागर मिलेट्री की क्रेन ने दोनों प्रतिमाओं को यथा स्थान रखवाने में सहयोग किया। उन दिनों तीनबत्ती (अब गौरमूर्ति) नामक स्थान पर कलकत्ता के अंग्रेजों की 'मार्टिन एण्ड बर्न' विद्युत कंपनी का विशाल ट्राँसफार्मर हटाकर अन्यत्र लगवाये जाने के लिए छात्रों के आंदोलन को पूरा—पूरा जनसमर्थन, पुलिस अधीक्षक, कलेक्टर, नगरपालिका के अध्यक्ष तथा सभी पार्षदों के खुले समर्थन के कारण अंग्रेज विद्युत कंपनी ने दवाब में आकर ट्राँसफार्मर अन्यंत्र लगवाया। छात्रों की हरीसिंह गौर प्रतिमा स्थापना समिति

तीनबत्ती पर स्थापित
डॉ. गौर प्रतिमा तैयार होते हुए
साथ में मूर्तिकार नागेश यावलकर
श्री शिवशंकर केशरी एवं
एड. चतुर्भुज सिंह राजपूत

सागर ने संकल्प लिया था– 'कि डॉ. गौर की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा एवं अनावरण समारोह केवल उस व्यक्ति से कराया जाये, जिसने सागर विश्वविद्यालय की उन्नति–विकास के लिये या सागर के विकास हेतु जनहित का कोई ठोस कार्य किया हो।

छात्रों के संकल्प के मापदण्ड में उस समय केवल एक नाम–सागर के महेन्द्र सिंह चौहान–देवेश्वरी देवी की पुत्री जिनकी माता नेपाल के राणा परिवार की थी, उनका जन्म और शिक्षा सागर में हुई थी, उन्होंने विवाह के बाद स्वेच्छा से नेपाल पैलेस मय 28 एकड़ का क्षेत्र मय मकानात की श्रृंखला, समस्त हकदारों को नगद राशि देकर सबके हक–हिस्सा को लेकर, पूरी कीमती संपत्ति सागर विश्वविद्यालय को दान में दे दी थी। तब उन्हें **श्रीमंत विजयाराजे सिंधिया,** पत्नि श्रीमंत जीवाजी राव सिंधिया ग्वालियर की महारानी के नाम से जाना जाता था।

छात्रों की समिति के अध्यक्ष का दो बार ग्वालियर के 'जय विलास पैलेस' जाना सफल नहीं रहा। तब सागर नगर पालिका परिषद का संकल्प पत्र पाकर राजमाता ने सहमति दी। **2 सितम्बर 1967** को सागर की तीनबत्ती नामक स्थान पर डॉ. हरीसिंह गौर की आदमकद अष्टधातु की सवा टन वजनी, 11 फुट ऊँचे पत्थर से बने स्तम्भ पर, स्थापित प्रतिमा का प्राण–प्रतिष्ठा यज्ञ करके परम आदरणीया **राजमाता विजया राजे सिंधिया** ने प्रतिमा का अनावरण किया। मंच के सामने सागर जिले के निवासी अपार संख्या में उपस्थित थे– 'डॉ. गौर अमर रहें' के नारों से वायुमंडल गूँज रहा था।

मंच पर छात्र–प्रतिमा स्थापना समिति के अध्यक्ष लेखक (श्री चतुर्भुज सिंह राजपूत) ने मंचासीन राजमाता, उनके साथ महिला सहयोगी एवं स्तम्भ बनवाकर सहयोग करने वाले तत्कालीन नगर पालिका परिषद के लोकप्रिय अध्यक्ष **श्रीमंत सेठ डालचंद जैन** का पुष्पहार से स्वागत करके, राजमाता के पैर छूकर–प्रतिमा अनावरण हेतु आने का आभार जताया।

राजमाता ने भाव–विहल होकर कहा 'मुझे मायके में इतना प्रेम–स्नेह सम्मान मिलेगा इसकी कल्पना नहीं थी, यह लड़का (श्री चतुर्भुज सिंह राजपूत) छात्रों की समिति का आपका अध्यक्ष दो बार मुझसे मिला, तब मैने सोचा था कि छात्रों का स्कूली समारोह होगा साथ ही तब मध्यप्रदेश की राजनीति में उथल–पुथल हो रही थी, मैं उसकी केन्द्र बिन्दु होने से व्यस्त थी अनेक बातें कहने के उपरांत उन्होंने कहा–सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक–पितामह की प्रतिमा का अनावरण करके मैं सबसे बड़ी सौभाग्यशाली हूँ, भविष्य में इस विश्वविद्यालय की उन्नति हेतु सबकुछ करुँगी'।

कुछ ही दिनों बाद वे प्रांत की संविद् सरकार की नेत्री बनी और सागर विश्वविद्यालय की कुलाधिपति बन गई और सागर विश्वविद्यालय को प्रांतीय शासन से भरपूर आर्थिक संरक्षण प्राप्त हुआ।

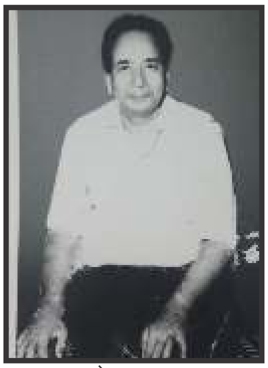

नागेश यावलकर
हरीसिंह गौर प्रतिमा (तीनबत्ती सागर) के मूर्तिकार

डॉ. गौर की प्रतिमा बनने पर थ्री क्वींस रोड, ओवल मैदान, मुंबई में रहने वाली, डॉ गौर की बड़ी पुत्री डोरोथी गणपति ने सबसे पहले प्रतिमा का प्लास्टर ऑफ पेरिस का नमूना देखकर स्वीकृति दी थी। प्रतिमा स्थापना कराने, अनावरण यह सब कुछ ईश्वरीय महासुंदर सुयोग थे।

इसके कई वर्षों बाद नेपाल पैलेस को जमींदोज करके श्रीमंत राजमाता विजयाराजे सिंधिया स्वर्ण जयंती सभागार बनाया था जो विश्वविद्यालय परिसर के ही पास है।

26 नवम्बर 2018 को नवनिर्मित गौर स्मारक भवन (शनीचरी स्थित गौर जन्म स्थली) का लोकार्पण भूतपूर्व छात्र डॉ. वीरेन्द्र कुमार, महिला एवं बाल विकास, अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय भारत सरकार ने प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी, कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की अध्यक्षता में किया।

अब यह स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया इतिहास है कि प्रत्येक वर्ष, 26 नवम्बर शासकीय स्थानीय अवकाश का दिन रहता है विश्व में जहाँ–तहाँ रहने वाले विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र गौर जयंती को पर्व जैसा मनाते हैं। सागरवासी गौर प्रतिमा स्थल पर एकत्रित होते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रगति का प्रतिवेदन उपस्थित जनसमूह को सुनाते हैं। माल्यार्पण करके शोभा यात्रा तीनबत्ती से विश्वविद्यालय जाती है। सागर जिला का क्षत्रिय समाज का संगठन है जो प्रतिवर्ष गौर जयंती का आयोजन इस नारे के साथ करता है– क्षत्रियों की आन–बान शान अब शिक्षा और कलम स्थानीय रविन्द्र भवन के इस आयोजन में मेधावी छात्र–छात्राओं के साथ उनके माता–पिता का सम्मान होता है एवं मेधावी छात्रों को प्रमाण पत्र के साथ डॉ. सर हरीसिंह गौर के चित्रवाला मूमेन्टो भी दिया जाता है। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में क्षत्रिय वर्ण के राजपूत–प्रसिद्ध व्यक्ति को आमंत्रित किया जाता है।

डॉ. सर हरीसिंह गौर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ठा. तखतसिंह गौर–क्षत्रिय वर्ण के राजपूत की पत्नि लाड़ली बहु या लाड़ली बाई या भूरीबाई ने मध्यप्रदेश प्रांत के सागर जिला के सागर नगर के शनीचरी वार्ड में **26 नवम्बर 1870** को हरप्रसाद सिंह गौर (हरीसिंह गौर) को जन्म दिया था। हरीसिंह से बड़ी दो बहिनें लीलावती और मोहनबाई तथा बड़े भाई आधारसिंह और गनपत सिंह थे। एक सबसे बड़े भाई ओंकारसिंह की अल्पायु में मृत्यु हो गई थी।

इनके पितामह ठा. मानसिंह गौर सैनिक वृत्ति त्यागकर ग्राम चील पहाड़ी में कृषक हो गये थे। इन्होंने ही शनीचरी टौरी सागर में भाग्यशाली मकान बनवाया था और चील पहाड़ी की ककरीली–पथरीली अनुपजाऊ कृषि भूमि बेच दी थी। फिर कोई काम धंधा नहीं किया। 80 वर्ष की आयु में सैनिक वस्त्र पहनकर हाथ में तलवार लेकर घरवालों से विदा लेकर आर्शीवाद देकर दहलान की दरी पर लेट गये, और प्राण त्याग दिये।

ठा. तखतसिंह गौर को पिता पढ़ाना–लिखाना तो चाहते थे किंतु कुछ कक्षायें पढ़ने के बाद मन नहीं लगा तब पिता ने उनकी 14 वर्ष की आयु में ग्राम सेमराखेड़ा के अशिक्षित राजपूत कृषक की 12 वर्षीय अल्पशिक्षित पुत्री से विवाह कर दिया था जो रूप रंग में गोरी भूरी आँखें होने से हँसी–ठिठोली में उन्हें ननदें गोरी मेम साब कहती थीं और पास–पड़ोस वाले उन्हें भूरीबाई कहते थे।

परिवार ने ग्राम देवलचौरी में 35 एकड़ कुआ वाली अच्छी उपजाऊ कृषिभूमि खरीदी थी किंतु ठा. तखतसिंह गौर एक दिन भी खेत में मिट्टी सूंघने तक नहीं गये सो उसे किराये पर दूसरे को खेती करने दे दिया गया। किरायेदार बहानेबाजी करता और नाममात्र की फसल गौर परिवार को देता था। पुत्रियों के विवाह करने, दहेज देने के लिये ठा. तखतसिंह गौर ने अपने पड़ोसी भार्गव जी को यह भूमि बेच दी थी और पुलिस कांस्टेबिल की नौकरी करने लगे। तरक्की पाकर चीफ कांस्टेबिल हो गये। जब बड़े पुत्र

डॉ. हरीसिंह गौर की प्रतिमा का अनावरण श्रीमती विजयाराजे सिंधिया द्वारा

आधारसिंह गौर की नौकरी जबलपुर में लगी तो वे अपने परिवार को 50 रुपया प्रतिमाह पेंशन भेजने लगे। तब तखतसिंह गौर ने पुलिस की नौकरी छोड़ दी और जबलपुर जाकर पुत्र के साथ रहने लगे थे। वहीं उनका लगभग 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

बड़े पुत्र आधारसिंह ने माहवारी पेंशन राशि घटाकर 30 रुपया प्रतिमाह कर दी तब बालक गौर के परिवार पर भयंकर आर्थिक संकट था। गनपत सिंह गौर अपनी पत्नि के साथ नरसिंहपुर में मामूली शासकीय नौकरी करते थे। बालक गौर की माता ने जिंदगी में किसी भी किस्म की शिकायत नहीं की, वे घर के कामों में ही व्यस्त रहीं। पढ़ी लिखी नहीं थी फिर भी वे घरेलू हिसाब किताब, जोड़ घटाना, गुणाभाग अच्छी तरह से कर लेती थीं। उनकी स्मरण शक्ति की चर्चा पास–पड़ोस वाले करते थे। वे सुबह 3–4 बजे उठ जातीं, घर की पत्थर की चक्की पर अनाज पीसतीं। एक दिन चुपचाप उन्होंने एक चरखा खरीद लिया और उस पर दोपहर 1 बजे से शाम 7 बजे तक सूत कातती थीं। तीन दिन की मेहनत के बाद धागे को बेचकर जो आय होती, उससे आगे के काम के लिये कपास की पिण्डलियाँ खरीद लेतीं। इस सारी प्रक्रिया में 4–5 आना बचा लेती, जिससे घर के लिये जरुरी सामान की खरीदी हो जाती थी।

एक दिन कटरा पड़ाव स्कूल के शिक्षक ने घर में आकर भूरीबाई से कहा–कि तुम्हारा लड़का अच्छा होशियार है, वह तो बिल्कुल आग का तिलगा (चिंगारी–स्पार्क) है, खूब चमकेगा। बालक गौर ने यह बात अपने सहयोगियों को सुनाई। कुछ ही दिनों में सहपाठियों व मुहल्ले के लड़कों ने गौर को चिढ़ाने के लिये तिलगा है, तिलगा है, कहना शुरु कर दिया और बंद भी कर दिया, क्योंकि बालक गौर ने उनके कहने पर कभी किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं दी।

एक सत्र में दो परीक्षायें बालक हरीसिंह गौर ने पास की तथा परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ आने से उन्हें एक छात्रवृत्ति स्वीकृत हो गई, जो स्कूल के प्रथम हेडमास्टर मिशेल की याद में शुरु की गई थी, यह **दो रुपया प्रतिमाह की थी**। हेडमास्टर कृपाशंकर झा ने बालक गौर को छात्रवृत्ति की पहली राशि के दो रुपया दिये, वह मुट्ठी में लेकर स्कूल से दौड़कर घटिया चढ़ कर बिना कहीं रुके सीधे घर पहुँचे, माँ चरखा चला रही थी। उनका हाथ पकड़कर दो रुपया हथेली पर रखकर कहा अब न चक्की चलाना न ही चरखा चलाना, मुझे दो रुपया महावारी छात्रवृत्ति मंजूर हो गई है। अब मैं हर माह दो रुपया दूँगा। बार–बार कहने पर माँ ने कुछ नहीं कहा,

तब बालक गौर ने उनका एक हाथ अपने सिर पर रखकर कहा अब तुम्हें मेरी कसम है। तब माँ ने कहा– काम नहीं करुंगी तो में खुटने लगूंगी। अंत में माँ–बेटे में कुछ समझौता हो गया। माँ ने चक्की चलाना बंद कर दिया जिसमें वे मुहल्ले वालों का अनाज पीसती थीं किन्तु चरखा चलाना पूर्ववत रहा।

1881 में बालक गौर ने मिडिल स्कूल की पढ़ाई सागर में पूरी कर ली। छात्रवृत्ति स्वीकृत थी। मेट्रीकुलेशन करने वे बड़े भाई के पास जबलपुर चले गये। कुछ समय बाद बड़े भाई का ट्रांसफर नागपुर हो गया तब गौर का परिचय काछी जाति के लड़के से हुआ जो अपनी माँ के साथ रहता था, बालक गौर उनके साथ रहने लगे। गौर ने छात्रवृत्ति की राशि से कुछ रुपया बचाकर एक आना वजनी सोने की अँगूठी को अपने बैग में रख दिया। एक सुबह अँगूठी नहीं मिली इसकी पुलिस रिपोर्ट हुई, जाँच में उनके बयान लिये गये उस महिला पर केस चला, न्यायालय में उनके बयान लिये गये, महिला को चोरी के अपराध में चार माह की सजा हुई। इस प्रकरण के चलते वे ठीक से पढ़ नहीं पाये और मैट्रिक की परीक्षा में फेल हो गये, छात्रवृत्ति बंद हो गयी। आग का तिलगा राख हो गया और वे अपनी माता के पास सागर आ गये। **उन्होंने मिडिल स्कूल की पढ़ाई सागर के गर्वमेंट मल्टीपरपस स्कूल से पूरी की।**

बालक गौर ने कई जगह नौकरी की तलाश की और अंत में एक मेस में क्लर्क हो गये। बड़ी कठिन दिनचर्या हो जाने से वे बीमार हो गये और नौकरी छूट गयी।

बड़े भाई सागर आये, उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पूरी करने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें अपने साथ नागपुर ले गये। तब वे ज्यूडीशियल कमिश्नर कोर्ट नागपुर में डिप्टी रजिस्ट्रार थे। उन्होंने भाई के साथ रहकर पढ़ाई की और मैट्रिक की परीक्षा दी। वे प्रथम श्रेणी में एवं प्रांत की प्रावीण्य सूची में भी प्रथम रहे, उन्हें 50 रुपया नगद इनाम, एक चाँदी की घड़ी तथा 20 रुपया की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। आग का तिलगा चमकने–प्रज्जवलित हो गया था, गणित इनका प्रिय विषय था इस विषय में इन्होंने विशेष उपलब्धि पाई थी, इस हेतु उन्हें एक विशेष उपहार से प्रोत्साहित किया गया।

उच्च शिक्षा के लिये उन्होंने फ्री चर्च इंस्टीट्यूशन नागपुर में (जो अब हिसलप कॉलेज के नाम से प्रसिद्ध है) प्रवेश लिया। अंग्रेजी और इतिहास में ऑनर्स करने वाले वे एक मात्र छात्र थे। उन्हें शिक्षकों का सघन स्नेह, प्रोत्साहन, और शैक्षणिक संवर्धन प्राप्त हुआ। इसी कॉलेज में उन्होंने अपने प्रगतिशील एवं प्रभावी शैक्षिक संस्कार अर्जित किये। यहीं उन्होंने शिक्षाविद् मैकाले के ग्रंथों का अध्ययन शुरु किया। वे लगनशील छात्र थे। समस्त परीक्षाओं को विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण करना इस लक्ष्य को उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात कर लिया था, उन्हें अपनी बाल्यावस्था के अर्थाभाव का सदैव स्मरण रहता था।

हरीसिंह गौर को बड़े भाई आधारसिंह गौर ने अपने पुत्र मुरली मनोहर सिंह की देखभाल एवं बेरिस्ट्री की शिक्षा के लिये केम्ब्रिज भेजा। भाई से एक निश्चित राशि उन्हें प्राप्त होती थी अतः उन्होंने डाउनिंग कॉलेज केम्ब्रिज में छात्रवृत्ति हेतु आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लिया। सभी को आशा थी कि गणित विषय में प्रतिस्पर्धा के परिणाम की प्रावीण्य सूची का प्रथम नाम और किसी का नहीं केवल हरीसिंह गौर का ही होगा। किंतु इस परीक्षा के परिणाम निरस्त कर दिये गये।

जब हरीसिंह गौर एल.एल.डी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद एक भोज में थे, तब उन्हें बताया गया कि छात्रवृत्ति विदेशियों विशेषकर अश्वेत छात्रों को नहीं दी जाती है चूँकि गौर उस परीक्षा में प्रथम स्थान पर थे, इसलिये उस सत्र की छात्रवृत्ति किसी को नहीं दी गई थी।

कुलपति पुरस्कार के लिये आयोजित अंग्रेजी कविता की एक अन्य प्रतियोगिता में उन्होंने भाग लिया और अपनी कविता– **'स्टेपिंग वेस्ट वार्ड'** भेजी। विश्वस्त सूत्रों से उन्हें ज्ञात हुआ कि यद्यपि समस्त कविताओं में उनकी कविता सर्वश्रेष्ठ थी, किंतु निर्णायक अपना मत घोषित किये बिना ही चले गये।

डॉ. गौर अपने परिवारजनों के साथ

डॉ. गौर अपनी पुत्रियों के साथ

केम्ब्रिज के अध्ययन काल में उनकी साहित्यिक प्रतिभा निरंतर विकसित हुई। उस समय के विख्यात साहित्यकार लार्ड टेनीसन को उन्होंने अपनी प्रथम कविता भेजी और बाद में उनसे साक्षात्कार किया। टेनीसन ने उन्हें प्रोत्साहित करने के साथ–साथ पढ़ाई की ओर ध्यान देने और अभ्यास करते रहने को कहा। उन्होंने अपनी कविताओं को साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाना शुरु किया। सर्वत्र उनकी रचनाओं की प्रशंसा होने लगी और उनके अंग्रेजी ज्ञान को सराहा जाने लगा। उन्होंने **'स्टेपिंग वेस्टवार्ड एण्ड अदर पोएम्स'** कविता संग्रह प्रकाशित कराया जिससे साहित्य जगत में यश मिला और उन्हें 'रॉयल सोसायटी ऑफ लिटरेचर' का सदस्य चुना गया, साथ ही वे लेखक संघ के सदस्य भी बन गये।

वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में प्रभावशाली अभिव्यक्ति के कारण वे छात्रों के विशेष प्रशंसा पात्र थे। उन दिनों केम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इंग्लैण्ड के भावी कर्णधारों की निर्माण–भूमि समझी जाती थी। प्रतिवर्ष दोनों विश्वविद्यालय के छात्र–संघों में पारस्परिक प्रतियोगितायें हुआ करती थीं। छात्रसंघ के माध्यम से मेधावी छात्रों की प्रतिभा सामने आती थी। सन् 1891 में ऑक्सफोर्ड के छात्रसंघ ने अपना एक छात्र–प्रतिनिधिमण्डल केम्ब्रिज विश्वविद्यालय भेजा। चार अन्य छात्रों के साथ सार्वजनिक मंच पर संपन्न प्रतियोगिता में हरीसिंह गौर ने भी भाग लिया, जिसका परिणाम केम्ब्रिज–रिव्यु नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ। श्री गौर समस्त वक्ताओं में प्रथम घोषित किये गये। बाद में ऑक्सफोर्ड के विशेष आमंत्रण पर केम्ब्रिज छात्रसंघ ने अपने प्रतिनिधिमंडल के नेतृत्व हेतु उन्हें ही चुना। ऑक्सफोर्ड रिव्यु में पुनः प्रकाशित परिणाम के अनुसार इस प्रतियोगिता में भी वे प्रथम रहे।

यह इंग्लैण्ड के आम चुनाव का समय था। उदार दल की ओर से जॉन मार्ले का नगर में भाषण हुआ और नगर की ओर से धन्यवाद ज्ञापन श्री गौर ने किया। उनका भाषण इतना ओजस्वी रहा कि लंदन के समाचार पत्रों ने लिखा कि गौर जैसा वक्ता शासनकर्त्ताओं को एक उपहार है। ''द पाल माल समाचार–पत्र ने उन्हें अपना केम्ब्रिज का संवाददाता नियुक्त किया अन्य पत्रों ने भी उन्हें सहयोग के लिए आमंत्रित किया।

दादाभाई नौरोजी उस समय इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय उदार दल में थे। उदार दल के सिद्धांत विषय पर श्री गौर का भाषण सुनकर वह काफी प्रभावित हुये। उन्होंने श्री गौर को अपने साथी के रूप में चुनाव प्रचार के लिये आमंत्रित किया। दादाभाई नौरोजी सेंट्रल फाइल्सबरी क्षेत्र से प्रत्याशी थे। उस समय श्री गौर एक अच्छे लेखक और कुशल वक्ता माने जाने लगे थे। उदारवादी दल ने एक चुनाव क्षेत्र से उन्हें अपना प्रत्याशी घोषित किया था, अपेक्षित आयु न होने के कारण वह चुनाव नहीं लड़ सके पर श्री दादाभाई नौरोजी के चुनाव प्रचार में उन्होंने सक्रिय भागीदारी की।

चुनाव प्रचार में काफी समय व्यतीत होने से वे केम्ब्रिज में अनुपस्थित रहे। मेट्रीकुलेशन के बाद तीन वर्ष का पाठ्यक्रम उन्हें पढ़ना था। वैसे तो परीक्षा की दृष्टि से उन्होंने आवश्यक अध्ययन कर लिया था, किंतु प्रथम स्थान अर्जित करना वे आवश्यक समझते थे। डबल ऑनर्स करने की भी उनकी इच्छा थी। केम्ब्रिज में बी.ए. की उपाधि महत्वपूर्ण मानी जाती थी। पी.एच.डी. तथा डी.फिल प्राप्त करना आनर्स से सरल था। श्री गौर के ऑनर्स के विषय मनोविज्ञान, नीतिशास्त्र, कानून, दर्शनशास्त्र तथा अर्थशास्त्र थे। उनके प्राध्यापक श्री हेनरी सिडगर्क तथा एलफ्रेड मार्शल उनकी अध्ययनशीलता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने सम्मिलित रूप से कॉलेज सीनेट से सिफारिश की कि हरीसिंह गौर को संबंधित पाठ्यक्रम के अधिनियम में विहित शर्तों से मुक्त करते हुए परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जानी चाहिये। सीनेट ने हरीसिंह गौर को परीक्षा में बैठने की अनुमति दे दी।

1891 में उन्होंने दर्शन और अर्थशास्त्र में आनर्स की उपाधि हासिल की और 1892 में कानून की उपाधि अर्जित की। बाद में 1905 में डी.लिट. की पहली डिग्री लंदन विश्वविद्यालय से और फिर ट्रिनिटी कॉलेज **डरहम** से प्राप्त की थी।

1892 में वार.ऐट. लॉ. लंदन का पंजीयन प्रमाण पत्र उन्होंने प्राप्त कर लिया किंतु वहाँ से भारत आने का किराया उनके पास नहीं था। उनके साथ गया भतीजा मुरली मनोहर सिंह शिक्षा पाने में असफल रहा इसका सारा दोष हरीसिंह गौर पर डालकर बड़े भाई ने निर्धारित धनराशि उन्हें भेजना बंद कर दिया था। तब गौर ने अपने मृत मझले भाई गनपत सिंह गौर की पत्नि याने भाभी को पत्र से सूचना दी, जो उस समय सेवारत पुत्र किशोरसिंह गौर के साथ नरसिंहपुर में रहती थीं। श्रीमति गौर ने जबलपुर के सेठ गोकलदास की साहूकारी दुकान में अपने स्त्रीधन के सोने–चाँदी के जेवर बेचकर 700 रुपये अपने छोटे देवर हरीसिंह गौर को भिजवाये थे। तब वे भारत वापिस आ पाये।

श्री गौर भंडारा में एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर बन गये। वे विवाह करने में उत्सुक थे। बड़े भाई एवं हरीसिंह गौर के विलायत जाने से ब्राह्मणों के फतवा के कारण दोनों को राजपूत समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था। कोई भी राजपूत हरीसिंह गौर को लड़की ब्याहने तैयार नहीं था। बड़े भाई विलायत जाने के पूर्व ही बाल–बच्चे वाले थे। भंडारा में डॉ. बल्देव सिंह चौहान की ईसाई पत्नि से जन्मी पुत्री ओलीविया चौहान से उन्होंने विवाह किया था जिससे दस संताने हुई। अनेक की अल्पायु में मृत्यु होने से केवल चार पुत्रियाँ और एक पुत्र बचा जिसकी मादक पदार्थों के सेवन करने से युवावस्था में ही मृत्यु हो गई थी।

डॉ हरीसिंह गौर ने कुछ समय प्रशासकीय सेवा की, फिर नौकरी छोड़कर वकालत करने लगे। रायपुर, नागपुर, कलकत्ता, लाहौर, रंगून तथा इंग्लैण्ड की प्रीवी कौंसिल में वकालत की। इसमें उन्हें भरपूर धन, और यश मिला।

सन् 1900 में **'हिस्ट्री एण्ड लॉ ऑफ इंट्रेस्ट'** फिर **'लॉ ऑॅफ ट्रांसफर ऑफ प्रापर्टी एक्ट'** नामक पुस्तकों के प्रकाशन से वे प्रसिद्ध विद्वान लेखक और विधिवेत्ता हुये। 1909 मे भारतीय दण्ड संहिता की तुलनात्मक विवेचना ग्रंथ तीन हजार पृष्ठों के दो भागों में प्रकाशित हुआ। उन्होंने **'पेनल लॉ'** नामक पुस्तक का प्रकाशन 1914 में कराया। कानूनविदों के लिये यह पुस्तक नींव का पत्थर साबित हुई और आज भी इसका अध्ययन शुरुआती वकालत को सुदृढ़ करने में सहायक माना जाता है। युवा वकील इस पुस्तक का अध्ययन करके ही वकालत शुरु करते हैं।

हिंदू लॉ का गहन अध्ययन करके 1919 में **'हिंदू लॉ'** प्रथम पुस्तक का प्रथम प्रारूप प्रकाशित किया। 1942 में डॉ गौर ने **'रिनेसाँ ऑफ इंडिया'** और 1947 में **'इंडिया एण्ड न्यू कान्स्टीट्यूशन'** तथा 1948–49 में **'फैक्ट्स एण्ड फैंसीज** एवं **'हिज लाइफ एण्ड वर्क्स'** नामक पुस्तकें लिखीं। उन्होंने तीन उपन्यास भी लिखे और उन्हें **'स्पिरिट ऑफ बुद्धिज्म'** नामक पुस्तक से विश्व के बौद्धधर्म वाले देशों में उन्हें ख्याति मिली। जापान सरकार के आमंत्रण पर वे वहाँ गये, उन्हें धर्मगुरु जैसा सम्मान आमजन से प्राप्त हुआ जैसा कि रामचरित मानस के लेखक संत तुलसीदास को भारत के लोग देते आ रहे हैं। डॉ. गौर ने अपनी आत्मकथा को **'सेवेन लाइव्ज'** शीर्षक दिया है।

1919 में गौर साहब नागपुर में रहते थे वे कॉँग्रेस दल के सदस्य हो गये और निरंतर तीन बार 1920 से लेकर 1935 तक

विधान परिषद के सदस्य चुने गये। यहाँ वे विधि–निर्माता और प्रखर वक्ता माने गये। समाज–सुधार संबंधी उनके कई बिल कानून बने। नागपुर काँग्रेस अधिवेशन में मतभेद होने से काँग्रेस दल से अलग हो गये और डेमोक्रेटिक दल बनाया जो विरोधी दल के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

डॉ. गौर के प्रयास से नासिक में एक फैक्ट्री स्थापित की गई और जहाँ स्टाम्प और कोर्ट फीस टिकिट छपना शुरु हुआ अन्यथा पूर्व में इंग्लैण्ड से छपकर आते थे। सन् 1923 का अधिनियम 30 उन्होंने ही प्रारूप लिख कर पारित करवाया था जिसके अनुसार **हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध संप्रदायों में अंतरजातीय विवाह संभव हो** सके और ऐसे विवाहितों का पैतृक संपत्ति में अधिकार सुरक्षित रखने का प्रावधान वैध बनाया गया था। दक्षिण भारत में देवदासी प्रथा थी जिसके अनुसार कम आयु की लड़कियों को आजन्म मंदिर के देव सेवा में देने का कठोर रिवाज था। इसे धर्म का अभिन्न अंग माना जाता था। इस प्रथा से गंभीर सामाजिक विसंगतियाँ हो गई थी यह हजारों साल से चली आ रही प्रथा थी। डॉ. हरीसिंह गौर ने प्रस्ताव रखा एवं इस प्रथा को प्रतिबंधित कराया इसके फलस्वरूप मंदिरों में देवदासी बनाने के लिये कम उम्र की लड़कियों को सेवा में लेना भारतीय दण्ड विधान की धारा 372 एवं 373 के अंतर्गत अवैध और दण्डनीय अपराध बनाया गया। उन्होंने हिन्दू समाज की विभिन्न संस्थाओं को परिमार्जित और सुव्यवस्थित करने के उद्देश्य से एक बिल रिलीजियस एण्ड चेरिटेबिल ट्रस्ट को कानून बनवाया। भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु **महिलाओं को वकालत करने का अधिकार** देने का प्रस्ताव भी उनके प्रयासों से पारित हुआ। चिल्ड्रन प्रोटेक्शन एक्ट के आधारभूत प्रारूप की संरचना और कानून के रूप में उसकी स्थापना का श्रेय भी डॉ. गौर को प्राप्त हुआ था। सन् 1946 में भारतीय संविधान सभा का गठन हुआ, इसमें डॉ. गौर प्रमुख मनोनीत सदस्य बनाये गये।

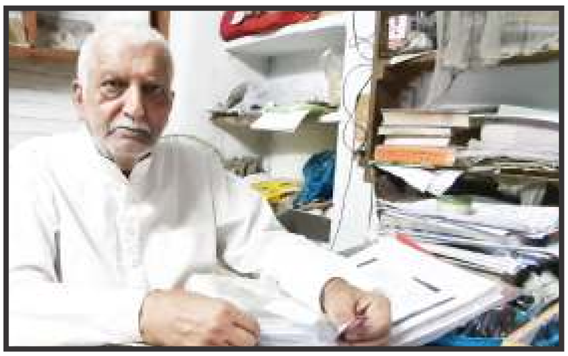

भारतीय संविधान के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। रायपुर जिला परिषद के वह दस साल तक सचिव रहे उन्हीं के प्रयत्नों से वहाँ एक वृहत जन–उद्यान की स्थापना हुई। वे नागपुर नगर पालिका के अध्यक्ष भी निर्वाचित हुये।

सन् 1922 में केंद्रीय सरकार ने दिल्ली में विश्वविद्यालय की स्थापना की। डॉ. गौर इसके संस्थापक उपकुलपति नियुक्त हुये और 1928 तक इस पद पर रहे। इनकी कुशल प्रशासकीय और कार्यकौशल से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने **उन्हें 1925 में 'सर' की उपाधि से अलंकृत किया।** इसके पश्चात् 'डॉ. गौर नागपुर विश्वविद्यालय में सन् 1928 से उपकुलपति पद पर निर्वाचित हुये और 1936 तक उन्होंने इस पद का निवर्हन किया। इंग्लैण्ड में ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत 27 विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 25 दिवसीय सम्मेलन भी डॉ. गौर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। अब वह आग का तिलका क्षितिज में प्रज्जवलित तारा के समान चमक रहा है।

अपनी वृद्धावस्था में वे मॉडल हाऊस सागर में थे, उनकी घड़ी का चमड़े का पट्टा टूट गया। उन्होंने दो पैसे देकर नौकर को जूता सुधारने वाले के पास टांके लगवाने भेजा उसने पाँच पैसे मांगे तब गौर ने नौकर से सुई–धागा दो पैसों में मंगवाई ओर चमड़े के पट्टे को स्वयं टांके लगाये ऐसी मितव्ययता से ही यह ज्ञान–का ज्योति स्तम्भ उन्होंने भारतवासियों को दिया था। इसीलिए डॉ. हरीसिंह गौर की स्मृति को अनंत काल तक बनाये रखने का दायित्व हम सब पर है।

पुनश्चः अब पाठकों को यह प्रयास करना है कि भारत सरकार मरणोपरांत डॉ. गौर को भारत रत्न से अलंकृत करे।

"महात्मा गाँधी के विचारों की आज के युग में प्रासंगिकता"

शुकदेव प्रसाद तिवारी
मंत्री
श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय, सागर

प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को हम महात्मा गाँधी की जयंती मनाते हैं। महात्मा गाँधी युग पुरुष थे। सत्य और अहिंसा के बल पर उन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। भारत की जनता उन्हें राष्ट्रपिता के रूप में याद करती है। अब उनका जन्मदिन पूरी दुनिया में अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सन् 1915 ई. में दक्षिण अफ्रीका से भारत आने के साथ ही उन्होंने काँग्रेस को व्यापक जन संगठन में परिवर्तित करने का कार्य आरंभ कर दिया था। पहली बार दलित आदिवासी, पिछड़े वर्ग के पुरूष एवं महिलाएँ काँग्रेस को अपना समझने लगे थे। राष्ट्रीय राजनीति में हमारा भी कोई स्थान है ऐसा विश्वास शोषित जनता के मन में पहली बार गाँधीजी ने पैदा किया। उन्होंने काँग्रेस को लोक आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया। पृथक–पृथक संकुचित अस्मिताओं की जगह राष्ट्रीय अस्मिता पैदा की, और वे हिन्दुस्तान के बापू बन गये। गाँधी जी के उदार राष्ट्रवाद में जात–पात, पंथ, लिंग आदि के लिए कोई स्थान नहीं था इससे सारी जनता उनके पीछे चलने लगी और किसी भी जन आन्दोलन के सामने कोई शक्ति नहीं टिकी और अंततः अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा।

गाँधी जी को लोग हमेशा भारत की आजादी की लड़ाई के नेता के रूप में याद करते हैं और बहुत हद तक यह सही भी है पर वास्तव में उनकी असली लड़ाई तो आज की भौतिकवादी, भोगवादी सभ्यता के विरुद्ध थी यह लड़ाई भारत की आजादी की लड़ाई से अधिक महत्वपूर्ण थी।

गाँधीजी विज्ञान के विरोधी नहीं थे पर वे उसके अविवेकपूर्ण उपभोग के विरोधी थे। उन्होंने चरखे को आदर्श बनाकर इस भौतिक एवं भोगवादी सभ्यता से लड़ाई ली और सारी दुनिया को उस लड़ाई से लड़ने का रास्ता दिखलाया, इसलिये आज जब भोगवादी सभ्यता के भयंकर परिणाम से सारी मानवता कराह रही है तब देश विदेश में जगह–जगह लोगों का ध्यान गाँधीजी की ओर जा रहा है और आचार–विचार दोनों क्षेत्रों में गाँधी जी को इक्कीसवीं सदी के मसीहा के रूप में देखा जा रहा है। वे अपने जीवनकाल से ज्यादा आज सारी दुनिया में प्रासंगिक हो रहे हैं।

महापुरुष जब हमारे बीच रहते हैं तब हम उनका सही मूल्यांकन नहीं करते, वे प्रकाश स्तम्भ के समान होते हैं जब हम उनसे दूर जाते हैं तब हमें उनकी कमी खलती है और तब उनके आचार–विचार और सिद्धान्त हमारे मार्गदर्शक बनते हैं।

आजादी के बाद भी हम गरीबी, बेकारी, अज्ञानता आदि से मुक्त नहीं हुए। पहले हम गुलामी को दोष देते थे पर अब हम किसे दोष दें। माना हमने पिछले वर्षों में हर क्षेत्र में उन्नति की है। अरबों–खरबों रुपये खर्च किये हैं पर क्या हम आज भी गरीबी, बीमारी, भुखमरी, आदि को देश से दूर कर पाये। आज गरीब– अमीर का फासला और बढ़ गया है।

हमारे पास प्राकृतिक संसाधनों की कमी नहीं है, मनुष्य में शक्ति की कमी नहीं है। हमारे पास हजारों साल की तपस्या और अनुभव से विकसित और परखी हुई समाज व्यवस्था और परंपरायें हैं। जीवन के ऊँचे मूल्य और आदर्श हैं फिर भी हम आज इस स्थिति में क्यों है? आज लोगों का जीवन मुश्किल में बीत रहा है, संसार आतंक के साये में है और पूरा विश्व युद्ध की कगार पर है। निश्चित ही आज हमें गाँधीजी ज्यादा याद आ रहे हैं, यदि हमने उनका मार्ग अपनाया होता, उनके आदर्शों पर चले होते तो निश्चित ही स्थिति दूसरी होती।

गाँधीजी ने बहुत पहले ही चेतावनी दे दी थी कि आजकल दुनिया में जो भोगवादी सभ्यता, भौतिक आवश्यकता की उत्तरोत्तर बढ़ते जाने की प्रवृत्ति है वह मनुष्य जाति को तबाह कर देगी। आज जिसके पास अधिक संपत्ति है वह अधिक सभ्य और सुंस्कृत माना जाता है। हम पहले दूसरों को सुखी देखकर प्रसन्न होते थे पर आज पड़ोसियों में ईर्ष्या और जलन दिखाई देती है, आर्थिक क्षेत्र में अधिक मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जिससे समाज में असमानता बढ़ रही है ऐसे में गाँधीजी की याद आना स्वाभाविक है।

गाँधीजी के एकादश व्रत जिनका उन्होंने जीवन भर प्रयोग किया और सफलता पाई आज हमें वह सब याद आ रहे हैं।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीरिक श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जनं, सर्वधर्म समानत्वं, स्वदेशी, स्पर्श भावना ये एकादश व्रत हैं। अहिंसा का पहला अर्थ निर्भयता है और दूसरा अर्थ सबसे प्रेम और सहयोग। सत्य को वे परमेश्वर मानते थे इसीलिए असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने इन्हीं का प्रयोग किया और सफल रहे। एकादश व्रत गाँधीजी की सबसे बड़ी देन है जो हमेशा–हमेशा मानवता का मार्गदर्शन करती रहेगी।

लोकतंत्र में वे नैतिकता और सामाजिक शुद्धिकरण के पक्षकार थे। वे कहते थे स्वराज को लोग अच्छी तरह समझने में भूल न करें, संक्षेप में विदेशी सत्ता से पूर्ण मुक्ति और साथ ही संपूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता ही स्वराज है। वे भारत के संपूर्ण गाँवों को स्वावलंबी बनाना चाहते थे, आज वे हमारे बीच मौजूद नहीं हैं पर ग्राम स्वराज की उनके लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में हम निरंतर बढ़ रहे हैं। उनके विचार ही आज हमारे मार्गदर्शक हैं।

गाँधीजी ने हमें एक अचूक मंत्र दिया है–''मैं आपको एक मंत्र देता हूँ जब भी आप दुविधा में हों या आपको अपना स्वार्थ प्रबल होता दिखाई दे तो यह नुस्खा आज़मा कर देखियेगा। अपने मन की आँखों के सामने किसी ऐसे गरीब और असहाय व्यक्ति का चेहरा लाइए जिसे आप जानते हों और अपने आपसे पूछिये कि आपकी करनी उसके किस काम आयेगी। क्या उसे अपना जीवन और भविष्य बनाने में कुछ मदद मिलेगी? दूसरे मायने में क्या आपकी करनी हमारे देश के लाखों–करोड़ों भूखे–नंगे लोगों को स्वराज की राह दिखाएगी? बस इतना सोचते ही आपकी सारी दुविधायें दूर हो जावेगी और स्वार्थ पिघल कर बह जायेगा''।

गाँधीजी सच्चे मन से हर गरीब के आँसू पोंछना चाहते थे, हिन्दू, मुस्लिम एकता के वे प्रबल पक्षकार थे। इसी तरह अस्पृश्यता निवारण में भी उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आज जब हमें समाज में बड़े पैमाने पर ईर्ष्या, द्वेष, कलह, हिंसा और अशान्ति नजर आती है, तब हमें बस गाँधीजी याद आते हैं, उनके सिद्धान्त–विचार, उनका सादा जीवन और सबसे बड़ी चीज निर्भयता, 14 वर्षों तक लगातार मृत्यु उनके पीछे घूमती रही पर वे अपना कार्य पूर्ण मनोयोग से करते रहे।

आज गाँधी जी हमारे बीच नहीं हैं पर उनके विचार हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। आज गाँधीजी के जीवनकाल से अधिक समस्यायें है इसलिए आज गाँधीजी ज्यादा प्रासंगिक हैं।

उनकी मृत्यु पर नेहरू जी ने कहा था, ज्योति बुझ गई पर नहीं, वह नहीं बुझी, वह हजारों साल भी नजर आती रहेगी। दुनिया उसे देखेगी और अनगिनत ह्रदयों को सांत्वना देती रहेगी। वह जीवन शाश्वत सत्यों का प्रतिनिधित्व करती रहेगी और लम्बी राह दिखाती रहेगी।

महापुरुष कभी मरते नहीं है वरन् उनके आचार–विचारों से मानवता हमेशा मार्गदर्शन लेती है, गाँधीजी आज हमारे लिये पहले से ज्यादा प्रासंगिक हैं, पूरी दुनिया उनके विचारों को आत्मसात कर रही है वे निश्चित ही इक्कीसवीं सदी के मसीहा हैं।

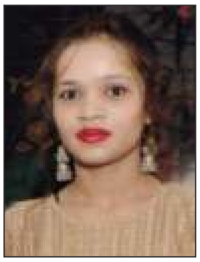

पूनम विश्वकर्मा
(बी.ए.-प्रथम सेमेस्टर)

सरदार बल्लभ भाई पटेल

सरदार बल्लभ भाई झाबेर भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को हुआ। जो सरदार पटेल के नाम से लोकप्रिय हुये। उन्होंने भारत के पहले उप प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। वे एक अधिवक्ता और राजनेता थे जो भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के एक वरिष्ठ नेता और भारतीय गणराज्य के संस्थापक पिता थे। जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए देश के संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाई और एक एकीकृत स्वतंत्र राष्ट्र में एकीकरण का मार्गदर्शन किया। भारत और अन्य जगहों पर उन्हें अक्सर हिन्दी, उर्दू और फारसी में सरदार कहा जाता है। जिसका अर्थ है 'प्रमुख'। उन्होंने भारत के राजनीतिक एकीकरण और 1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान ग्रहमंत्री के रूप में कार्य किया।

जीवन परिचय

सरदार पटेल का जन्म नाडियाद, गुजरात में एक (गुर्जर) पाटीदार जाति में हुआ था। वे झाबेरभाई पटेल एवं लाडवा देवी की चौथी संतान थे। सोमभाई, नरसीभाई और बिट्टभाई उनके अग्रज थे। उनकी शिक्षा मुख्यतः स्वाध्याय से ही हुई। लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापिस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गाँधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया।

खेड़ी संघर्ष

स्वतंत्रता आन्दोलन में सरदार पटेल का सबसे पहला और बड़ा योगदान खेड़ा संघर्ष में हुआ। गुजरात का खेड़ा खण्ड (डिविजन) उन दिनों भयंकर सूखे की चपेट में था। किसानों ने अंग्रेज सरकार से भारी कर में छूट की मांग की जब यह स्वीकार नहीं किया गया तो सरदार पटेल, गाँधीजी एवं अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया और उन्हें कर न देने के लिये प्रेरित किया। अन्त में सरकार झुकी और उस वर्ष करों में राहत दी गयी। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी।

आजादी के बाद

यद्यपि अधिकांश प्रान्तीय काँग्रेस समितियाँ पटेल के पक्ष में थी, गाँधीजी की इच्छा का आदर करते हुए पटेल ने प्रधानमंत्री पद की दौड़ से अपने को दूर रखा और इसके लिये नेहरु का समर्थन किया। उन्हें उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री का कार्य सौपा गया किंतु इसके बाद भी नेहरु और पटेल के सम्बन्ध तनावपूर्ण ही रहे। इसके चलते कई अवसरों पर दोनों ने ही अपने पद का त्याग करने की धमकी भी दे दी थी।

गृहमंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देशी रियासतों (राज्यों) को भारत में मिलाना था। इसको उन्होंने बिना किसी रक्तपात के सम्पादित कर दिखाया। केवल हैदराबाद स्टेट के ऑपरेशन पोलो के लिये उनको सेना भेजनी पड़ी। भारत के एकीकरण में उनके महान योगदान के लिये उन्हें लौह पुरुष के रूप में जाना जाता है।

देशी राज्यों (रियासतों) का एकीकरण

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल) में ही वी.पी. मेनन के साथ मिलकर कई देशी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देशी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हें स्वायत्ता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणामस्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी राजवादी ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद स्टेट के राजाओं ने ऐसा करना स्वीकार नहीं किया। जूनागढ़ के नवाब का जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया, किन्तु नेहरु ने कश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। देश की स्वतंत्रता के पश्चात सरदार पटेल उप प्रधानमंत्री पद के साथ प्रथम गृह, सूचना तथा रियासत विभाग के मंत्री भी थे। सरदार पटेल की महानतम देन थी 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण करना। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो। 5 जुलाई 1947 को एक

रियासत विभाग की स्थापना की गई थी। एक बार उन्होंने सुना कि बस्तर , रियासत में कच्चे सोने का बड़ा भारी क्षेत्र है और इस भूमि को दीर्घकालिक आधार पर हैदराबाद की निजाम सरकार खरीदना चाहती है। उसी दिन वे परेशान हो उठे उन्होंने अपना एक थैला उठाया, वी.पी. मेनन को साथ लिया और चल पड़े। वे उड़ीसा पहुँचे वहाँ के 23 राजाओं से उन्होंने कहा 'कुँऐ के मेंढक मत बनो महासागर में आ जाओ' उड़ीसा के लोगों की सदियों पुरानी इच्छा कुछ ही घंटो में पूरी हो गई। फिर वे नागपुर पहुँचे और यहाँ के 38 राजाओं से मिले। इन्हें सैल्यूट स्टेट कहा जाता था यानी जब कोई इनसे मिलने जाता तो तोप से सलामी दी जाती थी। पटेल ने इन राज्यों की बादशाहत को आखिरी सलामी दी। इसके बाद वे काठियावाड़ पहुँचे वहाँ 250 रियासतों में से कुछ तो केवल 20-20 गाँव की रियासतें थी सबका एकीकरण किया। एक शाम वे बम्बई पहुँचे, आसपास के राजाओं से बातचीत की और उनकी राजसत्ता अपने थैले में डालकर चल दिए।

नेहरु और पटेल

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरु व प्रथम उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल में आकाश-पाताल का अंतर था। यद्यपि दोनो ने इंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त की थी परंतु सरदार पटेल वकालत में पं. नेहरु से बहुत आगे थे। तथा उन्होंने सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के विद्यार्थियों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। नेहरु प्रायः सोचते रहते थे और सरदार पटेल उसे कर डालते थे।

नेहरु शास्त्रों के ज्ञाता थे और पटेल शस्त्रों के पुजारी थे। पटेल ने भी ऊँची शिक्षा पाई थी परंतु उनमें किंचित भी अहंकार नहीं था, वे स्वयं कहा करते थे मैने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊँची उड़ाने नहीं भरी। मेरा विकास कच्ची झोपड़ियों में गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है। पं. नेहरु को गाँव की गंदगी तथा जीवन से चिढ़ थी । वे अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति के इच्छुक थे तथा समाजवादी प्रधानमंत्री बनना चाहते थे।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

31 अक्टूबर 2013 को सरदार बल्लभ भाई पटेल की 137वीं जयंती के मौके पर गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के नर्मदा जिले में सरदार बल्लभ भाई पटेल के एक नए स्मारक का शिलान्यास किया। यहाँ लौह से निर्मित सरदार पटेल का एक विशाल प्रतिमा लगाने का निश्चय किया गया। इस स्मारक का नाम एकता की मूर्ति (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) रखा गया है। यह मूर्ति स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी (93 मी.) से दोगुनी ऊँची है। इस प्रतिमा को एक छोटे चट्टानी द्वीप पर स्थापित किया गया है।

पटेल का नाम सरदार क्यूं पड़ा

सरदार बल्लभ भाई पटेल को सरदार नाम बारडोली सत्याग्रह के बाद मिला। जब बारडोली कस्बे में सशस्त्र सत्याग्रह करने के लिए उन्हें सर्वप्रथम बारडोली का सरदार कहा गया बाद में सरदार उनके नाम के साथ ही जुड़ गया।

महात्मा गाँधी और सरदार बल्लभ भाई पटेल

सरदार पटेल एक सम्पन्न जमींदार परिवार से थे। जो लंदन से बैरिस्टरी करके लौटे थे। उन दिनों महात्मा गाँधी को वे ठीक से जानते नहीं थे, इसी कारण खास तवज्जो नहीं देते थे लेकिन एक सभा में महात्मा गाँधी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने गुजरात में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन संभालने की जिम्मेदारी उठा ली।

सरदार पटेल पर आधारित फिल्म

साल 1993 में सरदार बल्लभ भाई पटेल की बायोपिक फिल्म "सरदार पटेल" आई थी। जिसे केतन मेहता द्वारा निर्देशित किया गया था। इसमें अभिनेता परेश रावल ने सरदार पटेल की भूमिका निभायी थी।

सर्वोच्च सम्मान

साल 1991 में मरणोपरांत उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से नवाजा गया। वहीं उनके जन्मदिन 31 अक्टूबर को साल 2014 में "राष्ट्रीय एकता दिवस" के रूप में घोषित किया गया।

निधन

साल 1950 में सरदार बल्लभ भाई पटेल का स्वास्थ्य खराब रहने लगा वहीं 2 नवबंर साल 1950 में उनकी तबीयत इतनी बिगड़ गई कि वे बिस्तर से भी नहीं उठ पाते थे। इसके बाद 15 दिसम्बर 1950 को हृदयाघात से उनका निधन हो गया।

शहीद भगत सिंह

अर्पित जैन
(बी.ए.-प्रथम सेमेस्टर)

शहीद भगतसिंह का जन्म 28 सितम्बर 1907 को ग्राम बंगा जिला यलपुर पंजाब जो कि अब पाकिस्तान में हुआ था। वे हमारे देश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी तथा क्रांतिकारी वीर थे। उन्होंने चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर देश की आजादी के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया। पहले लाहौर में साण्डर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय संसद (सेंट्रल असेम्बली) में बम–विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन्होंने असेम्बली में बम फेककर भी भागने से मना कर दिया, जिसके फलस्वरूप उन्हें 23 मार्च 1931 को राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया गया। सारे देश में उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया जाता है।

उनके पिता सरदार किशन सिंह एवं माता विद्यावती कौर थीं। जो कि एक जाट (सिख) परिवार था। उनका परिवार पूर्णतः आर्य समाजी था। अमृतसर में 23 अप्रैल 1919 को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिये "**नौजवान भारत सभा**" की स्थापना की थी। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 26 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि चन्द्रशेखर आज़ाद के साथ उनकी पार्टी **हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन** से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया **'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन'** इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था। भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 सितम्बर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जे.पी.सांडर्स को मारा था। इस कार्यवाही में क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल असेम्बली के सभागार, संसद भवन में अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके थे। बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के समय भगत सिंह की आयु मात्र 12 वर्ष थी। इस हत्याकाण्ड की सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गये। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं? गाँधीजी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गाँधीजी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिए रास्ता चुनने लगे। उन्होंने कई जुलूसों में भाग लेना प्रारंभ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। उनके दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु इत्यादि थे। काकोरी काण्ड में क्रान्तिकारियों को फाँसी व कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने उद्विग्न हुए कि उन्होंने अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया **" हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन" ।**

सन् 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए बहुत प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठीचार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिण्टेंडेंट स्काट को मारने की योजना बनायी। योजना के अनुसार भगत सिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा में टहलने लगे। उधर जयगोपाल अपनी साइकिल को लेकर ऐसे बैठ गये जैसे कि वो खराब हो गयी हो। गोपाल के इशारे पर दोनों सचेत हो गये। उधर चन्द्रशेखर आजाद पास के डी.ए.बी. स्कूल की चारदीवारी के पास छिपकर घटना को अंजाम देने में रक्षक का काम कर रहे थे।

17 दिसम्बर 1928 को करीब सवा चार बजे, ए.एस.पी. साण्डर्स के आते ही राजगुरु ने एक गोली सीधी उसके सर में मारी जिसके तुरंत बाद वह होश खो बैठे। इसके बाद भगत सिंह ने 3–4 गोली दाग कर उसके मरने का पूरा इन्तजाम कर दिया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही ने इनका पीछा करना शुरु किया। जिसे भी चन्द्रशेखर आजाद ने गोली मार दी। इस तरह इन लोगों ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला ले लिया।

भगतसिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून खराबा न हो और अँग्रेजों तक उनकी 'आवाज' भी पहुँचे। हाँलाकि प्रारम्भ में उनके दल के सब लोग ऐसा नहीं सोचते थे पर अन्त में सर्वसम्मति से भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त का नाम चुना गया। निर्धारित कार्यक्रम के अुनसार अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में इन दोनों ने एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहाँ कोई मौजूद नहीं था। ताकि किसी को भी नुकसान न पहुँचे। पूरा हॉल धुएँ से भर गया। भगतसिंह चाहते तो भाग भी सकते थे। पर उन्होंने पहले ही सोच रखा था कि उन्हें दण्ड स्वीकार है चाहे वह फाँसी ही क्यों न हो। अतः उन्होंने भागने से मना कर दिया। उस समय वे दोनों खाकी कमीज तथा निकर पहने हुए थे। बम फटने के बाद उन्होंने इंकलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद–मुर्दाबाद का नारा लगाया और अपने साथ लाए हुए पर्चे हवा में उछाल दिये। इसके कुछ ही देर बाद पुलिस आ गयी और दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

जेल में भगत सिंह करीब 2 साल रहे इस दौरान वे खत लिखकर अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते रहे। जेल में रहते हुए उनका अध्ययन बराबर जारी रहा। उनके उस दौरान लिखे गये लेख व सगे सम्बन्धियों को लिखे गये पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूँजीपतियों को अपना शत्रु बताया। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहे एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। उन्होंने जेल में अँग्रेजी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था ''मैं नास्तिक क्यों हूँ''। जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हड़ताल की। उनके एक साथी यतिन्द्रनाथ दास (जतिनदास) ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे।

26 अगस्त 1930 को अदालत ने भगत सिंह को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 129 (302) तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 120 के अंतर्गत अपराधी सिद्ध किया। 07 अक्टूबर 1930 को अदालत के द्वारा 68 पृष्ठों का निर्णय दिया गया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी की सजा सुनाए जाने के साथ ही लाहौर में धारा 144 लगा दी गई। इसके बाद भगत सिंह की फाँसी की माफी के लिए प्रिवी परिषद में अपील दायर की गई परन्तु यह अपील 10 जनवरी 1931 को रद्द कर दी गई। इसके बाद तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष पं. मदन मोहन मालवीय ने वायसराय के सामने सजा माफी के लिए 14 फरवरी, 1931 को अपील दायर की कि वह अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए मानवता के आधार पर फाँसी की सजा माफ कर दे। भगत सिंह की फाँसी की सजा माफ करवाने हेतु महात्मा गाँधी ने 17 फरवरी 1931 को वायसराय से बात की फिर 18 फरवरी, 1931 को आम जनता की ओर से भी वायसराय के सामने विभिन्न तर्कों के साथ सजा माफी के लिए अपील दायर की गयी। यह सब कुछ भगत सिंह की इच्छा के खिलाफ हो रहा था। क्योंकि भगत सिंह नहीं चाहते थे कि उनकी सजा माफ की जाए।

23 मार्च 1931 को शाम करीब 07 बजकर 33 मिनिट पर भगत सिंह अपने दो साथियों सुखदेव व राजगुरु के साथ फाँसी पर जाने से पहले लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें सूचना दी कि उनकी फाँसी का वक्त आ गया है, तो उन्होंने कहा था ''ठहरिये पहले एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले।'' फिर एक मिनिट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले– ''ठीक है अब चलो।'' फाँसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे– ''मेरा रंग दे बसन्ती चोला।

निःशस्त्र अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से सर्वश्रेष्ठ होगी – महात्मा गाँधी

विज्ञान के शिखर छूतीं भारत की महिलाएं

हमारे देश की महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। पुरूषों के साथ कंधी से कंधे मिलाकर देश की प्रगति में अपना योगदान दे रही हैं। थल, जल या वायु हर जगह और हर क्षेत्र में, कठिन से कठिन परिस्थितियों में महिलाएं पुरूषों के साथ या फिर उनसे आगे निकल रही हैं। आज की महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में नये शिखर छू रही है। विज्ञान का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। आम तौर पर यह माना जाता है कि विज्ञान पुरूषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र है और महिलाएं महज कला,संस्कृति और अन्य मानविकी विषयों में ही महारत हासिल कर पाती हैं। लेकिन विज्ञान के प्रति अपनी ललक और प्रतिबद्धता से देश की अनेक महिलाओं ने रूढ़िवादी सोच को तोड़कर एक मिसाल कायम की हैं।

विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी भारतीय महिलाएं

आज हमारे देश की महिला वैज्ञानिक मिसाइल कार्यक्रम से लेकर अंतरिक्ष अभियानों, दवाओं के विकास से लेकर अन्य मोर्चों पर सफलता की नई गाथा लिखते हुए देश–दुनिया की प्रगति व सुरक्षा में अपना अहम योगदान दे रही हैं। जब हम वैज्ञानिकों की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में स्टीफन हॉकिंग, आइजक न्यूटन, एपीजे अब्दुल कलाम, सीवी रमन जैसे पुरूष वैज्ञानिकों की ही छवि उभर कर सामने आती है, न कि जानकी अम्माल, आसीमा चटर्जी, अन्ना मणि जैसी महिला वैज्ञानिकों की।

तमाम तरह की चुनौतियों के बावजूद इसरो में चंद्रयान मिशन हो या फिर मंगल मिशन की सफलता, नासा से लेकर नोबल पुरूस्कार तक हर क्षेत्र में हमारी महिला वैज्ञानिकों ने अपना लोहा मनवाया है।

भारतीय महिलाएं विज्ञान के क्षेत्र में

11 फरवरी को ''अंतर्राष्ट्रीय महिला एवं बालिका विज्ञान दिवस'' है । जिस सदी में महिलाओं को घर की चारदीवारों में कैद करके रखा जाता था उसी समय में सामाजिक बेड़ियों को तोड़कर विज्ञान की दुनिया में कीर्तिमान स्थापित करने वाली कुछ महिला वैज्ञानिकों के नाम इस प्रकार हैं।

आसीमा चटर्जी– केंसर, मिर्गी और मलेरिया रोधी दवाओं के विकास के लिये प्रसिद्व हैं। वे पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट ऑफ साइंस की उपाधि दी गई थी।

अन्ना मणि– मौसम वैज्ञानिक के तौर पर प्रसिद्व सौर विकिरण, ओजोन परत और वायु ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

किरण मजूमदार शा– विज्ञान की दुनिया का बहुचर्चित नाम है। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अहम योगदान देने वाली किरण मजूमदार ने डायबिटीज, केंसर और आत्म प्रतिरोधी बीमारियों पर शोध के साथ एंजाइमों के निर्माण के लिये एकीकृत जैविक दवा कंपनी बायोकॉन लिमिटेड की स्थापना की।

गगनदीप कांग– गगनदीप कांग दक्षिण भारत के वेल्लोर स्थित चिकित्सा महाविद्यालय में एक क्लीनिशियन वैज्ञानिक हैं। वह दस्त रोगों पर एक प्रमुख शोधकर्ता है जो बच्चों में रोटा वायरस संक्रमणों पर एक प्रमुख शोध के साथ, और रोटावायरस टीके के परीक्षण पर केंद्रित है।

मुथैया वनिता– ये भारत में दूसरे चंद्रयान मिशन की प्रोजेक्ट डायरेक्टर रहीं । मुथैया इसरो में इस स्तर पर काम करने वाली पहली महिला वैज्ञानिक हैं। इन्होनें मैपिंग के लिये इस्तेमाल होने वाले पहले भारतीय रिमोट सेंसिंग उपग्रह कार्टोसैट–1 और दूसरे महासागर अनुप्रयोग उपग्रह ओशन सैट–2 मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साल 2006 में इन्हें सर्वश्रेषठ महिला वैज्ञानिक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रितु करिधल– चंद्रयान–1 मिशन में डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर रह चुकी रितु करिधल भारत के सबसे महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान–2 की मिशन डायरेक्टर थीं। साल 2007 में इन्हें इसरो के यंग साइंटिस्ट ऑवार्ड से सम्मानित किया गया।

कल्पना चावला–भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला के बारे में हर कोई जानता है। कल्पना अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला थी। वह 376 घंटे 34 मिनिट तक अंतरिक्ष में रहीं। इस दौरान उन्होंने धरती के 252 चक्कर लगाए थे। 1 फरवरी 2003 को हुई अंतरिक्ष इतिहास की दुर्घटना में कल्पना चावला सहित सभी सातों अंतरिक्ष यात्रियों की मृत्यु हो गई थी।

सुनीता विलियम्स– सुनीता विलियम्स अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के जरिये अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला हैं। सुनीता विलियम्स ने एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में 195 दिनों तक अंतरिक्ष में रहने का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

आज के आधुनिक युग में महिलाएं धरती से आसमान तक हर जगह पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहीं हैं, लेकिन आज भी उच्च शिक्षा से लेकर के शोध संस्थानों व कार्यक्षेत्र तक, हर जगह पर उनके योगदान को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि एक पुरूष के योगदान को दिया जाता है। एक सर्वेक्षण से पता चला है कि भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) के 1.044 सदस्यों में से केवल 89 महिलाएं हैं जो कुल संख्या का 9 फीसदी हैं। कुल मिलाकर यह कहना गलत नही होगा कि समय के साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं ने मेहनत और लगन से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उनके अविष्कारों व प्रयोगों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति में चार चांद लगाए हैं। लेकिन सरपट भाग रही इस विज्ञान की दुनिया में उनकी रफ्तार का पहिया तेज करने की आवश्यकता है।

इसलिए यथास्थिति में तेजी से बदलाव लाने के लिये हमारे परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, कंपनियों और सरकारी संस्थान, सभी को साथ मिलकर कार्य करना होगा। साथ ही, वैज्ञानिक जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाली महिलाओं की सफलता की कहानियां जन–जन तक पहुंचानी होंगी जिससे संकुचित मानसिकता वाले तबके की सोच में बदलाव लाया जा सके और देश की बेटियां बढ़–चढ़कर विज्ञान के क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। इसलिए महिलाओं को प्रोत्साहन देने के लिए भारत सरकार ने कई पहल की शुरूआत की है।

डॉ. मोनिशा मिश्रा
पूर्व सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र

युवाओं में बढ़ता मानसिक तनावः निदान एवं समाधान

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का एहसास होता है, कि वह अपने जीवन के सामान्य तनावों को सामना कर सकता है, उत्पादक और फलदायी के रूप में काम कर सकता है और अपने समुदाय में योगदान देने में सक्षम है, लेकिन आजकल के भागदौड़ भरे जीवन में तनाव एक आम समस्या बन गई है। वर्तमान समय में हर दूसरा व्यक्ति तनाव और चिंता से ग्रस्त है। लम्बे समय तक इस समस्या से घिरे रहना आपको शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार कर सकता है। किसी से आगे निकलने की होड़ या स्पर्धा, अकेलापन, भावनात्मक लगाव की कमीं का अहसास, तरह–तरह की जिम्मेदारियों के चलते लोगों के तनाव का स्तर बढ़ता ही जा रहा है, खासकर युवाओं में। नौकरी, रिश्ते, अकेलापन, मित्र और सामाजिक मानदंड भी उन पर एक दबाव डालते है, उनके पास बहुत से विकल्प मौजूद हैं और भविष्य के प्रति उम्मीदें भी अधिक हैं। हर देश में युवा बहुमूल्य संसाधनों में से एक है, यदि उन्हें आगे बढ़ने के लिए आवश्यक जीवन कौशल दिया जाये, तो वे रोजमर्रा की जिंदगी की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकते हैं। जीवन कौशल, युवाओं में जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य एवं क्षमता को प्रोत्साहित करता है। मानसिक स्वास्थ्य सुधार में लोगों को जीवन में विभिन्न तनावों के प्रति लचीला बनाना शामिल है। जीवन कौशल नशीली दवाओं की लत, हिंसा और तनाव और सनसनी तलाश को कम करने में, बच्चों और युवाओं में अपराध को कम करने, उत्पादकता में सुधार, तनाव से निपटने के कौशल और लचीलेपन को बढ़ाने में प्रभावी हैं।

प्रस्तावना–

किसी भी देश के युवा उस देश की उर्जा, पराक्रम और साहस का प्रतीक हैं। उन पर देश को आगे ले जाने का जिम्मा है। प्रत्येक युवा जीवन में खूब सारी सफलता, पद–प्रतिष्ठा, मान–सम्मान, धन–दौलत, ऐश्वर्य, सुख–शांति, समाज में स्थायी और सम्मानजनक स्थान और छोटों और बड़ों में अपनी बात मनवाने की आंतरिक गहन इच्छा रखता है। और जब ये चीजें मनमाफिक और योग्यतानुसार नहीं मिल पाती है, तो युवा कुंठा, पीड़ा, चिड़चिड़ापन, छुपी हुई इच्छाओं का जागृत होना, तनाव, अज्ञात, भय आदि का शिकार हो जाता है। आज की युवा पीढ़ी पहले से कहीं अधिक तनाव महसूस करती है, क्योंकि दुनिया इतनी तेजी से बदल रही है। प्रौद्योगिकी इतनी तेजी से आगे बढ़ रही हैं कि आज के समाज में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए युवाओं पर आगे बढ़ने का दबाव महसूस होता है। आज की व्यस्त लाइफ स्टाइल और वर्किंग स्टाइल में चिंता और तनाव एक आम बात है। कई बार उन्हें अपने व्यक्तित्व को निखारने का मौका ही नहीं मिलता। वे कैरियर और परिवार को लेकर तनाव में रहते है। शारीरिक मेहनत की कमी, भोजन में पौष्टिक तत्वों का अभाव, कठिनाइयों से लड़ने की क्षमता में कमी, प्रेम में असफलता आदि कारणों से नशे का सहारा भी लेते है। किसी लक्ष्य की प्राप्ति अथवा मांग को पूरा करने में जब हम अपने प्रयत्नों के पश्चात् भी सफल नहीं हो पाते तो मानसिक दबाव का अनुभव करते है और इस दबाव की अधिकता के परिणामस्वरूप तनाव की स्थिति उत्पन्न होती हैं। कुछ युवा, परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को ढाल लेते हैं और तनाव से अपने को काफी हद तक बचाव कर लेते हैं और बाकी युवा भावुकता और अयोग्यता के चक्रव्यूह में फंसकर दुःखरूपी पहाड़ के नीचे जीवन काटने को मजबूर हो जाते हैं। इसके साथ में देश में चारों ओर फैली बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, मंहगाई, आरक्षण, बढ़ते हुए भौतिक संसाधन बहुत से ऐसे मुद्दे हैं जिनके कारण आज युवा पीढ़ी चाहकर भी आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। समस्या तब होती है जब तनाव आवश्यकता से अधिक बढ़ जाता है और इसका स्वास्थ्य पर भी प्रभाव होने लगता है।

तनाव एक तरह का मानसिक विकार है। किसी भी एक नकारात्मक विचार का हमारे मस्तिष्क पर हावी हो जाना, व्यक्ति की मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डालता है जिससे हमारा दिमाग सही तरीके से काम नहीं करता, और खुशी के अवसर भी खुशी महसूस नहीं करता। तब उस स्थिति को तनाव की स्थिति कहा जाता है। तनाव से ग्रस्त व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से बीमार होता है। इसलिए यह जरूरी है कि तनाव को बढ़ने से रोकने के लिए समय रहते ही उपाय किये जाएं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिये एक ऐतिहासिक पहल थी, जिसमें शिक्षा क्षेत्र में गहन सुधार और एक प्रणालीगत बदलाव का आह्वान किया गया था। इस नवीन नीति में जीवन कौशल को पाठ्यक्रम के अंग के रूप में शामिल करने की अनुशंसा की गई, जहाँ दृष्टिकोण यह है कि हमारी भावी पीढ़ियों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शिक्षा को महज शैक्षणिक परिणामों तक सीमित नहीं रहना

चाहिये, बल्कि हमें इससे आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

युवा पीढ़ी में मानसिक तनाव के लक्षण

लंबे समय तक या लगातार होने वाले तनाव से युवाओं के व्यवहार में परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। जो किसी व्यक्ति की प्रतिरक्षा प्रणाली और शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। सर में दर्द रहना, किसी काम में मन न लगना, अधिक या कम सोना, अधिक या कम खाना, अपने को दूसरों से कम आंकना, अपने उपर विश्वास न होना, मौत या खुदकशी का ख्याल आना, खुश होने वाली बात पर भी गुस्सा आना, अत्यधिक घूम्रपान, मादक पदार्थो जैसे–ड्रग्स का अत्यधिक सेवन, नाखून चबाने तथा बाल खींचने जैसी आदत, जरा–जरा सी बात पर आक्रमक होना, जब–तब दुर्घटना का शिकार हो जाना, नर्वस होना एवं मन का विचलित होना। अनिद्रा यानि नींद न आना तथा थकान का होना, उच्च रक्तचाप, सीने में दर्द, पेट में दर्द और सिरदर्द, ध्यान केन्द्रित करने या निर्णय लेने में कठिनाई आना, कोई पुराना दर्द उभर आना, कब्ज यानि कान्सिटपेशन की शिकायत आदि तनाव के लक्षण हैं।

युवाओं में मानसिक तनाव के कारण

आजकल के माहौल में युवाओं को तनाव और अवसाद जैसी समस्याएं घेरने लगती हैं। काम का दबाव, ऑफिस का माहौल, आर्थिक बोझ, पारिवारिक परेशानियां आदि कई वजहें हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी का हिस्सा है। इसके अलावा खराब लाइफस्टाइल, घटता फ्रेन्ड सर्किल और काम के बढ़ते घंटे भी इसके लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। ऐसे में बढ़ती चिंता, मानसिक तनाव और अवसाद युवाओं के स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित करता है। मानसिक तनाव एक आवसादिक या चिंताजनक स्थिति होती है जिसमें व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। अधिकांश युवा तनाव तब अधिक अनुभव करते हैं, जब उन्हें कोई स्थिति खतरनाक, कठिन या दर्दनाक लगती है और उनके पास इससे निपटने के संसाधन नहीं होते हैं। उनके मन में नकारात्मक विचार या भावनाएँ स्थान ले लेते है। मानसिक तनाव युवाओं की भावनाओं, विचारों और शारीरिक अवस्था पर असर डालता है।

युवाओं के तनाव के कई कारण हो सकते हैं । कुछ प्रमुख कारण निम्न हैं

स्थूलीकरण की स्थितियां– व्यक्ति के पास नौकरी या व्यवसाय से संबंधित चिंताएँ, वित्तीय समस्याएँ या आर्थिक संकट, पारिवारिक समस्याएँ, उत्तरदायित्वों को निभाने में कठिनाइयाँ तनाव का कारण हो सकती है।

व्यक्तिगत कारण– व्यक्तिगत जीवन में घटने वाली घटनाओं और स्थितियों के कारण भी तनाव उत्पन्न हो सकता है, जैसे कि संबंधों में खिंचा–खिंची, कठिनाइयाँ, समस्याएँ और तकलीफें। समस्याएं अधिक होने पर दुशचिन्ता का दुष्चक्र चल पड़ता है।

जीवन में परिवर्तन – बड़े–छोटे जीवन के परिवर्तन भी तनाव का कारण बन सकते हैं जैसे कि स्थान परिवर्तन, नए माहौल में आदाप्त होना आदि।

सामाजिक दबाव–सामाजिक दबाव, सामाजिक मान्यताओं की अनुपस्थिति, या संबंधों में समस्याएँ भी तनाव के कारण बन सकते हैं।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ– शारीरिक रोग या समस्याएँ भी मानसिक तनाव का कारण बन सकती हैं, क्योंकि शारीरिक बीमारियाँ या रोग मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर डाल सकती है।

अपेक्षाओं की पूर्ति न होना– किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति विशेष से अपेक्षा रखना, किन्तु उसका प्राप्त न हो पाना। युवा वर्ग को सही दिशा देने वाले नहीं मिल पाते जो उन्हें उचित और अनुचित के बीच में अन्तर स्पष्ट कर सके। माता–पिता दोनों ही व्यस्त हैं और नौकरों के सहारे जिन युवाओं का पालन–पोषण हुआ है, उन युवाओं के उनके माता–पिता से सम्बन्ध बेहतर नहीं रहते।

अधिक काम का दबाव– आजकल युवा बहुत सारे काम और जिम्मेदारियों के बीच फॅसे हुए है उनके पर बहुत अधिक दबाव रहता है। दबाव का साझा करने वाले लोग कम है। जिससे उनका तनाव बढ़ जाता है।

अप्रत्याशित बदलाव– आजकल की तेजी से बदलती दुनिया में युवाओं को नई तकनीकों, सोशल मीडिया और नए सामाजिक और आर्थिक प्रबंधन के तरीकों का सामना करना पड़ता है। इसके कारण उन्हें अप्रत्याशित बदलाव के साथ सामर्थ्य विकसित करना होता है, जो तनाव का कारण बन सकता है।

तकनीकी का प्रयोग– आधुनिक जीवनशैली में युवा मोबाइल फोन, कम्प्यूटर और इंटरनेट की दुनिया में इतना व्यस्त हैं कि उसे किसी से बात करने या

समझने का समय ही नहीं है और वह अपने ही काम में ही उलझता चला रहा है।

सफलता की जल्दबाजी– आजकल युवा बहुत जल्दी सफलता पाना चाहते हैं, चाहे कुछ भी हो जाये, जो चाहा वह हासिल होना ही चाहिए। शीघ्र ही अधैर्य हो जाते हैं। कई बार प्रयास करने के बावजूद वो जो पाना चाहते है, जब वह प्राप्त नहीं कर पाते, तब उनके मानसिक तनाव की स्तर बढ़ जाता है। युवा डॉक्टर, इंजीनियर बनकर, धनोपार्जन कर सुख–सुविधा युक्त जीवन निर्वाह करना चाहते हैं, परंतु जब उनका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता, तो उनका मन असंतुष्ट हो उठता है और मानसिक संतुलन गड़बड़ा जाता है।

युवा पीढ़ी का अपना एक नजरिया– युवा पीढ़ी आज ज्यादा स्मार्ट है, उसे तकनीकी की समझ है चाहे टिकिट बुक कराना हो, राशन कार्ड बनवाना हो, आधारकार्ड बनवाना हो। अपने से अनुभवी व्यक्ति की बात को वह समझना नहीं चाहते। साथ ही आजकल की युवा पीढ़ी ने अपने लाइफ स्टाइल को ऑनलाइन और बाहर के अन्हैल्थी फूड को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग समझ लिया है और खेलकूद के लिए उनके पास समय का अभाव होता है। वह अवास्तविक दुनिया में डूबे रहते हैं, उन्हें लगता है कि हर चीज मनोरंजन के लिए बनी है और हम उसका उपयोग कर सकते हैं।

अपने किसी प्रिय का विछोह या मृत्यु हो जाना– परिवार में किसी प्रिय की मृत्यु होने पर युवा की मनोस्थिति विगड़ जाती है एवं परिवार के मुखिया के चले जाने से पारिवारिक जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है और उनकी सारी योजनायें अधूरी रह जाती है। तनाव के साथ कुंठा भी विकसित होती है।

अतः देखा जाए तो हमारी इच्छाएँ और उम्मीदें ही हमारे मानसिक तनाव का कारण बनती हैं। कुछ लोगों को बड़ी से बड़ी बात से भी तनाव नहीं होता और कुछ लोगों को छोटी–छोटी बातों से मानसिक तनाव घेर लेता है। दूसरी ओर सामाजिक दबाव, अकेलापन जैसे अनेक कारण है जिससे युवा वर्ग ग्रस्त है। इसलिए कहा जा सकता है कि हर मनुष्य के तनाव का कारण अलग होता है। यह केवल कुछ उदाहरण हैं, मानसिक तनाव के कारण युवाओं की स्थिति और परिप्रेक्ष्य के आधार पर भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।

मानसिक तनाव से निपटने की युक्तियाँ– आजकल युवा हर छोटी बात का तनाव लेकर बैठ जाते हैं। किसी को अपने भविष्य की चिंता है, तो किसी को अपने बच्चों की पढ़ाई की। लेकिन सच तो यही है कि तनाव लेने से किसी भी परेशानी का हल नहीं मिलता है। तनाव एक ऐसी समस्या है, जो कई बीमारियों की वजह बन सकती है, जिसमें नींद न आने से लेकर पेट संबंधी विकार, मूड ठीक न रहना जैसी समस्याएँ शामिल है। प्रोफेशनल एवं व्यक्तिगत जीवन में आई समस्याओं को लेकर युवा तनाव में हैं। अगर स्थिति गंभीर न हो, तो निम्न उपायों से भी मन को शांत किया जा सकता है एवं जिन्हें नियमित रूप से अपनाकर युवाओं को मानसिक तनाव से निजात पाने में मदद मिलेगी।

स्वस्थ्य जीवन शैली अपनाएँ– संतुलित जीवन शैली अपनाना तनाव प्रबंधन में अहम भूमिका निभाती है। गहरी सांस लें, नियमित रूप से प्राणायाम, दौड़ना, टहलना, तैरना, साइकिल चलाना, व्यायाम एवं ध्यान को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। व्यायाम से एंडोर्फिन निकलता है, जो तनाव को कम करने और मूड को बेहतर बनाने में मदद करता है। ध्यान, योग, प्रोग्रेसिव मसल्स रिलेक्सेशन, गाइडेड इमेजरी, एक्सरसाइज को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाये। मेडिटेशन और एक्सरसाइज एक पॉवरफुल रिलैक्सेशन तकनीक और तनाव बूस्टर है जो तनाव से राहत दिलाने का काम करता है और दिमाग को एक्टिव रखता है। रोजाना आधे घंटे की एक्सरसाइज भी आपके तनाव को दूर करने में बहुत मददगार होगी। इन उपायों से हम अपने तन और मन दोनों को शांत रख सकते हैं। ध्यान मन को शांत करने के लिए सबसे कारगर उपाय है। इसमें न सिर्फ मन शांत होता है, बल्कि समस्याओं को बेहतर तरीके से समाधान करने की क्षमता भी बढ़ती है। ध्यान का मुख्य उद्देश्य होता है जागरूकता। जिसमें निर्णय के बिना सभी विचारों को देखना। इसमें बिना विचारों का प्रवाह रोके, उन्हें शांति से आने दें और अपना फोकस सांसों पर रखें। धीरे–धीरे विचारों का प्रवाह कम होने लगेगा और मन शांत हो जायेगा। सिर की मालिश से भी तनावग्रस्त नशों को आराम पहुचंता है।

पर्याप्त नींद हैं जरूरी– यदि आप रात में 7 से 8 घंटे की एक अच्छी नींद नहीं लेते हैं तो दिनभर थकान महसूस नहीं करते हैं और अपर्याप्त नींद आपके मूड, मेंटल हेल्थ, एनर्जी लेबल और फिजिकल हेल्थ पर बुरा असर डालती है। इसलिए यदि आप तनाव से निजात पाना चाहते हैं तो पर्याप्त मात्रा में नींद अवश्य लें।

संतुलित भोजन करें– आप जो भी खाना खाते है वह आपके मूड, उर्जा और तनाव के स्तर को प्रभावित करता है। आप जितना जंक फूड और पैकेज्ड फूड खाते हैं। आपका दिमाग उतना ही कम सक्रिय होता है। इसलिए अपनी डाइट में ऐसे खाद्य पदार्थ चुनें, जिसमें कार्बोहाइडेट, प्रोटीन, बसा, विटामिन्स एव खनिज लवण का संतुलन हो यानि डाइट में बदलाव करें। जिससे आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहें। कुछ खास तरह के फल तनाव को कम करने में मदद कर सकते हैं, जैसे केला, सेब, अनार, नाशपाती आदि, इनमें मौजूद विटामिन, खनिज लवण, और एंटीऑक्सीडेंट तत्व तनाव को कम करते हैं और शारीरिक–मानसिक तनाव को दूर करने में मदद करते हैं। रात में अच्छी नींद लाने के लिए, तनाव के प्रबंधन के लिए दूध पीना जरूरी है। दूध कैल्शियम और विटामिन डी से भरपूर, हड्डी को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है और मांसपेशियों को आराम देने वाला और मूड स्टेबलाइजर के रूप में जाना जाता है। ग्रीन टी पीने से तनाव हार्मोन कोर्टिसोल का स्तर कम होता है, अवसाद और मनोभ्रंश विकसित होने का खतरा कम होता है।

ब्रेक लें और सेल्फ केयर का अभ्यास करें– काम के दौरान बीच–बीच में ब्रेक लेना भी बहुत जरूरी है। महज 10 से 15 मिनिट का ब्रेक आपको रिचार्ज कर सकता है। ब्रेक के दौरान किसी से बातचीत करें, अपना कोई मनपंसदीदा गेम खेलें या कोई एक्टिविटी करें। इससे थकान व तनाव को दूर करने में काफी हद तक मदद मिलती है।

तनाव की सकरात्मक ऊर्जा का उपयोग करें– अंतिम क्षण तक चीजों को न टालें। यह बहुत तनावपूर्ण है, और यदि आप जल्दी में हैं तो अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना कठिन है। इसके बजाय, तनाव को आपको किसी कार्य पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने दें। यदि आपके पास कोई समय सीमा है, तो अपने आप को सकारात्मक मानसिक प्रोत्साहन दें। ऐसा सोचे कि जो मिल गया वह अच्छा है संतुष्ट रहें और आगे बढ़ें।

समस्याएँ साझा करें– रोजमर्रा की समस्याओं को नजरअंदाज न करें, लेकिन उनके बारे में तनावग्रस्त भी न हों। इसके बजाय, यह पता लगाएं कि उन्हें कैसे संभालना है। और यदि आप निश्चित नहीं कि क्या करना है, तो दूसरों की सहायता और सलाह मॉगने में संकोच न करें। पारिवारिक तनाव, खेल का दबाव, होमवर्क की अधिकता जैसी रोजमर्रा की चुनौतियों से निपटने में हमें जितना अधिक अभ्यास मिलेगा, हम सामान्य तौर पर चुनौतियों से निपटने में उतने ही बेहतर होंगे।

अक्सर लोग दूसरे लोगों से मदद मांगने में झिझकते हैं और खुद को दूसरों से कम आंकने लगते हैं लेकिन आपको यह समझने की जरूरत है कि यदि आप किसी परेशानी में हैं तो और अगर कोई समस्या आपको बहुत ज्यादा परेशान कर रही है, तो उसे अपने किसी करीबी दोस्तों, पार्टनर और परिवार के लोगों के साथ से शेयर करने में कोई बुराई नहीं है। कई बार तनाव या दुख बांटने से कम हो जाता है और उसका बेहतर समाधान भी मिल जाता है। दोस्तों और प्रियजनों के साथ अच्छे रिश्ते किसी भी स्वस्थ जीवनशैली के लिए महत्वपूर्ण है। एक मिनिट के लिए भी आश्वस्त करने वाली आवाज हर चीज को परिप्रेक्ष्य में रख सकती है। ऐसा करने से आप तनाव से राहत पा सकते हैं।

सोशल नेटवर्क बनाएं मजबूत– आप स्कूल, कॉलेज या ऑफिस जहां पर भी जाते हैं, वहां के अपने साथियों के साथ हमेशा संपर्क में रहें। अपने पुराने दोस्तो, परिवार के लोगों को अपने पार्टनर के साथ हमेशा बातचीत करते रहें। इसके अलावा यदि आप किसी संगठन में शामिल है, तो उसमें हमेशा एक्टिव रहे। जिससे जरूरत के समय में लोग आपका साथ दें और आपकी परेशानी सुनें और आपको सलाह दें क्योंकि जब भी तनाव में होते हैं तो हमारा मस्तिष्क इतना एक्टिव नहीं होता है कि किसी निर्णय को पूरी सोच–समझ के साथ लें।

संगीत सुनें और नृत्य करें – यदि आप तनावपूर्ण स्थिति महसूस कर रहे हैं, तो ब्रेक लेने और आरामदायक संगीत सुनने का प्रयास करें। संगीत से शरीर और मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, यह रक्तचाप को कम कर सकता है और तनाव से जुड़े हार्मोन कोर्टिसोल को कम कर सकता है। प्राकृतिक चीजों की आवाज सुन सकते हैं जैसे– पक्षियों की आवाज, समुद्र , झरने की आवाज एवं शास्त्रीय सुगीत भी सुन सकते है।

विशेषज्ञ की मदद लें– अगर आप लगातार तनाव, चिंता से जूझ रहे हैं, तो एक्सपर्ट की सलाह लेने में बिल्कुल भी न हिचकिचाएं। मानसिक स्वस्थ्य रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि इसका सीधा संबंध शारीरिक स्वास्थ्य से होता है। एक्सपर्ट तनाव के कारणों को समझते हुए उससे निपटने की जरूरी सलाह और दवाइयॉ देते हैं, जिससे आप कुछ ही महीनों में इससे बाहर निकल सकते हैं।

पसंदीदा कार्य करें– अगर आपके पास कुछ कौशल है तो खाली समय मिलने पर उसे निखारने की कोशिश करें क्योंकि तनावग्रस्त होने पर घंटो उसी तनाव के साथ लेटे रहने या फोन पर व्यस्थ हो जाते है। बेहतर होगा कि खुद को को अपने पसंदीदा कार्यो में लगाये, जिन कार्यो में आपकी रूचि हो और जिन कार्यो को करने से आपको खुशी मिलती हो, उन कार्यो को करने से तनाव से आपका ध्यान हटेगा और आप नये ढ़ंग से समस्या के समाधान के विषय में विचार कर पायेंगे। अतीत के अनुभवों से सबक लेते हुए वर्तमान पर फोकस करें वर्तमान पर फोकस करेंगे तो भविष्य अपने आप ही सुधर जायेगा।

वक्त मिलने पर कुछ नया सीखें– कुछ लोगों को जब भी समय मिलता है तो वो या तो सारा समय किसी बात की टेंशन में गुजार देते हैं या फोन के साथ। ऐसा करना हमारे तनाव को बढ़ाता है। इसलिए आपको जब भी समय मिले तो कुछ नया सीखे। अपने स्किल्स पर काम करें क्योंकि जब भी आप अपना पंसदीदा कार्य करते है तो आप खुद को एक्टिव और अपने मन को शांत पाते हैं और आपका तनाव कम होता है।

निष्कर्ष– कभी–कभी, तनाव की एक छोटी सी वृद्धि सकारात्मक बात हो सकती है। यह आपको दबाव में अच्छा प्रदर्शन करने, समय पर पहुंचने या किसी समय सीमा को पूरा करने में मदद कर सकता है। यह तनाव आपको उस समस्या के प्रति सचेत कर सकता है जिसे युवाओं को संभालना है। यह उन्हें उनके लक्ष्यों की ओर प्रेरित कर सकता है। यह उन्हें अध्ययन करने, योजना बनाने और तैयारी करने के लिए प्रेरित कर सकता है। लेकिन बहुत अधिक तनाव, जिसे आप प्रतिबंधित नहीं कर सकते वह आपको अपना सर्वश्रेष्ठ करने और महसूस करने से रोकता है। यह आपको थका सकता है, आपकी उर्जा खत्म कर सकता है और काम पूरा करना कठिन बना सकता है। बहुत अधिक तनाव के कारण युवा चिड़चिड़े या बिखरे हुए महसूस कर सकते हैं। आप तनाव से बच नहीं सकते, लेकिन युवा रोजमर्रा के तनाव को निम्न स्तर पर रखने का लक्ष्य बना सकते हैं। जब आप रोजमर्रा की चीजों पर कम तनाव लेते हैं, तो आप सामने आने वाली बड़ी चुनौतियों से बेहतर ढ़ंग से निपटने में सक्षम होते हैं। रोजमर्रा की कुछ आदतों को बदलें और कुछ नयी अच्छी आदतों को अपनाकर तनाव से दूर रह सकते है। व्यायाम के माध्यम से अपने शरीर पर शारीरिक तनाव डालने से मानसिक तनाव दूर हो सकता है।

किसी व्यक्ति, समूह या समुदाय के लिए दैनिक जीवन के अनुभवों से तनाव के हानिकारक प्रभावों से बचने, दूर करने या काम करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। जब किसी व्यक्ति को जीवन की शुरूआत में ही मुकाबला करने, अनुकूलनशीलता और लचीलेपन के कौशल सिखाए जाते है। किसी वयक्ति की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति और भलाई उनके जीवन पथ को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, और यह समग्र रूप से परिवारों और समाज के स्वस्थ कामकाज के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, साथ में ये सामाजिक एकजुटता और राष्ट्र की समृद्धि को प्रभावित करते है। प्रारंभिक हस्तक्षेप और जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम और वृद्धावस्था में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को संरक्षित करने के लिए फायदेमंद होंगे। सामान्य तौर पर, समस्या समाधान कौशल का प्रशिक्षण व्यावहारिक, भावनात्मक और प्रेरक उपस्तरों में छात्रों की सामाजिक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। देशी भोजन, देशी स्टाइल, प्रगतिशील सोच, सैर–सपाटा, अच्छी किताबों का अध्ययन तनाव को कम करने में सहायक है। अपने आपको हर तरीके से समय दें या कहें खुद को पोषित करें फिर चाहे तो खान–पान हो या फिर आवागमन हो। धीरे–धीरे भोजन करें, संगीत सुनते हुए वॉक करे, हल्की नींद लें। अपनी संवेदनाओं पर ध्यान केंद्रित करें। तनावग्रस्त होने पर शांति से उस समस्या के बारे में सोचें और समाधान का रास्ता खोंजे। तनाव के बेहतर ढंग से प्रबंधित करने के लिए बदलाव करना, अनुकूलन करना, स्वीकार करना और रसकिय रहना शामिल हैं।

डॉ. अनूपी समैया

सहायक प्राध्यापक,

शिक्षा शास्त्र विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

श्वेत पोश अपराध

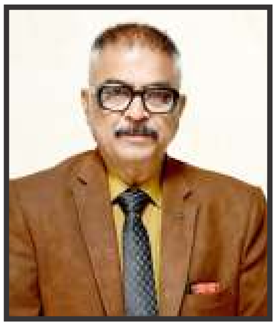

डॉ.राजू टंडन
(प्राचार्य)

अपराध को साधारण अर्थों में प्राचीन काल से ही हत्या, अघात, बलात्कार, चोरी, डकैती तथा उन अन्य अपराधिक कृत्यों के ही रूप में जाना जाता रहा है जिनमें किसी कानून का उल्लघंन होता है। परंतु वर्तमान समाज में व्यापक स्तर पर होने वाले सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के कारण अपराध एवं अपराधियों के स्वरूप एवं कार्यप्रणाली में भी बहुत बड़ा परिवर्तन दृष्टिगत होता है। वर्तमान युग में होने वाले बहुत से अपराध न केवल गम्भीरतम हो गये हैं वरन् निराकरण एवं नियंत्रण की व्यवस्था को देखते हुए दुष्कर भी प्रतीत होते हैं। अपराधशास्त्री एवं कानूनी व्यवस्था को बनाये रखने वाले अधिकारीगण एक नवीन प्रकार के अपराधियों को देख पा रहे हैं जो अपराधी व्यवहार की पुरानी मान्यताओं, व्याख्याओं तथा विश्लेषणों के प्रतिकूल प्रतीत होते हैं।

सदरलैण्ड ने व्यापार के क्षेत्र में पाई जाने वाली आधुनिक पद्धतियों, प्रथाओं एवं दस्तूरों का पालन करने में व्याप्त अपराधिक दशाओं का विशेष रूप से अध्ययन किया और यह बताया कि अपराध के सरकारी आँकड़ों से अपराधियों का जो चित्र उभरता है वह चित्र उन लोगों का है जो आर्थिक रूप से पिछड़े या दरिद्र हैं। उनके अनुसार यह चित्र समाज में व्याप्त अपराधिता का सही चित्रण प्रस्तुत नहीं करता। अपराधी उच्च आर्थिक - सामाजिक वर्ग के भी होते हैं जिनका अध्ययन 1940 तक के अपराधशास्त्रियों ने नहीं किया है। सदरलैण्ड ने अमरीका के उन उद्योगपतियों तथा उद्योग-संगठनों का नाम गिनाया जो आर्थिक अपराधों के दोषी ठहराये जा सकते थे और जो लोग व्यापार के क्षेत्र में अनेक प्रकार की असामाजिक तथा औद्योगिक धाँधलियों कर रहे थे। उनके अनुसार श्वेतवस्त्र अपराध के दोषी सभी व्यापारी हैं जो छलकपट, बेईमानी तथा धोखाधड़ी करके उन कानूनों तथा नियमों का उल्लंघनकरते हैं जो जनहित के लिए बने हैं और जिनकी अवज्ञा में किये गये सभी कार्य व्यक्ति को दंड का भागीदार बनाते हैं।

वर्तमान समाज अत्यधिक गतिशील है। इस गतिशीलता के कारण समाज के ढांचे और कार्यों में जटिलता आती जा रही है। इस जटिलता के परिणामस्वरूप समाज में अनेक समस्याएं पैदा होती जा रही है। कानून और दण्ड की धारणा में भी महान परिवर्तन हो रहे हैं। आज अपराध सिर्फ वह समाज-विरोधी क्रिया नहीं है जिसके लिये दंड की व्यवस्था हो। अनेक अपराध ऐसे भी है जिनके लिऐ दण्ड नहीं दिया जाता है। आज समाज में अनेक समाज विरोधी कार्य होते है जो दंडनीय होते हुए भी दंड से वंचित रहते है मौलिक प्रश्न यह है कि इन समाज विरोधी कार्यों को दण्ड क्यों नहीं दिया जाता ? आज अपराध उन व्यक्तियों के द्वारा नहीं किये जाते है जिनकी आर्थिक स्थिति खराब है। अपराधी वह व्यक्ति भी नहीं है जिनमें कोई शारीरिक या मानसिक 'विकार' पाया जाता है। अथवा जिनके ऊपर वातावरण का दबाव रहता है। वर्तमान युग में अपराध उन व्यक्तियों के द्वारा किये जाते है जो समाज में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त है। समाज में इस प्रकार की कानून विहीनता चिन्ता का विषय है। समाज में बढ़ती हुई इस अपराध प्रवृत्ति को ही श्वेत-पोश अपराध कहा जाता है।

श्वेतवस्त्र अपराधियों के कार्य का पता लगाना तथा दण्डित करना कोई सरल कार्य नहीं है। उनके विरूद्ध न तो सरलता से कोई सबूत मिलता है और न ही उनके अपराधिक कृत्यों के बारे में कोई सूचना उपलब्ध हो पाती है। परिणाम यह होता है कि अधिकांश श्वेतवस्त्र अपराध समाज में बिना जानकारी के होते रहते है और अपराधी अपनी सम्माननीयता के आवरण में गुप्त रीति के कार्य किया करते है।

श्वेतवस्त्र अपराधों से होने वाली आर्थिक हानि वास्तविक अर्थों में उतनी दुखदायी नहीं होती जितनी कि इस प्रकार के अपराधों से

होने वाली सामाजिक हानि। सदरलैण्ड ने श्वेतवस्त्र अपराध द्वारा पुहुंचाई गई इस प्रकार की हानि का वर्णन करते हुए कहा कि इन अपराधों से पहुंची आर्थिक क्षति के परिणाम उतने गंभीर नहीं होते है जितने कि सामाजिक परिणाम। साधारण अपराधों से जब व्यक्ति या समुदाय दुःखी होता है, तब उसके निवारण का प्रयत्न ढूढ़ता है और कानून एवं व्यवस्था के साधनों को सुदृढ़ बनाता है। इन प्रयत्नों से समाज का मनोबल उसी प्रकार से बढ़ता है जैसे शत्रु देश से युद्ध जीतने पर लोगों में देश-भक्ति की भावना बढ़ती है। श्वेत पोश अपराध इसके विपरीत आम जनता के मनोबल को कमजोर करके सामाजिक विघटन की दशाओं को बढ़ावा देता है। साधारण जनता का मनोबल इसलिए और भी घटता है कि वह जानती है कि इस प्रकार के अपराधों को रोकने वाले व्यक्ति बहुत कम है क्योंकि 'इन अपराधों को करने वाले अपराधी समाज के उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग से संबंधित होने के कारण सरलता से पकड़ कर दंडित नहीं किये जा सकते। परिणाम यह होता है कि आम जनता इस प्रकार के अपराधियों के विरूद्ध आवाज नहीं उठा पाती तथा उनके अपराधिक कृत्यों की रोकथाम के लिए कोई संगठित प्रयत्न नहीं कर पाती।

सदरलैण्ड तथा अन्य समाजशास्त्रियों एवं अपराधशास्त्रियों ने अपने-अपने अध्ययनों में सफेदपोश अपराधों के विभिन्न स्वरूपों का विवेचन किया। जिसमें धोखाधड़ी, विश्वासघात, जालसाजी, जमाखोरी, चोरबाजारी, कालाबाजारी, घूसखोरी, मिलावट, तस्करी, टेक्स बचाना, विज्ञापनों में झूठा व अयथार्थ वर्णन, व्यापार - चिन्ह या ट्रेडमार्क, संबंधी नियमों का उल्लघंन इत्यादि समाविष्ट है। वस्तुतः सफेद पोश अपराध का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि यह कह पाता उत्यन्त कठिन है कि मानव जीवन का ऐसा कौन सा भाग है जिसमें इस प्रकार के अपराध घटित न होते हो। सम्भवतः मानव-जीवन के सभी क्षेत्रों में चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामाजिक या व्यवसाहिक हो, प्रशासनिक हो या गैर प्रशासनिक, शासकीय हो या गैर शासकीय, राजनैतिक हो या धार्मिक हो कुछ ऐसी अनियमितताएँ पाई जाती है जिनमें इन क्षेत्रों से लगे हुए बहुत से व्यक्ति अपने दिन प्रतिदिन के व्यवहार में करते ही रहते हैं। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से तथा स्वतंत्रता - प्राप्ति के तुरंत बाद भारत के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन की परम्परा व्यवस्था के मूलभूत तत्वों, मूल्यों, मान्यताओं तथा वैयक्तिक्र एवं पारिवारिक जीवन के आदर्शो में इतना बड़ा परिवर्तन आया कि पुराने समय के सभी आदर्श एवं मूल्य पश्चात्यीकरण की आँधीं में ढह गये। जाति की नींव पर बना समाज एकाएक वर्ग समाज के आधार पर परिवर्तित होने लगा। व्यक्ति के सामाजिक स्तर के निर्धारण के पुराने मापदण्ड टूट गये और लोगों में पैसा कमाकर बड़ा होने की होड़ लग गई। लोगों को विश्वास हो गया कि धन एवं भौतिक भोग-विलास के साधनों के अर्जन मात्र से ही व्यक्ति सामाजिक सम्मान पा सकता है और बड़ा आदमी कहला सकता है। जब लोगों के मन यह विश्वास बैठ गया कि पैसा, चाहे वह काला हो या सफेद, सही ढंग से पाया गया हो या बेइमानी से, आदमी को आगे बड़ा सकता है, तब एक ऐसी एक सामाजिक दौड़ प्रारंभ हुई जिसमें उचित एवं अनुचित साधनों के बीच की दूरी मिट गई। हर आदमी, चाहे वह व्यापारी हो, प्रशासक हो, राजनीतिक हो या चिकित्सक, वकील, इंजीनीयर, या बाबू या चपरासी हो, इस फिराग में दौड़ने - घूमने लगा कि जल्दी से जल्दी ''अमीर'' कैसे बना जा सकता है। इस दौड़ में मारी गई ईमानदारी की बात, चारित्रिक निष्ठा तथा कर्तव्यपरायणता। इस भौतिकवादिता में अपराधिकता को बढ़ावा मिला और भारतीय जनजीवन में एक नये अमीरों का वर्ग सामने आया। यह वह वर्ग है जिसे अपना पेट भरने के लिये दूसरों का पेट काटने में कोई हिचक नहीं होती। यह वह वर्ग है जो धन और संपत्ति को गलत और सही दोनों प्रकारों से हड़पना चाहता है। यह वह वर्ग है जिसे न तो जनमत की चिंता है और न कानून के पंजों की।

भारत में श्वेतवस्त्र अपराध के आर्थिक कारणों को ढूंढ़ पाना कठिन नहीं है। अपराध के इस स्वरूप के आर्थिक कारण एक तरह से नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के पतन के साथ जुड़े हुए है। भौतिकवादिता की सभी तृप्ति न होने वाली इच्छा तथा ऐश्वर्य का जीवन बिताने की उत्कृष्ट अभिलाषा, व्यक्तिगत निष्ठा, व्यावसयिक संहिता के मानकों का पालन करके चलने की भावना को ले डूबी। कुछ लोग इसलिए श्वेतवस्त्र अपराध करने लगे कि उनका वेतन इतना अधिक नहीं था कि भोग-विलास की वस्तुओं को खरीद सकें। दफ्तरों की फाइलें देखने वाला वर्ग घूस देने के लिए आम नागरिकों को मजबूर करने लगा और समस्त प्रशासनिक व्यवस्था घूस के पेट्रोल से चलती नजर आने लगी। व्यापारी वर्ग ने प्रशासकों तथा बाबुओं की इस मनोवृत्ति का फायदा उठाकर बेधड़क चोरबाजी, तस्करी, खाद्य पदार्थों में मिलावट तथा मुनाफाखोरी प्रारंभ कर दी। उनका यह विश्वास ठीक सिद्ध हुआ कि वे अपने पैसे के बल से अधिकांश उच्चस्तरीय प्रशासकों तथा राजनीतिज्ञों को खरीद सकते हैं।

स्वतंत्रता के बाद की राजनीति में बहुत से ऐसे लोग आ गये जो भ्रष्ट कहे जा सकते थे और जिन्हें अपनी स्वार्थ-सिद्धि के अतिरिक्त कुछ और दिखाई नहीं देता था। इस प्रकार के राजनीतिज्ञों तथा उनके चापलूसों के वर्ग ने पूँजीपतियों तथा व्यापारी वर्ग के लोगों से पैसे पाये और अवैधानिक तरीकों से काला व्यापार करने वाले व्यक्तियों की एक खरीदे हुए मजदूर की भांति सेवा की। कुछ राजनीतिज्ञों ने पूँजीपतियों से पैसे लेकर निर्वाचन लड़े और जीत जाने पर चाकरों की भाँति पैसे देने वाले व्यक्ति तथा व्यक्तियों के समूह की सेवा राजनैतिक साधनों से करते रहे। कालाबाजार करने वाले व्यापारियों बड़े तस्करों, पूँजीपतियों, जमींदारों तथा राजा महाराजों से कठबंधन करके इस प्रकार के कुछ राजनीतिज्ञों ने प्रजातंत्र की परिभाषा बदल डाली। प्रजातंत्र अमीरों की सरकार, अमीरों के द्वारा तथा अमीरों के लिए संकुचित होकर रह गयी।

खुद वो बदलाव बनिये जो
आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा के साथ कौशल विकास

दीप्ति पटैल
सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र

नई शिक्षा नीति का लक्ष्य है, शिक्षार्थी का संपूर्ण विकास जिसे साक्षरता, संख्या ज्ञान, तार्किकता, समस्या समाधान, नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक मूल्यों के विकास के द्वारा सम्भव किया जा सके।

मनुष्य का जीवन गुणों और प्रतिभाओं का भंडार है और यदि किसी भी मनुष्य के आधारभूत गुणों या ईश्वर प्रदत्त प्रतिभाओं का पूर्ण सदुपयोग उसने जीवन में नहीं किया तो उसके वो गुण और प्रतिभाएं व्यर्थ हो जाती हैं। हम अपने बाल्यकाल से एक ऐसी शिक्षा पद्वति की छत्र–छाया में पले–बढ़ें जिसमे सब विद्यार्थी एक–दूसरे की देखा देखी कोर्स का चयन करते थे, न तो उनकी प्रतिभाओं का आकलन शिक्षक करते थे, न ही अभिभावकों की ही दूरदृष्टि इस ओर जाती थी। इंजीनियरिंग, मेडीकल अथवा चार्टर्ड अकाउंटेंट या साधारण ग्रेजुएट होकर नौकरी ढूंढ़ने की प्रथा थी।

कुछ लोग सेना में या प्रतियोगिता वाली परीक्षाएं देकर सरकारी नौकरियों में चले जाते थे। न तो मार्गदर्शन किया जाता था कि कैसे अपने गुण या प्रतिभाओं का आकलन करके सही दिशा की ओर जीवन को ले जाना चाहिए, न ही विद्यार्थियों के पास इतना समय था कि वो अपनी बुद्धि का उपयोग कर सकें । वस्तुत: शिक्षण का सारा ढांचा ही कुछ इस प्रकार था कि अधिकांशत: युवा वर्ग दिशाहीन था।

शिक्षा प्रणाली कुछ ऐसी थी जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवरोध उत्पन्न करती थी, मूल चिंतन और विकास धारा के विकास में अवरोध, काल्पनिक और नए वैचारिक और मानसिक शक्ति के विकास में अवरोध, मनुष्य की मूलभूत प्रतिभाओं के विकासीकरण में अवरोध आदि। देश के उज्जवल भविष्य के लिए और सजग,विचारशील और नवीनतम आयामों को ग्रहण करने वाले एक सशक्त युवा वर्ग के भविष्य निर्माण के लिए बहुत आवश्यक था कि विषयों की जानकारी के साथ–साथ समस्या समाधान, तार्क्कि और रचनात्मक रूप से सोचना सीखें,नया सोचें और अपने विचारों को विस्तृत करें। शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी केंद्रित,जिज्ञासा,खोज एवं संवाद के आधार पर लचीली हो, समग्र हो।

ज्ञान, प्रजा, सत्य की खोज भारत के प्राचीनतम शिक्षा पद्वतियों के आधार हैं जिनसे भारत का युवा देश की विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक और तकनीकी आवश्यकतओं, देश की कला, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ठोस ज्ञान प्राप्त करे।

आजीविका और वैश्विक पारस्थितिकी में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों के कारण ये आवश्यक है कि देश का युवा इतना सक्षम हो कि विश्व पटल पर उसके आत्मविश्वास के सधे पाव कभी लड़खड़ाएं नहीं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्यत: 4 भाग हैं और इसके कार्यान्वियन की पूर्णता का लक्ष्य वर्ष 2030 है ताकि वर्ष 2015 में अपनाए गए सतत विकास एंजेंडा के अनुसार विश्व में वर्ष 2030 तक सभी के लिए सार्वभौमिक, गुणवत्तायुक्त सतत शिक्षा और जीवन पर्यत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। भारत में समग्र और बहु विषयक शिक्षा की प्राचीन परंपरा है, ज्ञान का विभिन्न कलाओं के रूप में दर्शन भारतीय चिंतन की देन है जिसे पुन: भारतीय शिक्षा में शामिल किया जाएगा, इसका एक बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव यह होगा कि युवाओं के लिए कभी भी भविष्य में अर्थोपार्जन का कोई रास्ता बंद नहीं होगा और वो अपने संपूर्ण ज्ञान का प्रयोग स्वयं के व्यक्तिगत विकास में, सामाजिक और राष्ट्र के विकास में कर पाएंगे ।

1. सीखने की आकर्षक और सहायक पद्वतियों के लिए पहल की जायेगी जैसे कि उच्चतर शिक्षा में नई रचनात्मकता लाने के लिए पद्वति में नवाचार और लचीलापन लाना होगा और सी.बी.सी.एस. (च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम) का संशोधन करना होगा। उसकी जगह एक

मानदंड आधारित ग्रेडिंग प्रणाली का निर्माण होगा जो प्रत्येक कार्यक्रम के लिए सीखने के लक्ष्यों के आधार पर छात्रों की उपलब्धियों का आकलन करेगा जिसमें एक निष्पक्ष प्रणाली बन सकेगी।

2. छात्रों में गुणवत्ता पूर्ण आदान प्रदान हेतु विभिन्न क्लब और गतिविधियां कराई जायेगी, जिससे कि एक स्वतंत्र माहौल में शिक्षकों का संबंध विद्यार्थियों के मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में भी हो।

3. आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को आर्थिक सहायता ही नहीं अपितु उनके शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण को बेहतर बनाने के लिए परामर्शदाता नियुक्त किए जाएंगे।

4. ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता के लिए रूपरेखा तैयार करके नवीनीकृत किया जाएगा। और अंत में सारे कार्यक्रमों का यही लक्ष्य होगा कि सभी कार्यक्रम गुणवत्ता के वैश्विक मानकों को प्राप्त कर पाएं, देश को बहुत बड़ा लाभ ये होगा कि युवा वर्ग दूसरे देशों की ओर कम आकर्षित होंगे और देश की प्रतिभाओं का सदुपयोग देश के विकास के लिए हो पाएगा।

अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को भी भारत के शिक्षण संस्थान आकर्षित करेंगे और भारत विश्वगुरू के रूप में अपनी नई पहचान बना पाएगा। युवा वर्ग का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वो वैश्विक स्तर पर विभिन्न चुनौतियों का सामना निर्भीकता से कर पाएंगे। किसी भी देश के विकास, संपन्नता और सुदृढ़ सांस्कृतिक विकास का आधार सशक्त शिक्षा नीति होती है और नई शिक्षा नीति ऐसे सभी पहलओं को लेकर चलेगी जिससे कि सारे ऊंचे मानकों पर स्वयं को स्थापित कर सकें।

भारत की नई शिक्षा नीति के अनुसार युवा वर्ग के व्यक्तित्व का विकास इस प्रकार करना है कि उनमें अपने मौलिक दायित्वों, संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव, बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न हो सके। सही मायने में वो वैश्विक नागरिक बनकर अपने ज्ञान, कौशल, मूल्यों का सदुपयोग करते हुए देश का नाम सतत ऊंचा कर सके और साथ ही स्वयं भी गौरवान्वित हो सके।

यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी हर भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

'संशय/दुविधा–लक्ष्य प्राप्ति में बाधक'

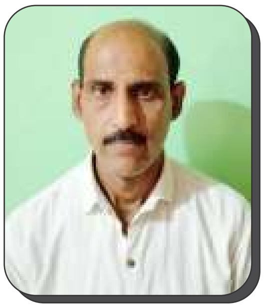

डॉ. संतोष चौबे
विभागाध्यक्ष–इतिहास

मानव जीवन का प्रत्येक पल अनंत संभावनाओं से भरा हुआ है। मनुष्य में एक अद्‌भुत कार्यक्षमता भी विद्यमान रहती है। जीवन में जब मनुष्य ने कुछ ऐसे संशय/दुविधा को त्यागकर अपने अंदर की कार्यक्षमता से उस कार्य को किया तो परिणाम उसके पक्ष में ही गया। आप किसी भी क्षेत्र में जो आपकी रूचि का हो अपनी पूर्णक्षमता के साथ संशय/दुविधा को त्यागकर कार्य को प्रारंभ करें परिणाम आपके पक्ष में होगा। संशय/दुविधा के समाप्त होते ही आप में एक अलग प्रकार का आत्मविश्वास जागृत होगा। यह आत्मविश्वास अर्थात् अपनी क्षमता पर विश्वास, इस प्रकार के विश्वास से आपका आधा कार्य लगभग सम्पन्न हो जाता है, शेष आधा कार्य अन्य सहयोगी तत्वों–उचित रणनीति, विषयवस्तु पर आपका अधिकार से सम्पन्न हो जाता है। जीवन में संशय/दुविधा तब उत्पन्न होती है जब किसी कार्य में रूचि नहीं होती है। रूचि का मानवीय कार्यक्षमता से सीधा संबंध भी होता है। यदि किसी कार्य में रूचि ली जाये तो, न तो संशय/दुविधा उत्पन्न होगी और न ही कार्यक्षमता प्रभावित होगी। किसी भी कार्य को करने से पहले उसका प्राथमिक ज्ञान अर्जित करना आवश्यक है, इस प्राथमिक ज्ञान से ही आपकी रूचि में वृद्धि होगी और बीच कार्य में आने वाली संशय/दुविधा को भी नष्ट करेगा।

संशय/दुविधा से शरीर में विद्यमान आलस्य को बल मिलता है। और यह (आलस्य) आपके साथ हो जाता है और आपका कार्य प्रभावित करने लगता है। अतः आलस्य के मूल में संशय/दुविधा ही है । यह संशय/दुविधा, आलस्य की जन्मदात्री माँ है। यदि आलस्य के जन्म को ही रोक दिया तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। वास्तव में यदि किसी भी कार्य को प्रभावित करने वाले कारकों की बात करें तो उनमें शामिल है – संशय/दुविधा, अरूचि तथा आलस्य। इनमें सबसे प्रमुख है – संशय/दुविधा, जो तत्वों की जन्मदात्री माँ है। ''संशय/दुविधा युक्त मानव, चलती–फिरती कब्र के समान है।''

एक विनम्र तरीके से आप
दुनिया को हिला सकते हैं।

पृथ्वी की हरियाली

अनुशिखा उपाध्याय
सहायक प्राध्यापक
वनस्पति विज्ञान

कुछ समय पूर्व सेटेलाइट और परिष्कृत एल्गोरिद्म के उपयोग से पृथ्वी पर पेड़ों की गणना की गई है और पाया गया कि पृथ्वी पर लगभग तीन लाख करोड़ पेड़ हैं। यह संख्या पूर्व के अनुमानों से काफी अधिक है। विश्व में प्रति व्यक्ति चार सौ पेड़ हैं। सिर्फ दक्षिण अमेरिका के वर्षा वन में ही कुल संख्या के लगभग बीस प्रतिशत पेड़ हैं। कनाडा तथा रूस में भी पेड़ों की संख्या इतनी अधिक है कि यहाँ प्रति व्यक्ति 9000 पेड़ हैं। इसके उलट मध्यपूर्व के टापू बहरीन में मात्र 3100 पेड़ हैं, लगभग पांच पेड़ प्रति वर्ग किलोमीटर। पृथ्वी की हरियाली से ही उस पर रहने वाले सभी प्राणियों और मनुष्यों की आक्सीजन की जरूरत पूरी होती हैं।

<u>आक्सीजन के अन्य स्त्रोत–</u>

पृथ्वी पर पेड़ों की तुलना में घास के मैदान अधिक हैं जो अधिक मात्रा में आक्सीजन का उत्पादन करते हैं। इसके अतिरिक्त समुद्री सायनोबैक्टीरिया तथा शैवाल प्रकाश संस्लेषण द्वारा स्थानीय पेड़ो के बराबर ही आक्सीजन का उत्पादन करते हैं। ऑक्सीजन देने के साथ ही पेड़ वातावरण से कार्बन डाइ आक्साइड भी हटाने का कार्य करते हैं।

लाखों वर्ष पुराने पेड़ जमीन में दबकर कोयले में परिवर्तित हो गये हैं। इस प्रकार कार्बन की बड़ी मात्रा भी पृथ्वी के गर्भ में कोयले के रूप में बंद हो गई है। इस कोयले का उपयोग बिजली उत्पादन के साथ ही अन्य कार्यों के लिये हो रहा है।

<u>भारत का वन क्षेत्र–</u>

हमारे देश में प्रति व्यक्ति औसत 28 पेड़ हैं। अधिक जनसंख्या घनत्व एवं तेजी से कम हो रहे वन क्षेत्र के कारण यह स्थिती उत्पन्न हुई है। जहाँ अरूणाचल प्रदेश का 80% भू–भाग जंगल से घिरा है वहीं राजस्थान में वन क्षेत्र कुल भूभाग के 10% से भी कम है। दक्षिण राज्यों की स्थिती अपेक्षाकृत बेहतर है। पूरे देश में योजना बद्ध तरीके से वन स्रोत और पेड़ों की संख्या बढ़ाना मनुष्य एवं प्राणियों के जीवन एवं उनके उत्तम स्वास्थ्य के लिये अत्यंत आवश्यक हैं।

रूक जाना नहीं

उमा भारती
बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर

13 वर्ष की सोनम आज भी अपनी बैसाखी के सहारे स्कूल की तरफ निकल चुकी थी। सोनम सातवीं कक्षा में पढ़ती है, वह पढ़ने में होशियार और समझदार है। जैसे वह घर से निकली आसपास के बच्चे उसे रोज की ही भांति लंगड़ी लड़की कहकर चिढ़ाने लगे। सोनम ने भी रोज की तरह बातों को अनसुना किया और स्कूल तक पहुंच गई। घर आकर उसने सारी बात अपने पापा राघव को सुनाई और कहा कि वह कल से स्कूल नहीं जाना चाहती है, क्योंकि उसे बच्चे लंगड़ी लड़की कहकर चिढ़ाते हैं। राघव ने सोनम की मनोदशा को समझते हुए उससे कहा, कि सोनम बेटा ! तुम्हें ऐसे किसी के भी दुर्व्यवहार से दुखी होकर अपने लक्ष्य से नहीं भटकना चाहिये, ऐसे दुखी होकर तुम जीवन में कभी ''रूक मत जाना''। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तुम्हें दृढ़निश्चयी बनना होगा। अपने पापा की ऐसी उत्साहवर्धक बातों को सुनकर सोनम अब और भी मजबूत बन गई थी। वह अब किसी की भी बातों को सुनना जरूरी ही नहीं समझती थी, और पूरे मन से अपनी पढ़ाई करती थी। देखते ही देखते सोनम ने स्नातक पूरा किया, और नौकरी के लिए दिन-रात मेहनत करके तैयारी करने लगी। उसकी दिन-रात की मेहनत रंग लाई और कुछ समय बाद वह एक अध्यापिका के पद पर पदस्थ हुई। अब सोनम उसी मोहल्ले के बच्चों के लिए न केवल उदाहरण बनीं वरन बच्चों को बहुत अच्छी शिक्षा देने लगी। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के पर्व पर उसने बहुत सुंदर भाषण अपने ''स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों'' के ऊपर प्रस्तुत किया और बच्चों को उत्साहित करते हुए कहा, कि जीवन में संघर्ष करना ''रूक जाना नहीं''।

''ग्रामीण बालिकाओं की शिक्षा-एक विचार''

हेमलता पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक
शिक्षाशास्त्र

शिक्षा के माध्यम से ही बालिकाओं में सही दृष्टिकोण, सही विचार व सही निर्णय लेने की क्षमता पैदा हो सकती है। इस आधार पर बालिका शिक्षा को परिवार, समाज व देश के विकास की नींव कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देकर देश में गरीबी, भुखमरी व भ्रष्टाचार से कुछ हद तक मुकाबला किया जाना संभव है। यही नहीं, बालिकाएँ शिक्षित होकर परिवार के लिए 'कमाऊपूत' बनकर परिवार को गरीबी के चक्रव्यूह से बाहर निकाल सकती हैं। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बालिका शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा था कि ''एक लड़के की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है परन्तु एक लड़की की शिक्षा संपूर्ण समाज की शिक्षा है'' अतः एक बालिका को साक्षर व शिक्षित करके ही हम उनकी सुप्त योग्यता, दक्षता व क्षमताओं का विकास कर सकते हैं। बालिकाओं को सशक्त, स्वावलंबी व आत्मविश्वासी बनाने में शिक्षा की अहम् भूमिका है। यही नहीं शिक्षा के बल पर ही बालिकाएं समाज में फैली लैंगिक असमानता, भेदभाव, शोषण, उपेक्षा जैसे - तिरस्कृत व्यवहार का डट कर मुकाबला कर सकतीं है तथा इस प्रकार से सामाजिक, आर्थिक एवं सशक्तिकरण की राह पर अपने कदम बढ़ा सकती हैं। अपना, अपने प्रदेश व देश का नाम विश्व स्तर तक ले जा सकती हैं।

"बदलता सामाजिक परिदृश्य एवं वृद्ध"

डॉ. आकृति कनोजिया
सहायक प्राध्यापक
समाजशास्त्र

भारतीय समाज में वृद्धों का स्थान हमेशा से ही सर्वोपरि रहा है। प्राचीन काल से ही हमारे देश में उन्हें उच्च स्थान प्राप्त रहा एवं सत्ता हमेशा उनके हाथो में रही है। परिवार से संबंधित सभी मुख्य कार्य सलाह, निर्णय बुजुर्गों के द्वारा ही लिए जाते रहे हैं। परन्तु औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण इत्यादि के परिणाम स्वरूप परिवार की संरचना में परिवर्तन हुआ है। संयुक्त परिवार अब एकल परिवार में परिवर्तित हुये हैं। जिससे वृद्धों की शक्ति, स्थिति एवं सत्ता में भी परिवर्तन हो रहा है। भारतीय जनगणना के आँकड़े बताते हैं कि वर्तमान में भारतीय वृद्धों की जनसंख्या लगभग 104 करोड़ है जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में वृद्धों की जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है। अतः यह आवश्यक है कि वृद्धजनों की ओर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। क्योंकि, देश के विकास में जनसंख्या के प्रत्येक वर्ग का अपना योगदान होता है। देश के विकास में वृद्धों की बात की जाये तो इनके अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर देश के विकास में योगदान दिया जा सकता है।

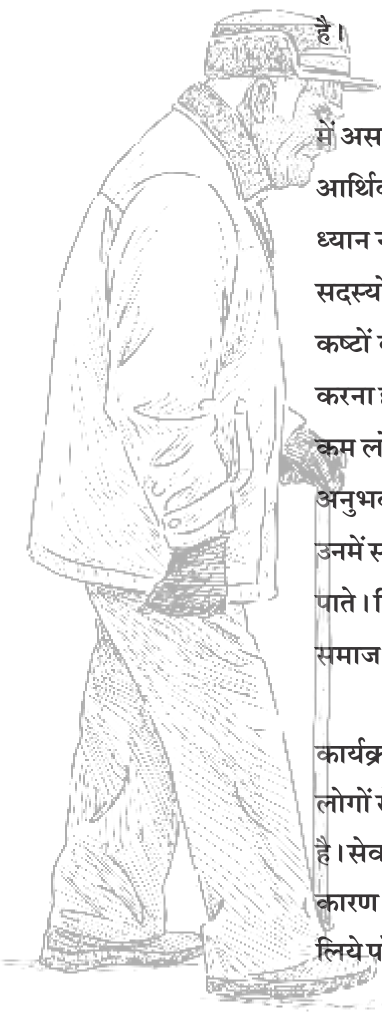

परन्तु व्यक्तिवादी सोच एवं एकल परिवार की अधिकता होने से वृद्धजन अपने ज्ञान और अनुभव को साझा करने में असमर्थ होते नजर आ रहे हैं। भारत के इस बदलते सामाजिक परिवेश में वृद्धों की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होने लगे हैं। एकल परिवार की अधिकता होने के कारण परिवार के अन्य लोग वृद्धों पर अधिक ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। जिसके कारण वे विभिन्न आर्थिक एवं शारीरिक कष्टों का सामना करते हैं। वर्तमान में, परिवारों में सदस्यों की संख्या कम होने से परिवार जन वृद्धों के साथ समय व्यतीत नहीं कर पा रहे हैं इस कारण वे विभिन्न शारीरिक कष्टों का सामना करते हैं। व्यक्ति जैसे-जैसे वृद्धावस्था की ओर बढ़ता है वैसे-वैसे उन्हें विभिन्न चुनौतियों का सामना करना होता है। अब भारतीय महिलाएं भी घर से बाहर रोजगार या अन्य कोई व्यवसाय करने लगीं हैं। अतः घर में अकेले या कम लोग होने से वे मानसिक रूप से परेशान होने लगे हैं। उन्हें परिवार में रहकर भी अकेलापन महसूस होता है। वृद्ध अपने अनुभवों से परिवार के बच्चों को समझाने एवं ज्ञान देने का प्रयास करते हैं परन्तु पीढ़ियों में अंतर होने के कारण वर्तमान में उनमें संघर्ष भी देखा जा रहा है। इसका कारण यह है कि माता-पिता के पास समय न होने के कारण वे बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते। जिससे वे वृद्धों के अनुभवों एवं ज्ञान को प्राप्त करने में असमर्थ हो रहे हैं। परंपरागत मूल्य एवं नियमों के ह्रास होने से समाज में यह परिवर्तन देखने को मिल रहा है। बच्चे भी अपने घर के वृद्धों को नजर अंदाज करने लगे हैं।

यदि वृद्धों की सामाजिक परिस्थिती को समझने का प्रयास करें तो शारीरिक कमजोरी के कारण वे सामाजिक कार्यक्रमों में अधिक शामिल नहीं हो पाते तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात् लोगों से मिलना जुलना कम हो पाता है। समाज के लोगों से कम संपर्क होने के कारण वे स्वयं को समाज से अलग समझने लगते हैं जिससे उन्हें अकेलापन महसूस होने लगता है। सेवानिवृत्ति के पश्चात् वे अधिक समय अपने घर पर ही व्यतीत करते हैं, शारीरिक अक्षमताओं तथा रोजगार न होने के कारण भी वे आर्थिक रूप से परेशान रहते हैं। उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन की छोटी-छोटी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये परेशान होना पड़ता है यदि वे वृद्धावस्था में परिवार के अन्य सदस्यों पर आर्थिक रूप से निर्भर रहते हैं।

अतः वर्तमान के इस दौर में जितना भी नगरीकरण, तकनीकी विकास , शिक्षा के स्तर का विकास, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ मिल रहीं हैं, उतनी ही वृद्धों की शक्ति, सत्ता तथा स्थिति का ह्रास हो रहा है। आवश्यक है कि वृद्धों की इस बढ़ती जनसंख्या की ओर ध्यान दिया जाये तथा उनके अनुभवों एवं ज्ञान से नई पीढ़ी के द्वारा लाभ प्राप्त किया जाये जो कि देश के विकास में सहायक हो सकता है।

नई पीढ़ी में लुप्त होता धैर्य/सहनशीलता

वैभव नामदेव
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में बच्चों से धैर्य की उम्मीद कैसे की जा सकती है ? आज युवा पीढ़ी में धैर्य और सहनशीलता का सर्वथा अभाव दिखाई देता है, छोटी-छोटी बातों पर लोगों से झगड़ना और बड़ों से अभ्रद व्यवहार नई पीढ़ी की आदत में शुमार होता जा रहा है। इसके अलावा आजकल एकल परिवारों में ज्यादातर दंपती कामकाजी प्रकृति के होते हैं जिससे इनके पास इतना वक्त नहीं होता कि वे अपने बच्चों में अच्छे संस्कार जैसे विनम्रता और सहनशीलता डाल सकें। धैर्यहीन बनाने में सामाजिक व्यवस्था एवं आर्थिक कारण काफी हद तक दोषी हैं, युवाओं का ऐसा व्यवहार देश और समाज के लिए बेहद खतरनाक एवं चिंतित करने वाला है। इन्हें धैर्यवान, सहनशील, सुशिक्षित एवं संयमित बनाने की जबावदेही माता-पिता, गुरूजनों एवं सामाजिक परिवेश की होती है।

यह सच है कि आज के ज्यादातर नौजवान शॉर्टकट तरीके अपनाकर जल्द सफलता हासिल करना चाहते है, लेकिन सभी को धैर्यहीन कहना उचित नहीं है, यदि हम समस्या की जड़ तक जाएं तो पाते हैं कि जिन युवाओं को बचपन में माता-पिता का स्नेह एवं संरक्षण नहीं मिलता, युवावस्था में पहुँचकर अभिभावक एवं सामाजिक परिवेश के प्रति उनकी भावना धैर्यहीन एवं तनावग्रस्त हो जाती है, इसके लिए सतत प्रयास, अनुशासन और परिवार को समय देने की महत्वपूर्ण जरूरत होती है, धैर्य की कमीं हमेशा नकारात्मक दृष्टिकोंण वाली नहीं होती अपितु जीवन में आगे बढ़ने के लिए युवाओं के मन में थोड़ी बैचेनी एवं अधीरता भी होनी चाहिए तभी वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आतुर होंगे।

आध्यात्मिकता - ध्यान + जप

स्वस्थ मानसिकता - योगा + कर्म + प्राणायाम

''21वीं सदी की पीढ़ी जिसमें युवाओं का धैर्य 20 सेकेण्ड (रील्स) से भी कम है, जिससे इनको 40-50 मिनिट का व्याख्यान भी बैठ कर सुनना आसान नहीं लगता।''

क्रूरता का उत्तर क्रूरता से देने का अर्थ
अपने नैतिक व बौद्धिक पतन को स्वीकार करना है।

श्रम का फल सफलता है

डॉ. सुरेश कोरी
सहायक प्राध्यापक-भूगोल

सफलता का मूल मंत्र श्रम है, श्रम में आस्था रखो तो आज नहीं तो कल आप अवश्य सफल होंगे। वर्तमान समय में व्यक्तियों की सोच में परिवर्तन आ गया है, सफलता पाने के लिए व्यक्ति शार्ट–कट के नये तरीके और कम समय में ज्यादा सफलता हासिल करना चाहता है। सफलता की सीढ़ी श्रम ही है, अगर व्यक्ति अपनी ईमानदारी से किसी भी कार्य में श्रम लगाता है तो उसे सफलता का सौ प्रतिशत मिलेगा ही।

चाहे जो भी कार्य सिद्ध करना हो आपकी सफलता अर्थात कार्यसिद्धी बिना श्रम के संभव नहीं है। सफलता तो हर किसी व्यक्ति को चाहिए परन्तु व्यक्ति श्रम करने से जब तक जी चुराता रहेगा, बहाने बनाता रहेगा तब तक सफलता प्राप्त करना नामुमकिन है। यानि सफलता के लिये मात्र ऊँचे स्वप्न देखना ही पर्याप्त नही है, बल्कि आपको अपने लक्ष्य के अनुरूप पुरुषार्थ भी करना होगा। जिस प्रकार किसी ऊँची इमारत को तैयार करने के लिए हमें मजबूत नींव डालनी होती है, उसी प्रकार अपने कार्य के प्रति निष्ठा, ईमानदारी और लगन से ही सफलता अर्जित की जा सकती है। जाने क्यों लोग श्रम करने से घबराते हैं?

भूल हो जाने का भय–सफलता न मिलने का मूल कारण भय है जिसकी वजह से कितने लोग सफल संतुष्ट व सार्थक जीवन नहीं जी पाते। लोग डरते हैं कुछ नया करने से, कुछ अलग करने से, परिवर्तन लाने से, क्योंकि उन्हें लगता है कि जो कुछ अलग किया है, हट कर किया है, अगर उसका परिणाम सकारात्मक नहीं आता है, तो चिरपरिचित लोग क्या कहेंगे? बड़े बुजुर्गों की डॉट–फटकार का भय भी बना रहता है। जिससे लोगों के अंदर सोच पनपने लगती है, कि उसी कार्य में श्रम लगाया जाये जिसमें उनको भविष्य की सफलता निश्चित हो।

भूलों से घबराओ मत सुधार करो– कुछ लोगों में यह प्रवृत्ति होती है वह गलतियों से घबराते नहीं बल्कि उन गलतियों(भूलों) में सुधार कर आगे बढ़ने का हौंसला भी रखते हैं। और लगातार परिश्रम से अपनी, मिलने वाली असफलताओं को पार करके एक सफल व्यक्ति बन जाते हैं। अतः भूलों से भयभीत न होकर अपितु सदा उनसे सीख लेकर अपने परिश्रम में क्या, क्यों और कहाँ कमी है उससे सीख लेकर आगे बढ़ने की प्रेरणा हो तो आप निश्चित ही सतत् श्रम करके अपने सफलता के दायरे को बढ़ा सकते है। सफलता पाने के लिये आप परिश्रम करें और सतत जागृत रहें, और आदतन आलस्य से बचकर आप एक खुशनुमा जीवन व्यतीत कर सकें।

भाग्यवादी होना– कुछ लोग श्रम इसलिये नहीं करते क्योंकि उन्हें लगता है कि श्रम करने से क्या होगा? जो किस्मत में लिखा है वो जरूर मिलेगा। मैं पिछले कई सालों से मेहनत कर रहा हूँ, पर आज तक कुछ हासिल नहीं कर पाया। इसकी क्या गारण्टी है कि आगे कर लूँगा? व्यक्ति के अंदर एक सोच आ जाती है, कि अमुक व्यक्ति ने तो कोई मेहनत नहीं कि फिर भी वह सफल रहा, इसका मतलब यह हुआ कि जो भाग्य में लिखा होता है, वह होता है, श्रम करने से कुछ नहीं होता है। अगर हमारी किस्मत में सफल होना लिखा होगा तो हमें सफलता जरूर मिलेगी श्रम करके क्या करना? इस तरह के विचार व्यक्ति के मन में लगातार चलते रहते हैं वे अपने पुराने अनुभवों के आधार पर श्रम में निष्ठा खो चुके होते हैं। उन्हें यह समझ नहीं आता कि रातों रात सफलता किसी को नहीं मिलती।

श्रम सफलता की पूँजी है– जो लोग आज सफलता के शिखर पर बैठे हुए दिखलाई पड़ते हैं ये वे लोग है जिन्होंने सालों मेहनत की है, तपे हैं, खपे हैं, तब जाकर आज सफल बन सके हैं। बिना श्रम के कोई भी सफलता के शिखर तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है। आपने इस वर्ष मेहनत के नए नए प्रयोग किए किन्तु परिणाम आशाजनक नहीं निकले तब भी आप श्रम करने से कतराओगे नहीं, और जब तक अपना लक्ष्य हासिल न कर लो तब तक रुकोगे नहीं।

निकोटीन, कैफीन और मानसिक विकार

डॉ. संचिता जैन
सहायक प्राध्यापक
रसायन विभाग

प्रस्तावना:-युवाओं के जीवंत चित्रपट में दृष्टि डालें तो यह प्रतीत होता है, कि ऊर्जा असीम है और जिज्ञासा की कोई सीमा नहीं होती, तब ये सभी पदार्थ सीधे दिमाग को सक्रिय कर आनंद की अनुभूति पैदा करते हैं अतः निकोटीन और कैफीन दुनियाभर में सबसे अधिक खपत की जाने वाली मनोदैहिक दवाएँ हैं। जो व्यक्ति इन पदार्थों का सेवन करने की इच्छा रखते हैं उन्हें, इन पदार्थों की इतनी तीव्र लालसा होती है, कि वह सामान्य गतिविधियों की उपेक्षा कर देते हैं। ये लत इन ऊर्जावान युवाओं की सतह के नीचे छुपा हुआ खतरा है, जो एक धीमा जहर है, जो युवाओं के जीवन में घुलता जाता है और किसी का ध्यान भी नहीं जाता है किन्तु बाद में इनके कठोर दुष्परिणाम का सामना करना पड़ता है।

युवा और कैफीन का भ्रामक आकर्षण:- जैसे प्रातः सूरज ऊर्जा के साथ उदित होता है, वैसे ही युवा अक्सर कैफीन और निकोटीन के साथ अपने इंजन को किक स्टार्ट करते हैं। ये पेय युवाओं के लिए ऊर्जा और जीवन शक्ति के महत्वपूर्ण प्रतीत होता है, परंतु इनका मीठा स्वाद इसकी कड़वी वास्तविकता को झुठलाता हैं। इन मादक पदार्थों का अत्यधिक सेवन एकाग्रता में कमी मांसपेशियो में दर्द एवं चिंता को बढ़ाता है। जबकि निकोटिन में उप. मोनीमाइन ऑक्सीडज होता है जो नशे के गुणों को बढ़ाता है, और स्वायत्त प्रणाली को उत्तेजक और शामक दोनों के रूप में कार्य करता है। निकोटीन के संपर्क में आने के तुरंत बाद, एड्रिनल ग्रंथियों की उत्तेजना के परिणामस्वरूप एपिनेफ्रिन के स्त्राव से दिमाग के एक हिस्से में एक ''किक'' का अहसास होता है। एड्रिनेलिन की अधिकता शरीर को उत्तेजित करती है, जिससे ग्लूकोज रिलीज होता हैं और रक्तचाप, हृदय गति और श्वसन में वृद्धि होती हैं।

अदृश्य श्रृंखलाएं या निकोटीन की चुपके से घुसपैठ :- युवाओं के द्वारा वयस्कता की खोज तथा आधुनिकता के चलते निकोटीन अक्सर युवाओं के हाथों में अपना रास्ता खोज लेता है, जहाँ युवाओं के हाथों में कलम होनी चाहिए वहीं उनके हाथों में कॉलेज की दीवारों के पीछे सिगरेट आ जाती हैं, तथा उन्हें ऐसा प्रतीत होता है, कि यह हमें तनावमुक्त कर देता है, परंतु ऐसा नहीं है इसके कई दुष्परिणाम जो श्वसन और हृदय से संबंधित हैं, सामने आते हैं। निकोटीन से उत्पन्न हुए धुँए में टार होता है, जो फेफड़ों में जाकर एकत्रित हो जाता है, जो कैंसर का कारण बनता है।

निकोटीन और कैफीन विभिन्न पौधों में पाए जाने वाले एल्केलॉइड्स हैं। निकोटीन मुख्य रूप से तंबाकू में पाया जाता है, जबकि कैफीन कॉफी बीन्स, चाय की पत्तियों और अन्य स्त्रोतों में मौजूद होता है, दोनों के अलग-अलग स्त्रोत होने के बाबजूद दोनों केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर उत्तेजक प्रभाव डालते हैं।

निकोटीन प्रभाव :- निकोटीन एक अत्यधिक नशे की लत वाला पदार्थ है, जो मुख्य रूप से मस्तिष्क में निकोटिनिक एसिटाइल कोलाइन रिसेप्टर के साथ अंत:क्रिया करता है, जिससे बेहतर मनोदशा, एकाग्रता में वृद्धि तथा थकान से राहत महसूस होती है। जबकि दीर्घकालिक उपयोग से हृदय से संबंधित तथा फेफड़ों से संबंधित बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

क्रियाविधि :- वैज्ञानिकों द्वारा यह अध्ययन किया गया कि तंबाकू के धुएँ में निकोटिन कार्बनमोनाऑक्साइड, हाइड्रोजन सायनाइड, पॉली विशिष्ट नाइट्रोसामाइन (T.S.N.A.) शामिल हैं, जो श्वास के माध्यम से शरीर के अंदर प्रवेश करते हैं और कैंसर जन्य गुणों के कारण फेफड़ों के कैंसर का कारण बनता हैं।

तंबाकू को जलाने से उत्पन्न आंशिक रूप से ऑक्सीकृत हाइड्रोजन के जीनोटॉक्सिक प्रभावों की व्यापक रूप से जाँच के परिणामस्वरूप यह ज्ञात होता है, कि यह आनुवांशिक परिवर्तनों के संभावित स्त्रोत के रूप में कैंसरजन्य स्थिति का कारण बनती है। तंबाकू के धुएँ में कई समान कॉर्सिनोजन और ट्यूमर प्रमोटर होते हैं, तथा इसके धुएँ में पाए जाने वाले पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन प्रो-कार्सिनोजन होते हैं, जो साइटोक्रोम द्वारा कॉर्सिनोजन में परिवर्तित हो जाते हैं। बेंजोपायरीन कॉर्सिनोजनिक जो कैंसर का कारण है।

उपसंहार :- निकोटीन और कैफीन, अपने प्राकृतिक स्त्रोतों से भिन्न होते हुए, केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर उनके उत्तेजक प्रभावों में समानता रखते हैं। उनके उपयोग से स्वास्थ्य संबंधी दुष्परिणाम को समझना महत्त्वपूर्ण हैं। संभावित चिकित्सीय प्रयोग तथा इन मनोदैहिक दवाओं से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों के प्रबंधन के लिए रणनीति विकसित करने के लिए शोध की आवश्यकता हैं।

''भौतिकी का समाज और प्रौद्योगिकी में योगदान''

विक्रम सोनी
सहायक प्राध्यापक
भौतिकी विज्ञान

भौतिकी, विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें प्रकृति एवं प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। इस विषय के माध्यम से मानव प्रकृति के रहस्यों को जान और समझ पाया है।

भौतिकी यूनानी शब्द ''फुंसिकों'' से बना है जिसका अर्थ है ''प्रकृति का ज्ञान'' जिसमें ऊर्जा और बल जैसे संबंधित अवधारणाओं के साथ अंतरिक्ष और समय के माध्यम से पदार्थ और उसकी गति तथा व्यवहार का अध्ययन शामिल है। भौतिकी का मुख्य लक्ष्य यह समझना है कि ब्रम्हांड कैसे व्यवहार करता है।

समाज और भौतिकी का संबंध अत्यंत गहन है । भौतिकी में हुई खोजों के आधार पर ही समाज विकास के रास्ते पर चल पाया है। भौतिकी में होने वाली तरह-तरह की खोजों, नए-नए नियमों एवं अवधारणााओं के सूत्रपात्र से नए-नए साधनों और उपकरणों का अविष्कार हुआ। इनके प्रयोग से जीवन सुगम हो जाता है।

जिस प्रकार समाज और भौतिकी में गहरा संबंध है। इसी प्रकार भौतिकी का प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत योगदान है और इससे गहरा सम्बन्ध है। भौतिकी ने प्रौद्योगिकी के उपयोग से एम-आर-आई-(चुम्बकीय-अनुनाद-इमेजिंग), स्कैनर एक्स-रे, अल्ट्रासोनोग्राफी, केंसर रोगियों के लिए कीमोथैरेपी, माइक्रोवेव, टेलीविजन, रेफ्रिजरेटर, कम्प्यूटर आदि जैसे घरेलू उपकरणों का विकास किया जिससे जीवन सुगम तथा उद्योगों का विकास सम्भव हो सका।

प्रौद्योगिकी में नैनो टेक्नोलॉजी की अद्भुत देन है, इसने प्रौद्योगिकी क्षेत्र में क्रांति ला दी है, जिससे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की आई.सी. (Integrated Circuit) चिप का आकार छोटा हो गया एवं उपकरणों का आकार भी घट गया जिससे मोबाइल फोन, पॉमटॉप आदि का विकास सम्भव हो सका।

चूँकि भौतिकी का क्षेत्र विस्तुत है और इसका विभिन्न क्षेत्रों में योगदान है।अतः कह सकते हैं कि भौतिकी के ज्ञान के बिना समाज तथा प्रौद्योगिकी की कल्पना वर्तमान में असंभव है।

''कठिन परिश्रम का विकल्प नहीं''

लघु कथा

''ठोकर अच्छी है''

उमा भारती

बी.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)

संजना आठवीं कक्षा की छात्रा है, और पढ़ने में बहुत होशियार है। वह मन लगाकर पढ़ाई करती है तथा पढ़ना उसका शौक है। संजना का मध्यमवर्गीय परिवार है, उसके परिवार वाले चाहते हैं कि संजना पढ़ लिखकर इस दलदल से बाहर निकल जाए। आज जैसे ही सुबह मुकेश अपनी बेटी संजना को स्कूल छोड़ने के लिए जाने लगे, वैसे ही मोहल्ले वाले उनको घूरने लगे और तरह-तरह की बातें करने लगे, कोई कहता कैसा बाप है बेटी को घर का कामकाज सिखाने की बजाय स्कूल भेजता है, कोई कहता कि इन लोगों ने तो हमारे मुहल्ले की मर्यादाओं का सतुवा बना डाला, वहीं बगल से आवाज आई इस परिवार ने तो समाज के नियम तोड़ने का बीड़ा उठा रखा है, मुकेश ने उन सब की बातों का जवाब देना जरूरी नहीं समझा और संजना को स्कूल छोड़नें के लिए निकल गए। इसी प्रकार की बातें सुनते सुनते चार साल बीत गए और अब संजना 12वीं कक्षा प्रथम श्रेणी के अंकों के साथ उत्तीर्ण कर चुकी है। अब परिवार का सहयोग और संजना का आत्मविश्वास और भी सुदृढ़ होता जा रहा है, संजना का एडमिशन ग्रेजुएशन के लिए करा दिया गया। वह कॉलेज जाने लगी, छः महीने बीत गए लेकिन मोहल्ले वालों की मानसिकता में कोई सुधार नहीं हुआ । अब तो लोग उसके चरित्र पर भी सवाल उठाने लगे और उसे बदनाम करने पर आ गए। अपने चरित्र को लेकर संजना सदैव सचेत रहती है। वह हमेशा एक संस्कारी बेटी बनकर अपने परिवार का गुरूर रही है। जब उसके बारे में तरह-तरह की चरित्रहीन बातें होने लगी, तब उसे और उसके परिवार को ठोकर लगी। लेकिन संजना का आत्मविश्वास ठोकर खाने के बाद और भी रंग ला रहा था, उसने निश्चय किया कि वह अपना और परिवार का सम्मान वापस लाने के लिए बहुत मेहनत करेगी, और एक दिन सम्मानित पद की नौकरी करेगी। उसने यूपीएससी की तैयारी करने का निश्चय किया और तीन साल तक यूपीएससी की तैयारी करने के बाद जब उसने परीक्षा दी तो उसका मन बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसका लक्ष्य चंद कदमों पर ही था। कुछ समय बाद परिणाम घोषित हुआ और संजना का नाम सूची में प्रथम स्थान पर गौरवान्वित हो रहा था। अब संजना सबसे सम्मानित पद आईएएस पर सुशोभित हो रही थी, और उसके परिवार वालों को लोग सम्मान की नजर से देखने लगे थे। इसी बीच एक दिन सभी मोहल्ले वाले संजना के घर नजरें झुका कर पहुंचे, और संजना से और उसके परिवार से माफी मांगने लगे। तब संजना ने उन्हें समझाया और कहा अपनी मानसिकता सुधारिये और बेटियों को जरूर पढ़ाइए, हमेशा उनको प्रोत्साहित करिए। मुकेश ने मुस्कुराते हुए कहा, आप सभी ने हमारे परिवार पर जो आरोप लगाकर ठोकर लगाई है, ''ठोकर अच्छी है।''

समय का प्रबंधन

प्रिया दुबे
सहायक प्राध्यापक-अर्थशास्त्र

हमारे जीवन में समय महत्वपूर्ण है, समय को जिस तरीके से इस्तेमाल करेंगे उसी तरीके के नतीजे आपको देखने को मिलेंगे, बचपन से ही हमें समय का सही इस्तेमाल करने के लिए कहा जाता है, जो जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए बेहद जरूरी है।

हर इंसान के पास 24 घंटे होते हैं लेकिन समय का सही इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति ही सफल हो पाते हैं। किसी भी सफल आदमी के पीछे समय प्रबंधन की सबसे बड़ी भूमिका होती है।

समय नहीं रूकता किसी के लिये,
वो हर पल आगे बढ़ता जाता है
समय के साथ हम नहीं चले तो
समय बहुत आगे निकल जाता है।

आजकल हमारा समय फालतू कामों में ज्यादा बर्बाद होता है और चिंता की बात ये है कि हमें इसका पता भी नहीं चल पाता है। इन्टरनेट, सोशल मीडिया, टीवी हमारे समय को बर्बाद करते रहते हैं लेकिन हमें इसका जरा भी अंदाजा नहीं होता है। अगर आपका समय प्रबंधित नहीं है तो आप भी प्रबंधित नहीं है जिसके चलते आपको काफी नुकसान हो सकता है। इसीलिए अपने समय को उचित कार्यों में सही ढंग से इस्तेमाल करने के लिए समय प्रबंधन एक बेहतर विकल्प है।

अगर आपको भी अपने समय का बेहतर इस्तेमाल करना है तो आपके लिए समय प्रबंधन किताब रामबाण साबित होगी।

1.आजकल समय की इतनी कमी क्यूँ महसूस होती है ?

सारा खेल समय का है जब तक हमारे हाथों में घड़ी नहीं थी तब तक हमें समय की चिंता भी नहीं थी। लेकिन औद्योगीकरण ने हमें घड़ी का गुलाम बना कर रख दिया है। लोग पहले भी काम करते थे, उनको काम खत्म करने की जल्दी नहीं थी और न कहीं जल्दी पहुँचने की। क्योंकि उन्हें समय का अंदाजा ही नहीं था।

औद्योगीकरण ने घड़ी बनाई और लोग नौकरी से रूबरू हुए। नौकरी के लिए काम पर जाने और वहां से घर जाने का समय निर्धारित किया। हमें हर दिन किसी न किसी समय पर कहीं न कहीं पहुँचना होता है। इसीलिए हमें अपने लिए समय नहीं मिलता और हमें लगता है कि हम कितने ज्यादा व्यस्त है। इसीलिए हमें आजकल समय की इतनी कमी महसूस होती है।

2.आपके पास दरअसल कितना समय है ?

हर इंसान को दिन में 24 घंटे ही मिलते हैं लेकिन 24 घंटे में 10 घंटे सोने, नित्य क्रिया, खाने–पीने में बीत जाते है। अगर ढंग से देखा जाये तो इंसान के पास एक दिन में 14 घंटे ही मिलते है। हमारे जीवन के 58 प्रतिशत समय पर हमारा नियंत्रण है लेकिन 42 प्रतिशत समय पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। इसीलिए जिस समय पर हमारा नियंत्रण है उस समय को जो भी इंसान बेहतर तरीके से इस्तेमाल करेगा वही अपने जीवन में बड़े मुकाम को हासिल करेगा।

3. सबसे महत्वपूर्ण काम सबसे पहले करें।

जैसे ही हमारा दिन ुरू होता है हम फालतू कामों को अपने हाथ में ले लेते है जिससे हमारे महत्वपूर्ण काम छूट जाते है और हमारा समय फर्जी कामों में बर्बाद हो जाता है। इसीलिए आपको एक डायरी में अपने महत्वपूर्ण काम की सूची बना लेनी है। और सुबह नित्यक्रिया के बाद आपको सबसे पहले सबसे महत्वपूर्ण कामों को निपटाने की कोशिश करनी है। जब आपके महत्वपूर्ण काम पूरे हो जाते है उसके बाद आप बाकि कामों को भी कर सकते है।

4. यात्रा के समय का अधिकतम उपयोग करें।

जो व्यक्ति अपने समय को सही ढंग से इस्तेमाल करता है वही जीवन में सफल हो पाता है। लोगों का यात्रा में बहुत समय बर्बाद होता है। ज्यादातर लोग यात्रा के समय को गाना सुनके, गपशप करके या लोगों की बुराई करके बर्बाद करते हैं लेकिन कुछ लोग इस समय को अच्छी किताबें पढ़कर, अच्छी ऑडियोबुक्स सुनकर या फिर अपनी थकावट को दूर करने के लिए नींद पूरी करके अपने समय का बेहतर इस्तेमाल करते है।

'बापू'

अदिति पुंदीर
बी.ए.बी.एड.
विश्वविद्यालय प्रथम रेंक
स्वर्ण पदक-2022

भारत की पहचान बापू महात्मा की उपाधि पाई
सूरज की सन्तान बापू, सदा सत्य के थे पुजारी
दीन–दुखियों के सेवक बापू, दुखियों के दुखः हर्ता बापू
हमारे देश के राष्ट्रपिता, अहिंसा के पालनकर्ता बापू
सूत कातना, स्वयं करना अपना काम, इस पथ पर चलते थे बापू
सम्मान मिला ''केसर–ए–हिन्द'' हरिजनों के प्रिय थे बापू
सत्याग्रह से किया देश आज़ाद, प्यारे बापू, हमारे बापू।।

समंदर

कर के हिम्मत बदल दे मुकद्दर, तेरी किस्मत में क्या कुछ नहीं है,
उनको कुदरत भी देता सहारा, जो खुद ही बेसहारा नहीं है।।
बैठकर अपनी तकदीर पे अब, रोने–धोने से क्या फायदा है,
रंग लाएगी मेहनत तुम्हारी, दिल में बस होंसले की कमी है।।
जलजला, बिजलियाँ और आँधी, सब तुझे आजमाने चले हैं,
फिर खिला दे तू उजड़े चमन को, जल गया आशियाँ गम नहीं है।।
एक तूफां सा जागा है मन में, हर तमन्ना को करने हकीकत,
ठेस इंसानियत को न पहुँचे, तू है कतरा, समुंदर नहीं है।।

बेटियाँ

अलका गायकवाड़
(पूर्व छात्रा)

गर्भ से मत मारो हमको, बोझ नहीं, हम हैं बेट़ियाँ
धरती पर यदि आ जातीं, बोझ उठाती हैं, बेटियाँ
घर में माँ के संग काम में हाथ बटाँती हैं, बेटियाँ
पापा जल्दी घर न लौटे, राह देखती हैं बेटियाँ
ईद, दिवाली हो या होली, शान घरों की हैं बेटियाँ
रक्षाबंधन तो जब आए, कलाई की रौनक हैं बेटिंयाँ
इनको यदि शिक्षा दें तो आगे बढ़, सकती हैं, बेटियाँ
झाँसी की रानी, इंदिरा गाँधी, बन सकती हैं, बेटियाँ
जीवन भर पापा, मम्मी का ध्यान, रखती हैं, बेटियाँ
चाहे जिस दृष्टि से देखो व्यर्थ नहीं हम बेटियाँ
गर्भ में मत मारो हमको, बोझ नहीं हम बेटियाँ।।

हम लड़कियाँ

सोनाली जैन
बी.एस.सी, द्वितीय सेमेस्टर

लड़कों जैसे लड़कियाँ भी कोख में पलती हैं,
आँखे भी उनकी लड़कों जैसे पैदा होने पर खुलती हैं
सांसें उनकी बेदर्दी से कोख में रूकी होती हैं
उनको भी हक है जीने का वो भी जीना चाहती है
बेटियाँ – बेटियाँ – बेटियाँ!!
लड़कों की तरह लड़की भी मुटठी बाँध के पैदा होती हैं
लड़कों की तरह लड़की भी माँ की गोद में हँसती–रोती हैं
करते हैं शैतानियाँ दोनों एक जैसी, करते मनमानियाँ दोनों एक ही जैसी।
दादा की छड़ी दादी का चश्मा तोड़ देते हैं ।
लड़की दुल्हन के जैसा आँचल ओढ़ती हैं,
भूख लगे तो रोती हैं, लोरी सुनकर सोती हैं
बनती है दोनों की जोड़ी दोनों की कहानी बनती है
दोनों कदम मिलाकर चलते हैं, दोनों दीपक बनकर जलते हैं
लड़के की तरह लडकी भी नाम रोशन करती है
कुछ भी नहीं है वजह फिर क्यों जन्म से पहले मारी जाती है !
बेटियाँ – बेटियाँ – बेटियाँ!!!

भीड़ नहीं बनना है मुझे

याशी जैन
(बी.ए.-प्रथम सेमेस्टर)

मन को सुनना है मुझे, अपने रास्ते खुद चुनना है मुझे,
खुद से मुकाबला करते हुए, खुद से ही जीतना है मुझे,
भीड़ नहीं बनना है मुझे।।
राह में आने वाली, कठिनाइयों से लड़ना है मुझे,
कठिनाईयों से लड़ना है मुझे,
दिमाग के अनुसार चलते हुए,
अपने दिल की आवाज सुनना है मुझे
भीड़ नहीं बनना है मुझे।।
अपनी ही राह में, अपनों को साथ लेते हुए,
अपनी मंजिल से मिलना है मुझे
भीड़ नहीं बनना है मुझे।।
हाँ लिखते हैं लोग, किसी न किसी वजह से,
बेवजह ही लिखना है मुझे,
भीड़ नहीं बनना है मुझे।।

जीवन एक संघर्ष

बड़ी अजीब है ये, जिंदगी, जो चाहा वो पाया नहीं,
जो पाया वो सोचा नहीं, जो सोचा वो कभी मिला नहीं
जो मिला वो पास आया नहीं, जो खोया है वो याद आता नहीं
जो पाया वो संभलता नहीं, क्यों अजीब सी है, जिंदगी
कोई सुलझा पाया नहीं, जीवन में कभी समझौता करना पड़े
तो कोई बात नहीं!
क्योंकि झुकता नहीं है, जिसमें ज्ञान होता है
अकड़ तो मूर्खता की पहचान है,
जिंदगी जीने के दो तरीके होते हैं,
पहला जो पसंद आया, उसे हासिल करना सीखो,
दूसरा जो हासिल है, उसे पसंद करना सीखो
जिंदगी जीना आसान नहीं है,
बिना संघर्ष के कोई महान नहीं होता,
जब तक न पड़े हथौड़ी की चोट पत्थर पर
तब तक कोई भगवान नहीं होता
जिंदगी बहुत कुछ सिखाती है,
कभी हंसाती है तो कभी रुलाती है,
जिंदगी उसी के आगे सर झुकाती है,
जो हर कठिनाईयों में इसे हंस के गले लगाती है।

क्या कहता है हमारा राष्ट्रगान

अभिषेक गौड़
(बी.ए.-प्रथम सेमेस्टर)

जन	:	भारत की जन शक्ति
गण मन	:	गणराज्य भारत
अधिनायक जय हे	:	आदर्श का प्रतीक झंडा
भारत भाग्य	:	भारत वर्ष के भाग्य
विधाता	:	का निर्माता
पंजाब सिंधु, गुजरात	:	भारत के रंग बिरंगे
मराठा द्रविड़ उत्कल बंग	:	प्रदेश
विंध्य हिमाचल	:	हिमालय तथा विंध्यादि पर्वत
यमुना गंगा	:	भारत की नदियों की शक्ति
उच्छल जलधि तरंग	:	दक्षिण में लहराता समुद्र
तब शुभ नामे जागे	:	भारत का नाम शुभ है
तब शुभ आशिष मांगे	:	हम तुम्हारा आशीर्वाद मांगते हैं
गाहे तब जय गाथा	:	हमारी मंगलकारी योजना सफल हो
भारत भाग्य विधाता	:	भारत के भाग्य का निर्माता
जये हे	:	हमारी थल सेना की विजय कहानी
जये हे	:	हमारी जल सेना की विजय कहानी
जये हे	:	हमारी वायु सेना की विजय कहानी
जय जय जय जय हे	:	सारी दिशाओं में भारत की जय हो

व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है
वह जो सोचता है वहीं बन जाता है।
–महात्मा गाँधी

मुनि क्षमा सागर की कविताएँ...

रोशनी के लिए

साँझ के किनारे
खड़े होकर
मैंने पहाड़ से उतरती
रात को देखा
और सोच में
डूब गया
कि अंधेरा
कितने जल्दी
उतर आया
सुबह
रोशनी के लिए
सूरज को
पूरा पहाड़

अतृप्त

कामनाओं–का–कलश
ऊपर से
सोने–सा
दमकता है
उसमें कहीं नीचे
पैंदी में होता है
कोई इसे
कितना भी भरे
वह सदा
अतृप्त रहता है।

मित्रता

अभी तक मुझे
अपनों से
अपना सुख–दुख
कहना पड़ता है
अभी मित्रता इतनी
सघन नहीं हो पाई
कि अनकहे ही
सब महसूस हो जाये।

दोहरे गणित

जिन्दगी में
हमारे चाहे–अनचाहे
बहुत कुछ
हो जाता है
हमारा मनचाहा हुआ
तो लगता है
यह हमने किया
हमारा अनचाहा हुआ
तो लगता है
शिकायत करें–पूछें
कि यह किसने किया
जीवन–भर
इसी दोहरे गणित में
हम जीते हैं
और
समझ नहीं पाते
कि अच्छा–बुरा
चाहा–अनचाहा
अपने लिए सब
हम ही करते हैं
अपनी मौंत की इबारत
अपने हाथों
हम ही लिखते हैं।

अलगाव

सबसे अलग
दिखने की कोशिश में
हम अपने से भी
कितने अलग
दूर हो जाते हैं
कि समझ नहीं पाते
अब अपने से
कैसे मिले!

संकलन

संदीप जैन

कविता...

आत्मकथ्य

–मालती जोशी

समय के इस सिंधु में है,
बिंदु भर अस्तित्व मेरा
इसलिए अभिमान भी करती नहीं मैं।
प्राप्य जो मेरा रहा है,
वह मुझे सब मिल गया है
परम तृप्ति से ह्रदय का कलश नित भरती रही मैं।

छू न पाता है मुझे यह,
नुपुल कोलाहल जगत का
क्योंकि अपने आप से संवाद होता निरंतर
एक दुनिया साथ मेरे चल रही है जन्म से ही
और भीतर पल रही है, दूसरी दुनिया समांतर

उम्र के सोपान चढ़ती जा रही हूँ अनवरत मैं
कब कहाँ विश्राम होगा,
यह अभी अज्ञात है
आज तक जो भी रचा है
सब उस रचयिता की कृपा है
श्रेय की भागी बनी में यह अनोखी बात है

थी नहीं स्पर्धा किसी से,
और ईर्ष्या भी नहीं
हैं प्रभु के रूप में हम सब,
सत्य मैं यह जानती हूँ
राह में जो भी चले थे सब बंधु थे,
सब मित्र ही थे
आज मैं नव शीश ही आभार सबका मानती हूँ

संकलन
नित्या श्रीवास्तव
पुस्तकालयाध्यक्ष

कोई अर्थ नहीं

–राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर

नित जीवन के संघर्षों से
जब टूट चुका हो अन्तर्मन,
तब सुख के मिले समन्दर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

जब फसल सूख कर जल के बिन
तिनका–तिनका बन गिर जाये,
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

संबंध कोई भी हो लेकिन
यदि दुःख में साथ न दें अपना,
फिर सुख में उन संबंधों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

छोटी–छोटी खुशियों के क्षण
निकले जाते हैं रोज जहाँ,
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

मन कटुवाणी से आहत हो
भीतर तक छलनी हो जाए,
फिर बाद कहे प्रिय वचनों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

सुख–साधन चाहे जितने हों
पर काया रोगों का घर हो,
फिर उन अगनित सुविधाओं का
रह जाता कोई अर्थ नहीं।

एक लड़की बिपदा नाम की

बिपदा का पर्याय मुसीबत नहीं
सरल सहज व्यवहार है
वह छोटा सा गाँव है
नहीं किसी से लेना-देना
काम है उसका खुश कर देना
थोड़ी सी नटखट थोड़ी सी मोटी
वह है अपने घर में सबसे छोटी
न किसी से लड़ना न किसी से झगड़ना
अपने आप और अपने परिवार के साथ मस्त रहना
घर है मिट्टी का और छाई है ठाठ
उसके परिवार में सदस्य आठ
पापा और माई
चार बहन दो भाई
जब उसका जन्म हुआ था
आई थी छोटी सी आपदा
इसलिए उसका नाम पड़ा बिपदा

बिपदा जैन
बी.एड. (प्रथम सेमेस्टर)

कुछ रास्तों पर अकेले ही चलना होता है
ना रिश्ते होते हैं, ना कोई परिवार होता है
ना कोई साथ देने वाला होता है
ना पैसा होता है
ना रास्ता दिखाने वाला होता है
बस आप, आपकी हिम्मत और काबिलियत होती है।

कविता

आयुषी तिवारी
बी.एड. (प्रथम सेमेस्टर)

शान से करते टेढ़ी टोपी
लगा के हैं कल लाल चले
कंधों से मिलते कंधे इनके
करते ये कदमताल चले
उम्र भले ही लड़कपन की हो
जज्बा इनका बेजोड़ है पर,
सजे खड़े तैयार वर्दी में
आजाद हिंद के लाल चले।

सुविचार

सेजल यादव
बी.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

काम करो ऐसा कि एक पहचान बन जाए
हर कदम ऐसा चलो कि निशान बन जाए।
यहाँ जिंदगी तो हर कोई काट लेता है।
जिंदगी जियो इस कदर कि मिसाल बन जाए,
मंजिलें क्या हैं, रास्ते क्या हैं,
हौसले हो तो फासले क्या हैं
वक्त से लड़कर जो नसीब बदल दे
इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दे
कल क्या होगा कभी मत सोचो,
क्या पता कल वक्त खुद अपनी तस्वीर बदल ले।
बेहतर से बेहतर की तलाश करो
मिल जाए नदी तो समंदर की तलाश करो
टूट जाता है शीशा पत्थर की चोट से
टूट जाए पत्थर ऐसा शीशा तलाश करो।
ये जिंदगी है हसीं इससे प्यार करो
अभी है रात तो सुबह का इंतजार करो
वो पल भी आएगा जिसकी ख्वाहिश है आपको
रब पर रखो भरोसा वक्त पर एतबार करो।।

सुविचार

संकलन : साक्षी यादव
बी.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चढ़ती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना, ना अखरता है
मेहनत उसकी बेकार हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.
असफलता एक चुनौती है... स्वीकार करो
क्या कमीं रह गयी, देखो और सुधार करो
जब तक ना सफल हो नींद–चैन को त्यागो तुम
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किए बिना ही जय–जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती ।।

रचयिता– कवि सोहनलाल द्विवेदी

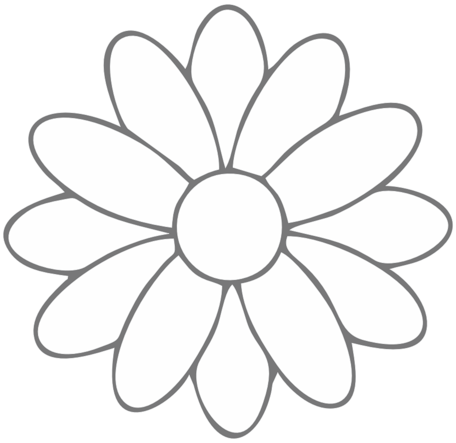

हम भारत की शान

अंशिका सोनी
NCC Cadit

हम भारत की शान हैं
हम भारत का अभिमान हैं
खाकी वर्दी हमारी पहचान है
एन.सी.सी. हमारा स्वाभिमान है
शिष्टाचार और सिद्धांतों में हम पक्के हैं
जीवन और पाठशाला में हमेशा सच्चे हैं
देश का साथ, देश का विकास हमारा काम है
हर पल हमारा नाम देश के नाम कुर्बान है
हम भारत की शान हैं
हम भारत का अभिमान हैं

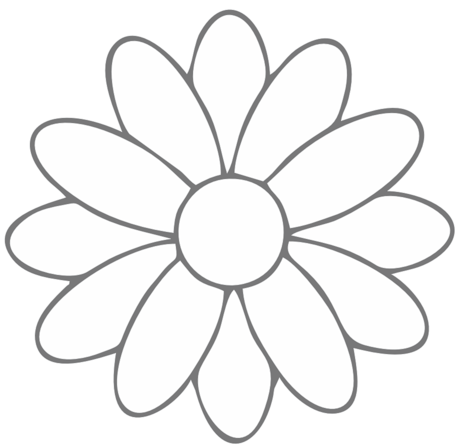

माँ

माँ से ममता, माँ से ममत्व है
माँ से हम और तुम हैं
माँ ही जगजननी, मां ही जगदम्बा है
माँ से दुनिया का हर एक कण है
माँ के चरणों में स्वर्ग, माँ की कोख में आराम है।
संकट कोई आए बच्चों पे, तो माँ काली बन जाए,
माँ के आर्शीवाद से, सब दुख दूर हो जाए
रातो-रात जागती माँ, दुख दर्द, सारे सह लेती है
माँ से ममता, माँ से ममत्व है......

'समय'

किसी के रोके कब रूकी है, समय की नदियां
बीते पल, लम्हें, दिन और फिर सदियां
इस जीवन में छाई है सुख-दुख की वादियॉ
गमों की धूप ने हमको रूला दिया,
तो सुखों की छांव ने हमको हंसा दिया
समय की लहर ने किसी जिंदगी को मिटा दिया,
तो इसी लहर ने किसी को नया जीवन दिया
जिसने इस दुनिया में हर काम समय से किया,
उसने ही जीवन को सही ढंग से जिया।

प्रीति पांडे
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा शास्त्र

'वातावरण'

प्राणी जगत में वही सफल, ले उधार जो खाए।
मौज करे जब तक जिए, मरे स्वर्ग में जाए।
धन दौलत जब तक रहे, जग बैरी न होय,
जे धनहीन प्राणी हुआ, उसे ना पूछे कोय।
बुद्धि लोमड़ी सी रखो, बनकर रहा सियार,
भूखे कभी ना मर सको, छलिया यह संसार।
राजनीति के ढोल में, आरक्षण की पोल,
नाम बड़े हैं, दर्शन छोटे, देखो आँखे खोल,
पहले सा अब रहा नहीं, गुरूदेव का मान,
एकलव्य दादा हुए, अब कैसे मांगे दान।
राजनीति के दाव पेंच में धर्म हुआ लाचार
मंदिर-मस्जिद बन गये लोगों के व्यापार,
देख स्वार्थी वातावरण, सत्य रहा मुस्काय,
झूठ का पंछी देर तक, नभ में न उड़ पाए।।

''जिदंगी''

प्रगति पाठक
बी.ए., बी.एड.-प्रथम सेमेस्टर

ए जिदंगी .... तू शायद किताब सी है ?
तजुर्बा है काफी, बहुत ही सफा है
मिला है जो गम, तो मिली खुशी भी कई दफा है
कभी खुशी, कभी गम की कतारें बेहिसाब सी है।
एक जिदंगी..... तू शायद किताब सी है ?
कुछ गम के पन्ने फाड़ दिए
कुछ खुशी का पन्ना जोड़ दिया,
कुछ याद रहा, कुछ भूल गए,
कुछ नया तर्जुबा रोज मिला,
तू हर उम्र के पन्ने पर, बहुत खास सी है.......
''ए जिदंगी'' तू शायद किताब सी है ?........

'लक्ष्य तक'

शीतल कुशवाहा
बी.ए.-प्रथम सेमेस्टर

आँधियाँ हैं, धूप है, रूकने का बहाना है।
मुझे तो चलना है, और चलते जाना है ।।
विघ्न सम्मुख, ना झुकूं मैं, बीच पथ पर, ना रूकूं मैं,
ध्येय ही मेरा ठिकाना है।
मुझे तो चलना है, और चलते जाना है।
मिलेगी धूल भी, पथ में चुभेंगे शूल भी,
बाधाओं से ना घबराना है।
मुझे तो चलना है, और चलते जाना है।।
सफलता की चाह जो है, कठिनता की राह जो है,
लक्ष्य तो, हर हाल में पाना है।
मुझे तो चलना है, और चलते जाना है ।।
त्याग कर तप, जो सो गया मै।
सुख मरीचिका में खो गया हैं,
सम्भाव्य भी, दुष्कर हो जाना है।
मुझे तो चलना है, और चलते जाना हैं।।
जीत का सपना जो है, स्वर्ण सा तपना तो है,
जीतना है तो स्वयं को हराना है।
मुझे तो चलना है, और चलते जाना है।।

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार हर जगह है,
ये बीमारी फैलती है कोईनही जानता है।
ये समाज के आधार को नष्ट करती है,
और हमें चाहती है और चाहती है और चाहती है ।
अमीर और अमीर होते जाते हैं,
जबकि गरीब और गरीब होते जाते हैं ।
सत्ता में बैठे लोग अपने दरबार बंद कर देते हैं,
न्याय, इंसाफ और सच्चाई से दूर हो जाते हैं ।
हमें खड़े होकर बदलना होगा,
भ्रष्टाचार से लड़ना होगा,
न्याय के लिए लड़ना होगा।

मनु अहिरवार
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

आजादी

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू ।
रात है काली अगर, दिया
जला कर रोशन कर तू ।
बीत गए कई साल
रूढ़िवादी विचारों में उलझ कर,
सुलझा मन के भाव तू ।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तू ।
तोड़ दे सारी दीवारें, आगे बढ़ विजयी राह पर ।
उन वीरों ने क्या पाया, अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जाग तू, छू ले आसमान,
आजादी पे है सबका हक ।

पूनम राज सूर्यवंशी
एन.सी.सी. कैडिट

मेरा भारत महान

भारत की भूमि पर,
धरती की सुंदरता है निराली,
हर कोना खूबसूरत है यहां,
पुरानी सभ्यता की है ये धरावाली।
जहां पे प्यार है हर धर्म से,
इंसानियत के रंग है खिले,
गंगा-यमुना की पवित्र धारा,
शांति और प्रेम का अमृत है मिला।
भारत के रंग - राग अनेक,
धर्म: भाषा और ऐतिहासिक जीवन,
गौरव से लहराते है तिरंगा,
विश्व में है ये अपनी पहचान
जय हिंद।

तिरंगा

मिनी सोलंकी
बी.ए. बी.एड.

तीन रंगों का नही वस्त्र,
ये ध्वज देश की शान है,
हर भारतीय के दिल का स्वाभिमान है,
यही है गंगा, यही है हिमालय,
यही हिन्द की जान है,
और तीन रंगों में रंगा हुआ
ये अपना हिन्दुस्तान है ।
अनेकता में एकता ही हमारी शान है ।
इसीलिए मेरा भारत महान है।।

विद्यार्थी तू सब्र तो कर

अमिता चौरसिया
बी.ए.बी.एड.-चतुर्थ सेमेस्टर

विद्यार्थी तू सब्र तो कर,
नियमितता से संघर्ष भी कर,
चिंता से नहीं, सहर्ष कर,
किताबों को स्पर्श तो कर,
उलझन नहीं, सुलझन की सोच,
विसर्जन नहीं, सर्जन की सोच ।
बिखरना नहीं, निखरना है तुझे ।
प्रश्नों में ही उत्तर तूं खोज ।

ज्ञान से बडा कुछ भी नहीं,
धर्म भी नहीं, सियासत भी नहीं,
धन भी नहीं, विरासत भी नहीं,
ज्ञान ही है सर्वोत्तम-इसमें जरा भी शक नहीं,
विद्यार्थी तू बस पढ़ता चल,
लक्ष्य पथ पर चलता चल,
सम्भव है इसमें बाधाऐं आना,
इन बाधाओं से तू लड़ता चल ।

समय का तू सदुपयोग कर,
इसका ना उपभोग कर,
मोबाइल से थोड़ी दूरी बना
अकल का तू प्रयोग कर ।
विद्यार्थी तू सब्र तो कर,
नियमितता से संघर्ष भी कर,
चिंता से नहीं, सहर्ष कर,
किताबों को स्पर्श तो कर ।।

भाग्यशाली

दीप्ति पटेल
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र

उसने सारा दिन काम किया, और सारी रात काम किया
उसने खेलना छोड़ा, और मौज मस्ती छोड़ी
उसने ज्ञान के ग्रंथ पढ़े, और नयी बातें सीखी
वह आगे बढ़ता गया, पाने के लिए सफलता जरा सा
दिल में विश्वास और हिम्मत लिए वह आगे बढ़ा
और जब वह सफल हुआ, लोगों ने उसे भाग्यशाली कहा।

मुस्कान

मुस्कान की कोई कीमत नही होती, मगर यह बहुत कुछ रचती है।
यह पाने वाले को खुशहाल करती है, देने वाले का कुछ घटता नही
यह क्षणिक होती है लेकिन यह यादों में, सदा के लिए रह सकती है
कोई इतना अमीर नहीं, कि इसके बगैर काम चला ले,
और कोई इतना गरीब नहीं, कि इसके फायदों को न पा सके
यह घर में खुशहाली लाती है, व्यापार में ख्याति बढ़ाती है।
और यह दोस्तों की पहचान है।
यह थके हुओं के लिए आराम है, निराश लोगों के लिए रोशनी
उदास के लिए सुनहरी धूप, और हर मुश्किल के लिए कुदरत की सबसे अच्छी दवा
तब भी न तो यह भीख में, न खरीदने से, न उधार मांगने से और
न चुराने से मिलती है क्योंकि यह एक ऐसी चीज है जो तब तक
किसी काम की नही जब तक आप इसे किसी को दे न दें।
दिन भर की भागदौड़ में कुछ परिचित हो सकते हैं कि इतने थके हों
कि मुस्करा न सकें।
तो इन्हें अपनी मुस्कान दीजिए।
किसी को मुस्कान की उतनी जरूरत नहीं होती, जितनी कि उसे,
जो खुद किसी को अपनी मुस्कान न दे सके।

वह भाषा अपनी हिन्दी है

अनुपमा भदौरिया
बी.एड.-चतुर्थ सेमेस्टर

ममता का रूप जो स्पष्ट करे,
संस्कृत से जन्मी बेटी है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

बिन सीखे सभी बोल पाते,
मिश्री सी मीठी बोली है।
दिल से दिल को जो जोड़ रखे,
रेशम की एक वो डोरी है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

वेद-उपन्यास रचयिता जिसमें,
साहित्यकार की प्रेमी है ।
था नाम रखा देवों ने जिसका,
पूर्व नाम 'देवनागरी' है ।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

प्रेमियों के मन के गीत कहे,
वो 'पंत' की मीठी वाणी है।
पुष्प की अभिलाषा कहती,
माखनलाल की कविता पुरानी है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

रामचरितमानस तुलसी की,
महाभारत भी एक कहानी है।
दोहे कबीर के लोगों को तो,
याद भी आज जबानी है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

सूरदास की सूरसागर,
बच्चन की वो मधुशाला है।
महादेवी की दीपशिखा,
जयशंकर की कामायनी है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

बाल्मिकी की रामायण,
घर-घर जायी दोहराती है।
सिर माथे का तिलक जो अपने,
नाम पर जिसके हिन्द है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

मातृभाषा का जो दर्जा पाया,
जो श्रेष्ठ भाषा कहलाती है।
जाति वर्ग और रंग-वर्ण में,
भेद कभी ना करती है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

सभ्यता पाश्चात्य आ जाने से,
जा रही रोज जो गर्त में है।
नव भाषाओं के आने से,
खो रही अपना अस्तित्व ये है।
जाने क्यों सभी भूल जाते,
कुछ बात अलग बस इसमें है।
हर भाव सहज जो व्यक्त करे,
वह भाषा अपनी हिन्दी है।

हमारा महाविद्यालय

अंजली आद्या
पुरा छात्रा

भारत के मध्य प्रांत मे, एक नगर है सागर प्यारा।
जिसमें है बहती, अपनी विद्या की सर्वधारा।।
जो ज्ञान की ज्योति देता, ऐसा बी.टी.आई.ई. हमारा।
देश के विकास में, नवीन युग की आस में
विज्ञान के प्रकाश में, आगे ही बढ़ता जाता है।
मानव की शिक्षा का, सेवा करता ऐसा भवन ये प्यारा,
ऐसा बी.टी.आई.ई. हमारा।
नवीन पथ चरण में, दिव्य भव्य सृजन में
नव चेतना का उदभव, मेघा का है बसेरा
गौर की गाथा कहता, अभिमान ये है हमारा
ऐसा बी.टी.आई.ई. हमारा।
दिनमान सा ये चमके, बने कृति का सरोवर
है राष्ट्र का ये गौरव, विज्ञान की धरोहर
उत्कृष्टता दिखाता, निज प्राण से भी प्यारा।
ऐसा बी.टी.आई.ई. हमारा।
इस महाविद्यालय की एन.सी.सी., एन.एस.एस. और
लाईब्रेरी की बहती है धारा,
जिससे प्रकाश के उद्भव से प्रकाशित करता
भारत के मध्य प्रांत में एक नगर सागर प्यारा
बी.टी.आई.ई. हमारा।

भारत की संस्कृति

मानसी चौरसिया
पुरा छात्रा

ऐसा देश मेरा भारत महान ।
जहां देश की संस्कृति का सम्मान ।।
यहीं गंगा, जमुना, सरस्वती की पवित्रधारा ।
सर्वदा बहती रहे ये बनकर जीवनधारा ।।
जिस मां की गोद से निकली जीवनधारा।
उस भारत माँ को नमन हमारा।।
भगवान का एक ऐसा रूप
जो बना हमारे लिए अन्नदाता ।
उसी को तो किसान कहना
सिखाती है हमारी माता।।
जिस देश में जन्मी लक्ष्मी,
दुर्गावती और अवन्ती जैसी वीरांगना ।
उस देश का सूना नही हो सकता कभी अंगना।
गंगा सी लगातार बहने वाली नदी,
और अटल सा बड़ा हिमालय ।
इनसे है हमारे भारत की पहचान
वही हमारे भारत की शान ।

बेटियाँ

संकलन-
अंकुर भारती
बी.ए.,बी.एड. (द्वितीय सेमेस्टर)

बेटियाँ शुभकामनाएं हैं।
बेटियाँ पावन दुआएँ हैं।
बेटियाँ, समाज के दर्पण की,
बेटियाँ, जातक कथाएँ हैं।
बेटियाँ, गुरूग्रंथ की वाणी,
बेटियाँ, वैदिक ऋचाएँ हैं।
जिनमें खुद भगवान बसता है,
बेटियाँ, ये वंदनाएँ हैं।
त्याग, तपस्या, गुण, धर्म, साहस की
बेटियाँ, गौरव-कथाएँ हैं।
मुस्कुरा के दर्द पीती हैं।
बेटियाँ, हर्षित व्यथाएँ हैं।
लू-लपट को दूर करती हैं,
बेटियाँ, जल की घटनाएँ हैं।
इस प्रदूषण के जमाने में,
बेटियाँ, सुरभित फिजाएँ हैं।
दर्जनों के दौर में करीब से देखा
बेटियाँ, संवेदनाएँ है।

जीवन के ग्यारह मूल्य

संकलन-
साबिर आजाद
सहायक प्राध्यापक,
कम्प्यूटर विज्ञान

01. समय का मूल्य
02. दृढ़ता की सफलता
03. कार्य करने का आनंद
04. सादगी की गरिमा
05. चरित्र का मूल्य
06. करूणा की शक्ति
07. कर्तव्य परायणता का दायित्व होना
08. अर्थव्यवस्था का ज्ञान होना
09. धैर्य का गुण होना
10. प्रतिभा का उन्नयन
11. उत्पत्ति का आनंद

"मेरा गाँव..........."

किरण तिवारी
सहायक प्राध्यापक
(शिक्षाशास्त्र)

हैं नहीं मोती यहां पर, हैं नहीं कंचन यहां
प्रेम का, विश्वास का, सम्मान का है धन यहां
हैं नहीं इंसान रूपी जानवर का वन यहां
है सभी गायों में पशुओं में भी बसता मन यहां
पास्ते के नाश्ते का है नहीं साधन यहां
प्रेम की दो रोटियों से है खिला जीवन यहां
न प्रदूषित नीर से कोई भरा बर्तन यहां
शुद्ध, कंचन नीर का बरसा सदा सावन यहां
कागजों के चीथड़ों के न मिलें गुलशन यहां
मोगरे से, तुलसियों से हैं सजे आँगन यहां
पक्षियों के गीत का होता सदा गुंजन यहां
कोई पाखी का कभी देखे नही क्रंदन यहां
हर पड़ोसी का पड़ोसी से मिला है मन यहां
कोई हृदय की तरफ से है नहीं निर्धन यहां
आओ देखो है महकता गाँव का दामन यहां
भोर, सांझ, रैन का खिलता सदा आनंद यहां।

वो है माँ

सोनाली सेन
बी.एस.सी. (चतुर्थ सेमेस्टर)

हमें जिंदगी दे के, जो खुद की इच्छाएँ मार दे वो है माँ
हमें खुश रखकर, जो खुद खून के आँसू रो ले, वो है माँ।।
हम उन्हें एक पल की खुशी भी न दे पाए,
और उन्होंने हमें अपनी पूरी जिंदगी दे दी,

हमारी जिद् को सहकर हमारी गलतियों को बचपना कहकर माफ कर दे, वो है माँ ।

नौ महीने की तपस्या को हम, एक पल में भूल जाते हैं, उनकों दुख दे के हम अपना दिल बहलाते हैं,
जो दुनिया से हमारे लिए लड़ जाए जो खुद के लिये हमारे लिए भूल जाएं, वो हैं माँ ।
जिसके साथ बाँट कर हमारे सारे दुख कम हो जाए,
हमारी हर तकलीफ में जो पहला शब्द हमारे मुँह से निकले, वो है माँ ।
कौन कहता है कि भगवान नहीं दिखते या कौन कहता है जीते जी स्वर्ग नहीं मिलता, मैंने महसूस किया है,
जिसकी गोद में स्वर्ग का एहसास हो, जिसके चरणों में शांति का निवास हो, वो हैं माँ ।
आज हम अपनी खुशियों में माँ का त्याग भूल जाते हैं, जिसने अपनी खुशी या गम में सिर्फ हमारी सलामती मांगी है,
बस इतना कहना चाहती हूँ भगवान का दूसरा अवतार है, तो वो है माँ।।

मेरा भारत महान

पूनम राज सूर्यवंशी
बी.ए.

भारत के भूमि पर, धरती की सुंदरता है निराली,
हर कोना खूबसूरत है यहां, पुरानी सभ्यता की है ये धरावाली।
जहां पे प्यार है हर धर्म से, इंसानियत के रंग है खिले,
गंगा-यमुना की पवित्र धारा, शांति और प्रेम का अमृत है मिला।
भारत के रंग-राग अनेक, धर्म-भाषा और ऐतिहासिक जीवन,
गौरव से लहराते है तिरंगा, विश्व में है ये अपनी पहचान
जय हिंद।

ये कॉलेज का दौर लौट के नहीं आएगा

ये कॉलेज का दौर अब लौट कर नहीं आएगा
दोस्तों को यहीं भूल जाएगा
अब पास होने की खुशी, और फेल होने का दुख नहीं होगा
अब यारों के पास वो मस्ती का समय नहीं होगा
इस दौर ने कुछ सिखाया है, बहुत कुछ बतलाया है
कुछ सच्चों से मिलवाया, तो कुछ झूठों से भी वाकिफ कराया है
मुझे तो जीने का अंदाज भी इसी ने सिखाया है
जीत और हार का फर्क क्या होता है, इसी ने तो बतलाया है
कुछ अपने थे जो रूठ के चले गए
गमों से थोड़ा हमें भी मिला गए
किसी की कहानी अधूरी रह गई तो
किसी को जिंदगी तोड़ के चली गई
किसी को हँसना तो किसी को रोना सिखा गई
ये कॉलेज की यादें यहीं छूट गई
कुछ गलतियां थीं वो सुधारूंगा,
मैं भी किसी को अब अपना नहीं बनाऊंगा
अब दोस्ती पर किसी का हक नहीं होगा
अब कोई कसमों से बंधन नहीं होगा
खुशी के आंसू अब नहीं लाएगा
ये कॉलेज का दौर, अब लौट के नहीं आएगा

यश मिश्रा
बी.एस.सी.
(चतुर्थ सेमेस्टर)

"जिन्दगी"

जिन्दगी बहती है, और बहती ही जाती है,
जिन्दगी झरना, नदी, और समन्दर सी होती है,
जिन्दगी बहती है, और बहती ही जाती है।
जैसे झरने की तरह, जिन्दगी बचपन को बहाती है,
और हम कब बड़े हो जाते है, पता भी नहीं चलता
क्योंकि, जिन्दगी बहती है और बहती ही जाती है।
और जब हम जवान होकर बूढ़े हो जाते हैं,
तब जिन्दगी, नदी सी हो जाती है
जो बहती है, और बहती ही जाती है,
जिन्दगी बहती है, और बहती ही जाती है,
और जब जिन्दगी हमें समन्दर तक लाती है,
तब सिर्फ जिन्दगी में जिन्दगी की यादें ही रह जाती है
जिन्दगी बहती है और बहती ही जाती है,
इसलिए जिन्दगी को, जीना सीखो बहाना नहीं,
क्योंकि जिन्दगी बहती है, बहती ही जाती है।

भारती सोनी
बी.ए. बी.एड. (अष्ठम सेमेस्टर)

इंकलाव

वीर शिवाजी का भाला, मैं उधम सिंह का गोला हूँ
झाँसी की रानी का बादल, मैं भगत सिंह का चोला हूँ
खूनी हस्ताक्षर करवा कर, भारत के खून में खौला हूँ
मैं भारत माँ का बेटा, इंकलाब ही बोला हूँ
भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव ने बलिदानी दे डाली
भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू ने फंदे को चूम लिया
भारत माँ के चरणों में अपना बलिदान दिया
मैं भारत का संविधान हूँ, कभी नहीं जो बोला हूँ
मैं भारत माँ का बेटा, इंकलाब ही बोला हूँ
मैं गाँधी का गाल नहीं, जो थप्पड़ को भी सह जाऊँ
मैं उस माता का लाल नहीं, जो हौंवा से ही डर जाऊँ
मैं शेखर सा प्रखर तेज, हर एक युवा में सोया हूँ
मैं भारत माता का बेटा, इंकलाब ही बोला हूँ

यश मिश्रा
बी.एस.सी. (चतुर्थ सेमेस्टर)

"बचपन"

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल दिल्ली का दिवाना था।
खबर न थी कुछ सुबह की।
न शाम का कोई ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था
माँ की कहानी थी
परियों का फसाना था
बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था।
रोने की वजह न थी।
न हंसने का बहाना था
क्यों हो गए हम इतने बड़े
इससे अच्छा तो वो
बचपन का जमाना था।

साक्षी जैन
बी.एड. (प्रथम सेमेस्टर)

''पेशावर डायरी''

अंजली दुबे
सहायक प्राध्यापक
न्यायिक विज्ञान

स्कूल के आतंकी हमले में घायल एक बच्ची के अंतिम विचार

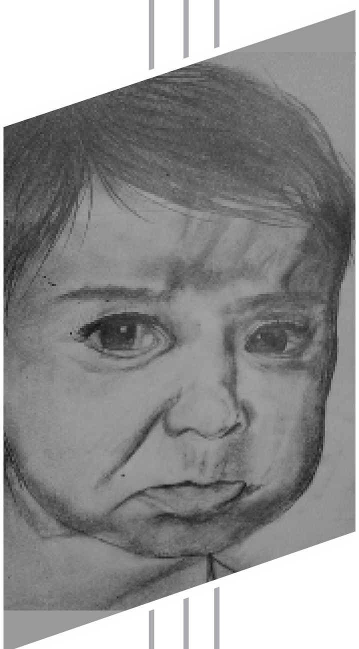

अंधेरा है छाया, साँसें मध्यम होती हैं माँ
दहशत हवाओं में, तेरी याद आती है माँ।।
मेरे सपनों की इक आखिरी उड़ान अभी बाकी है
तेरी गुड़िया में माँ, अभी जान बाकी है
नाम लेते खुदा का, कत्ल मजहब का करते जाते
कैसे बंदे है खुदा के, जो लहू मासूमों का बहाते
बारूद की दस्तक है, जहर है गोली में।
कितना कहर है, काफिरों की बोली में
गयी रात जो अधूरी थी, वो कहानी अभी बाकी है
तेरी गुड़िया में माँ, अभी जान बाकी है
उम्मीदे थीं सपने थे, खुशी थी बस्ते में,
तितलियों के संग-संग चली थी रस्ते में।
टीचर भी रोज सबक अमन का सिखाती थीं।
हमें ही तो मुस्तकबिल वतन का बताती थीं।
फिर क्या गलती, क्या खता ऐसी हुई
तुझसे माँ फिर मिलने की आस झूठी हुई।
खून से लतपथ सारे दोस्त मेरे हैं
इंसान से ही दिखने वाले, दानव मुझको घेरे हैं।
बंदूकें हैं काली, कुछ उनसे डरती हूँ,
तेरी ही तो बेटी हूँ, अब भी उनसे लड़ती हूँ।
खामोशी हूँ पेशावर की, दुनिया पर सावली हूँ,
सांस अब नहीं आती, क्या मैं मरने वाली हूँ ?
आखिरी सांस का, इक आखिरी सलाम अभी बाकी है।
मेरे सपनों की, इक आखिरी उड़ान अभी बाकी है।
तेरी गुड़िया में माँ, अभी जान बाकी है.......

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर
(महिला इकाई)

सागरश्री हॉस्पिटल

बी.टी.इन्स्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस
अभिमुखीकरण कार्यक्रम
Orientation Programme
WELCOME
BTIE

जिला प्रशासन एवं बी टी इंस्टिट्यूट ऑफ एक्सीलेंस मकरोनिया में मतदाता जागरूकता के अंतर्गत लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका पर एक दिवसीय सेमिनार संपन्न हुआ। सेमिनार के मुख्य अतिथि जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं जिला स्वीप नोडल अधिकारी श्री पीसी शर्मा रहे। उन्होने युवाओं को मतदान करने हेतु जागरूक किया एवं शत प्रतिशत मतदान हेतु शपथ दिलाई

SVEEP

चुनाव का पर्व
DESH KA GARV
LOK SABHA ELECTION 2024

BTIE

BTIE

पराक्रम दिवस
माला
2022

बी.टी.इन्स्टीट्यूट ऑफ एक्सीलैंस
व्यास पूजा कार्यक्रम
"शिक्षक अभिनन्दन समारोह"
WELCOME

राष्ट्रीय युवा दिवस
BTIE
स्वामी विवेकानंद जी
कोटि-कोटि नमन
B.T. INSTITUTE OF EXCELLENCE MAKRONIYA, SAGAR

शिक्षा नीति-2020 का
प्रावधान

One-Day Awareness Programme
on
Sexual Harassment of Women at Workplace
(Prevention, Prohibition and Redressal) Act, 2013
Venue : B.T. Institute of Excellence, Makronia, Sagar
9th December 2021

गुरु पूर्णिमा की
हार्दिक शुभकामनाएं..

BTIE
वालीबॉल (पुरूष) प्रतियोगिता

शिक्षक पर्व-2022
व्याख्यान माला
सोमवार, 05 सितम्बर 2022
BTIE
बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस

कबड्डी प्रतियोगिता
Welcome
REDMI NOTE 9
AI QUAD CAMERA

English Section

Humanism:
A Much Needed Religion To Be Adopted.

Ferheen Khan
Assistant Professor
(English Literature)

Humanism was an intellectual movement typified by a revived interest in the classical world and studies which focussed not on religion but on what it is to be human. Its origin went back to 14th-century in Italy and such authors as Petrarch (1304-1374) who searched out 'lost' ancient manuscripts. By the 15th century, humanism had spread across Europe.

Humanists believed in the importance of an education in classical literature and the promotion of civic virtue, that is, realizing a person's full potential both for their own good and for the good of the society in which they live.

"Human decency is not derived from religion. It precedes it."

-Christopher Hitchens

Enlightenment principles and liberal religious movements shaped the Humanist worldview which prioritizes reason, scientific critique, civil freedoms, compassion, and pragmatic ethics. These non-religious guiding values form the center of a belief system that rejects the supernatural, reaffirms universal human dignity, and places trust in the ability of cooperative human effort to create a better future.

The divine, in various forms, has played a central role in many cultures throughout human history. Human cultures across time have wondered how to find the divine, how to know the divine, and how to please the divine. Humanists reject this focus. Placing human beings firmly in the center of their worldview, Humanists ask: “How, in this one life we have, might we make the most of our time here for ourselves and for others?” For Humanists, human concerns come first; they trump tradition, dogma, or creed. Humanists seek to discover what best promotes human flourishing while leaving behind those beliefs and practices that would prevent humanity from achieving its full potential.

Humanists seek inspiration from many sources. The boundless beauty of the cosmos filled Humanist scientist Carl Sagan with reverential awe. Philosopher Bertrand Russell found the rigors of geometry “dazzling as first love.” Ernestine Rose, a social reformer and activist, found her work to promote women's suffrage and abolitionism to be deeply satisfying. Margaret Sanger sought to change attitudes regarding reproductive rights, founding Planned Parenthood. And Gene Roddenberry, creator of Star Trek, expressed his Humanism with a hopeful vision of human life among the stars.

Wherever human beings reach out to better understand the universe and our role within it, wherever human concerns are placed above the will of a God or the needs of a tradition, wherever people believe that a better world is possible in this life, Humanism lives.

Be what you actually are.

Be a human.

"Forensic Science Unleashed: The Intriguing World Beyond Crime Scenes"

Anjali Dubey
Assistant Professor,
Forensic Science

Introduction:

Step into the riveting world where science meets mystery, where evidence speaks louder than words, and where every detail tells a story waiting to be unveiled.

Forensic Science, often portrayed as the Sherlockian art of deduction, is not just a subject of textbooks but an adventure that unlocks the secrets hidden within crime scenes. Let's embark on a journey that goes beyond the mundane, exploring the exciting facets of forensic science that make it more than just a college course.

The Crime Scene Investigation Effect: Unravelling the Myths

Ever wondered how forensic science differs from the gripping crime dramas on TV? Let's debunk the myths and get to the heart of the matter. Real-life forensic investigations may not always unfold in 45-minute episodes, but the science behind them is just as captivating. Discover the truth behind the CSI effect and how it influences both the public perception and the work of forensic scientists.

Forensic Superheroes: Meet the Real Detectives

Forensic scientists aren't just lab-coat-wearing professionals; they are the unsung heroes behind solving real-life mysteries. Dive into the stories of individuals who've made groundbreaking contributions to the field. From pioneers who shaped the early days of forensic science to modern-day experts using cutting-edge technology, these real detectives make the world of forensics come alive.

Interactive Crime Scenes: The College Lab Experience

Forensic science isn't confined to textbooks—it's a hands-on experience that brings theory to life. Imagine stepping into a simulated crime scene, donning gloves, and collecting evidence. Explore how college labs transform into interactive crime scenes, where students become investigators, applying the principles they've learned to solve mock mysteries. It's a chance to put those analytical skills to the test in a thrilling, real-world context.

Tech Marvels: Beyond Fingerprinting and DNA

Forensic science isn't stuck in the past; it's racing towards the future with cutting-edge technology. Discover the high-tech marvels that go beyond traditional fingerprinting and DNA analysis. From advanced imaging techniques to digital forensics that uncover secrets hidden in electronic devices, the arsenal of forensic tools is expanding, offering endless possibilities for exploration and discovery.

Pop Culture and Forensic Science: A Thrilling Connection

Forensic science isn't just confined to the lab; it has infiltrated pop culture, influencing the way we perceive crime and investigation. Explore the captivating connection between forensic science and popular TV shows, movies, and novels. From classic mysteries to modern thrillers, these stories not only entertain but also provide a window into the intriguing world of forensic investigation.

Forensic Science: More Than a College Course

As you delve into the realms of forensic science, it becomes clear that it's more than just a subject to pass in college. It's an adventure, a puzzle waiting to be solved, and an opportunity to make a real impact. So, let the mysteries unfold, the stories emerge, and the fascination for forensic science ignite. Who knows? You might just find your inner detective along the way.

"The Power of Biotech, THE PROMISE OF PROGRESS"

Nigar Hashmi
Assistant Professor (Zoology)

Once a niche field, **biotechnology** has evolved into a dynamic force, impacting our lives in ways we might not have envisioned. From **gene therapy** to **genetically modified organisms**, the field has gained prominence, especially during the **COVID-19** pandemic, where it emerged as a beacon of hope for new drugs and vaccines.

Defying Stereotypes - Biotechnology

is not just about cloning and genetically modified organisms; it encompasses age-old practices like beer-brewing, crop breeding, and antibiotic production. Essentially, it's the use of living systems and organisms to develop products or applications that leverage biological systems.

Agriculture's Transformation :

Pest-Resistant Crop Innovation has significantly impacted agriculture by creating genetically modified crops, Genetically modified crops are revolutionizing agriculture by maximizing yields and minimizing the need for fertilizers. E.g. Like **Bt cotton** and **Golden rice** demonstrate biotechnology's role in enhancing crop resilience and nutritional content.

Medical Marvels:

In medicine, **recombinant DNA technology** enables the mass production of safer and more effective therapeutic drugs. **Genetically Engineered Insulin**, produced through this technology, stands as a purer and more cost-effective alternative to animal-derived insulin and many other products.

Vaccine Production:

Biotechnology has significantly expedited the development and production of vaccines. Modern vaccine manufacturing often involves **genetic engineering techniques**, enabling the creation of safer and more effective vaccines against various diseases, including those arising during global health crises like the **COVID-19 pandemic**.

Gene Therapy: Correcting the Blueprint

Gene therapy, a collection of methods correcting gene defects, holds promise in treating various diseases. From replacing faulty genes with normal ones, it's a frontier in medical science. Diagnostic techniques, like **PCR** and **ELISA**, are also advancing, enabling the detection of pathogens even at extremely low concentrations.

CRISPR-Cas9:

Editing Genomes with Precision CRISPR technology, derived from bacteria, allows researchers to edit DNA sequences with remarkable precision. Its applications range from studying **single-gene disorders** to exploring treatments for diseases like **cystic fibrosis and sickle cell disease etc.**

Transgenic Animals: Beyond Mice

Transgenic animals, with manipulated DNA, serve as invaluable models for studying gene regulation and disease development. From producing human proteins to testing vaccine safety, these animals contribute significantly to medical and scientific advancements. Such as **Dolly the sheep**, **oncomouse** genetically modified to be prone to **cancer** is a notable example of a transgenic animal.

DNA fingerprinting

A groundbreaking application of biotechnology, plays a pivotal role in forensic investigations and paternity testing. It utilizes the unique patterns in an individual's DNA to establish identity with unparalleled accuracy.

Biotechnology makes **Fermentation** more efficient and diverse flavors, while in **Baking**, it improves dough and adds unique tastes. It also helps extend the shelf life of baked goods. Beyond the kitchen, biotech influences industries like biofuels and contributes to innovations in baking, making food processes better and more exciting.

Enzyme Engineering for Industrial Applications

Biotechnological processes are instrumental in the large-scale production of enzymes used across industries. Through genetic modification, enzymes with optimized properties are crafted, enhancing industrial processes in areas such as laundry detergents, food production, and textiles.

Biofuels and Sustainable Energy

Biotechnology contributes to the development of **biofuels**, providing an alternative to traditional fossil fuels. Microorganisms are engineered to produce biofuels like **ethanol**, offering a renewable and eco-friendly energy source.

Reducible Plastic Solutions

Biotechnology addresses environmental concerns associated with conventional plastics by contributing to the **development of biodegradable and reducible plastics**. Engineered microorganisms facilitate the breakdown of these plastics, presenting a more environmentally sustainable approach to plastic waste management.

"Unlocking nature's own cleanup crew

Biotechnology pioneers a greener future by employing specially crafted microorganisms and enzymes to efficiently tackle pollution. Tailored for precision, these biological agents become environmental allies, **making our ecosystems cleaner and healthier.**

Global Impact and Future Prospects

Biotechnology isn't just a scientific endeavor; it's a tool for global development. Innovations in personalized medicine, drug research, artificial intelligence, and synthetic biology are poised to address challenges like food and water insecurity, paving the way for a more sustainable and secure future. In conclusion, **The Power Of Biotechnology Extends Far Beyond Laboratories, Shaping Our Present And Offering Promises Of A More Resilient And Advanced Future.**

QUOTE

Your attitude will determine your altitude.
Education is the key to unlock the golden dose of freedom
Best way to lift one's self up is to help someone else.
Life is not about finding yourself, its all about creating yourself.
"Success is not final, failure is not fatal
It is the courage to continue that counts," - Winston Churchill

Gungun Chhablani
B.A. (I Sem)

The Power of
Positive Thinking

Aditi Jain
Assistant Professor- Psychology

Each one of us has this constant need of love, admiration and acceptance. However, people often fall victim to outbursts, anger, fear and dislikes. All these elements are mere manifestations of our negative thoughts. But the thing with negativity is that, the more you express it, the more you attract it. That's where power of positive thinking comes into the picture.

There are many who do not believe in the power of positive thinking, considering it as just nonsense. If you are naturally positive, then the way you approach and handle situations attracts positive results.

Thinking positively means admitting into the mind only thoughts, words and images that are conducive to growth, expansion and success. It is the expectation of only good and favorable results. When the mind is positive, it expects happiness, joy, health and a successful outcome of every situation and action. Whatever the mind expects it, finds it. When our attitude is positive we entertain pleasant feelings and constructive images, and see in our mind's eye what we really want to happen. This brings brightness to the eyes, more energy and happiness.

"A loving person lives in a loving world. A hostile person lives in a hostile world.

Everyone you meet is your mirror".

The power of thoughts is a mighty power that is always shaping our lives. This shaping is usually done subconsciously, but it is possible to make the process a conscious one. Even if the idea seems strange, give it a try, as you have nothing to lose, but only to gain. Forget what others might say or think about you if you change the way you think.

A positive mind anticipates happiness, joy, health and a successful outcome of every situation and action. **Avoid sentences like 'I wish I could have' or 'I wish I should have'. Past is gone and future comes when it comes. Present is what we have so we must make the most out of it. Be natural and be happy with what you are and what you have.**

Focusing on what you have will give you more happiness instead of pondering over what you lack. These simple suggestions will help you in developing positive thinking in your life.

Personal Calling

Discovering and Embracing Your Divine Path in Life

Palak Sadani
B.Com. (III Sem)

What is a personal calling? It is God's blessing, it is the path that God chose for you here on Earth. In the realm of spirituality and self-discovery. The concept of a personal calling holds immense significance. Often considered a divine blessing or a predetermined path chosen by a higher power, our personal calling is the essence of our purpose here on Earth.

Whenever we do something that fills us with enthusiasm, we are following our legend. However, we don't have the courage to confront our own dream, why?

There are four obstacles. First, we are told from childhood onwards that everything we want to do is impossible. We grow up with this idea, and as the years accumulate, so to do the layers of prejudice, fear and guilt. There comes a time when our personal calling is so deeply buried in our soul as to be invisible, but it's still there.

If we have the courage to disinter our dream, we are then faced by the second obstacle: love. We know what we want to do, but are afraid of hurting those around us by abandoning everything in order to pursue our dream. We do not realize that love is just a further impetus, not something that will prevent us going forward, and that those who genuinely wish us well want us to be happy and are prepared to accompany us on that journey.

Once we have accepted that love is a stimulus, we come up against the third obstacle: fear of the defeats we will meet on the path. I ask myself: are defeats necessary? Well, necessary or not, they happen. When we first begin fighting for our dream, we have no experience and make many mistakes. The secret of life, though, is to fall seven times and to get up eight times.

Why is it so important to live our personal calling if we are only going to suffer more than other people? Because once we have overcome the defeats -and we always, do - we are filled with greater sense of euphoria and confidence.

Then comes the fourth obstacle: the fear of realizing the dream for which we have been fighting all our lives. Oscar Wilde said, "Each man kills the thing he loves" and it's true. The mere possibility of getting what we want fills the soul of the ordinary person with guilt.

This is the most dangerous of the obstacles because it has a kind of saintly aura about it: renouncing joy and conquest. But if you believe yourself worthy of the thing you fought so hard to get, then you become an instrument of God, you help the Soul of the World, and you understand why you are here.

Life : A True Meaning

"Destiny is not matter of a chance,
it is a matter of choice".

Shalini
B.A., B.Ed. (I Sem)

Life is not happening to you .... Life is following you, your destiny is in your hands. Always be positive about your decisions. Will power acts as a great weapon in your life. Power acts as a great weapon in your life. Have confidence in yourself and follow what Tagore says, "Where the mind is without fear and the head is held high" Never be afraid of obstacles overcome them with courage and spirit. The first step to achieve something in life is to decide what you want. Then start working hard to achieve that goal, it is rightly said that - "Whatever the mind of man can conceive, it can achieve".

"If a drop of water falls in a lake, it has no identity. But if it falls on a leaf of lotus, it shines like a pearl"

So choose the best place where you can shine.

Goal Setting Process

There are stages in the goal setting process.

Desire or passion: This is the first step to any goal-setting process. Have a desire, put your dreams down on paper in an organized manner, draw a mind map and visualize the goal.

"**Identify the benefits of achieving the Goal** " The next step in goal setting process is to identify the benefits of achieving the goal. Make sure that you are reaching where you actually want to go and what you will get when you go there.

Identify obstacles and challenges: This is a very crucial step towards goal-setting because, if you know what problems you are likely to face, you are almost half way towards finding solutions.

Identify people and resources : This is the fourth step in the goal setting process. You cannot achieve anything in life without help. The idea is to identify people who have the potential to help you and also find out what resources you will require to make your challenges less difficult.

Setting milestones with timelines to achieve the goal: If you have a goal without knowing when you need to achieve it, it is of no use. Set realistic timelines to achieve your goals. To set timelines, break the goals into smaller and more achievable sub goals. Then making timelines and milestones will not be difficult.

College Life

Heena Dilare
(B.A.-III Sem.)

College life is one of the most memorable years of one's life.
It is completely different from school life.
College life reveals us new experiences and things that
We don't know much about.
It is said to be the best time of a student's life.
With just the right amount of freedom and responsibility.
It is the phase which builds our careers and future.
This is the time when we take a first step towards our dreams.
This is the time, when our future is in our hands and our
Actions are the reason for our success.
So leave every distraction and move forward
towards success, for your good future.

Your Best

Gungun Chhablani
B.A. (I Sem)

If you always try your best
Then you'll never have to wonder
About what you could have done
If you'd summoned all your thunder
And if your best
Was not as good
As you hoped it would be,
You still could say,
"I gave today
All that I had in me."

Even Non-Living Things Can Teach...

Twinkle Motwani
(B.Sc.-V SEM)

Be like a 'Glucon-D'
That provides instant energy to us
We have to provide Instant happiness to
Everyone, Every time.
Be like a 'River'
That flow for others and quench the
thirst of others.
Be like a Guitar'
Which give us melody and calmness to our heart.
Be like a 'Mask'
That protect us from pollution so that
We can protect ourselves and others from Impurities.
Be like a 'Perfume'
Which spread its fragrance everywhere?

Note - These lines are for those who are not learning from humans to 'be human',
May we learn from these non-living items, So that we can attain the Humanity.

To Succeed in Your
Mission
You must Have Single
Minded
Devotion to your Goal

Aashika Mewari
B.A. (I Sem)

"Man's Nature or Nature of Man"

Poras Shrivastava
B.Ed. (III Sem.)

Nature nurtures life on Earth. On nature's lap, all living beings take birth. One of these beings is humans, who have come a long way and have evolved from homo Sapiens.

Humans freed themselves from the shackles of their animal instincts. They developed civilizations and created fraternal precincts.

But the chase of man for freedom and knowledge gradually led him towards the ledge. From here, there is no way up. The water has started spilling out of the cup.

As some wise man has said "with power comes responsibility" No one can deny that for environmental disharmony, we humans are the most guilty. So let us all take a solemn pledge that "we will rectify our nature for nature's sake and keep our extravagant desires locked in the ethos' cage."

Are you clear about your needs?

Kumkum Dangi
B.A. (III Sem)

People tend to overspend when they don't have a clear Objective of what they need to buy. Thus they often end up buying things just because they 'look nice' and not because they are actually needed. Therefore, avoid going into the city centre without a clear objective.

Do you really want to reach the next financial level in your life?

Follow these steps to create wealth which will help you go far financially-

1. Create a plan that you can follow to get to that level.
2. Focus and stick to the plan that you have.
3. Work hard and gradually take steps to getting wealth.
4. Take control of your life and keep yourself healthy.
5. Keep a positive attitude and don't let anything get you down.

Strange World

Anushka Barick
B.A.B.Ed.

In this strange world,
Roads that were so long
Became so short,
Clock that was running slow
Started a marathon
With that certain person.
In this strange world,
Sometimes it feels like all colours are lost,
Sometimes it feels like all colours are found.
In this strange world,
Day to night sky keeps shifting without any complain.
Sometimes even in winter it feels so warm,
Sometimes even in summer it feels so cold.
In this strange world,
Crowded places
Sometimes seems so quite
And places that appear so quite Sometimes makes a noise.
In this strange world,
Bell ringing that sounded so annoying
Became the sound you miss so much.
Places that felt so empty now feels like home.
In this strange world,
Even with a group sometimes you feel alone,
And even with only music you feel like you have a companion.
In this strange world,
People with whom we were once so close,
Became so distant
And people with whom we were so distant,
Became so close.
In this strange world,
Stranger becomes friend,
Sometimes with the most strongest bond
Most beautiful stories are written.
In this strange world
With our strange hearts
We all are trying to understand
These strange feelings.
In this strange world if we really believe in connecting,
No one will be alone!

Life Matrix

Mrs. Rubal Mishra
Assistant Professor
(Economics)

Accepting Life to be a going concern,
Leading it by following Code of Conduct,
Considering ourselves as an economic entity,
Living Life Sincerely, where some of our,
Deeds result in Gain and some in Pain.

Life is merger of Sorrows and Pain,
Where we fully disclose our heart and mind to God,
Reliably offering our every word and deed to him,
Out of which some result in Pain and others in Gain.

People are considered as an economic entity,
They maintain Reliability of their words and deeds,
Being Committed to Honesty, they proof their Loyalty,
They live Life with Sincerity and realize
That some of our actions leads to Gain and some in Pain.

To excel in a future ahead, we act with integrity,
To overcome Scarcity, we use our unlimited possibilities,
With our committed leadership, we globalize our potential,
And encash opportunities, and realize indeed that
Life is a matrix of some Pain and some Gain.

The Lady of the Lake

- Anushikha Barick
B.A. B.Ed.

Once upon a time in a land far away,
There lived a fairy named the lady of the Lake!
In a small house near the lake,
Little girl was born in the family of eight!
Little girl was born with lots of hopes and dreams in her eyes,
She dreamt about fairy tale tea pots and flying in the high skies.
Little girl grew up and learned about little reality,
little girl met society and traded little of her dreams with society's ideals on how dreams should be!
Little girl who learned to dream on her own was now taught to live on dreams other tells her to see.
Once again she traded the little dreams left in her to adjust in eyes of the others,
While adjusting her dreams little by little and accepting others perspectives on how she should be,
Young girl grew up to live on someone else's dreams.
Uneasy feelings surrounded her
Young girl walked near the lake with a broken heart,
As young girl's tears fell into the lake
A fairy with golden hair appeared.
Fairy introduced herself as "THE LADY OF THE LAKE"
Looking at young girl's swollen face she said, "I'll grant you one wish"
Within a second young girl replied, "I don't have any dreams I just want to be happy"
"That's like a impossible wish for now," the lady of the Lake replied.
Young girl started crying thinking there's no hope left for her.
The Lady of the Lake tells the young girl, a person without dreams can never be happy.
Even if situation is painful and chains ties you up,
As long as you are living to live your dreams,
you can find happiness,
And With empty heart and no dreams even in a flower bed, man can't find any happiness,
Lady of the Lake disappers saying
"The dream they made you forgotten still lives vivid inside your heart."
Young Girl wrote a story about THE LADY OF THE LAKE with fairy tale, tea pots and little girls flying in the sky with their wings made of dreams.
Little girl with dreams became a woman with visions!
Woman who made her own dreams meet the reality through story books.
Woman who found her HAPPINESS when she started living her DREAMS!
Light is never lost, it always resides in your heart,
You just need to find it,
Like the magic that starts when you believe in yourself.
Magic that reminded young girl about her dreams, that day when she slept under the tree near the lake and dreamt about 'THE LADY OF THE LAKE!'

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya
(A Central University | केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
BTIE कॉलेज
Excel
BT Institute of Excellence
अलीशा गुप्ता
स्वर्ण पदक
उपाधि प्राप्त छात्र– बी.ए.बी.एड. सत्र 2019–23

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya
(A Central University | केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
BTIE कॉलेज
बी.ए.बी.एड. सत्र 2018–22
अदिति पुण्डीर
स्वर्ण पदक
Congratulations
31वाँ दीक्षांत समारोह
31st Convocation

वी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस कॉलेज
Excel

Festival Orientation